आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

भारत मौसम विज्ञान विभाग
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

आदित्यात् जायते वृष्टिः

Poems on Weather & Climate

भारत मौसम विज्ञान विभाग

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Earth Sciences, Govt. of India

POEMS ON WEATHER & CLIMATE

Selected through open Poems competition held during 23rd October to 23rd November, 2021

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

(MINISTRY OF EARTH SCIENCES)

(GOVT. OF INDIA)

MAUSAM BHAWAN, LODI ROAD, NEW DELHI – 110 003, INDIA

Website : https://mausam.imd.gov.in/

Open Poem Competition

India Meteorological Department; established in 1875, is the National Meteorological Service of the country and the principal Government agency in all matters relating to meteorology and allied subjects. The Department is building a weather-ready and climate Smart nation, managing all aspects of weather and climate monitoring, forecasting & warning and continuously rendering one of the most fundamental and widely used services to the nation through many diversified activities.

To commemorate 75 Years of India's Independence and as a part of the 'Azadi Ka Amrit Mahotsav', the India Meteorological Department conducted a month long Online Open Poems Competition during 23rd October – 23rd November, 2021 through MyGov Portal with an aim to raise awareness about various aspects of Weather & Climate Sciences and to explore the creative instinct of the masses.

In total 1119 entries were received through the portal. After first level scrutiny 510 entries were found eligible. After careful evaluation, about 231 entries have been shortlisted for inclusion in this e-booklet.

FOREWORD

It gives me immense pleasure to bring out the booklet on 'Weather & Climate Poems' which provides a reflection of the Open Poem competition organized by India Meteorological Department on the MyGov Portal to celebrate and commemorate 75 years of Independence.

Azadi Ka Amrit Mahotsav provided a unique opportunity to connect with the citizens of the country and promote the Weather & Climate Sciences among the people. The Poem competition not only served as a platform for revealing the creative potential of the masses, it also helped in nurturing the hidden talent of the children and youth of the country. Entries were received from almost all the states of the country without any regional barriers. I'm overwhelmed to mention that school children participated very enthusiastically in this event as is evident from the fact that more than half of the total entries received were from school children only. In total 1119 entries were received in this competition and about 231 selected poems have been included in this booklet.

I am thankful to all the participants for making this event a grand success and wish them all the best in the future. I am also thankful to all the members of the IMD family for their efforts in organizing this event. IMD has come a long way in enhancing the Weather & Climate services and such events will certainly help in expanding the outreach of these services.

Dr. M. Mohapatra
Director General of Meteorology

पर्यावरण गीत

चमन रो रहा है, बसन्त गा रहा है
किसे याद कर लूँ, किसे भूल जाऊँ।
चमन रो रहा है ---

(1) जहाँ देखता था मैं फूलों का मेला,
वहीं रो रहा है क्यों पतझड़ अकेला।
बहारों ने है ये कहा किन्तु रोकर
चला क्यों ये सावन हमें यूँ ही छुलकर।
इसी द्वन्द में मैं पड़ा सोचता हूँ
कि पतझड़ भुलाऊँ कि सावन बुलाऊँ।
चमन रो रहा है ---

(2) ये वृक्ष हमारे जो नित काम आते,
प्रगति की ये सीढ़ी पर हमको चढ़ाते।
यही कर्ज है तो जिसे अब चुकाना,
कि कटने से इनको हमें है बचाना।
इसी द्वन्द में मैं पड़ा सोचता हूँ
कि वृक्ष लगाऊँ और जीवन बुनाऊँ।
चमन रो रहा है ---

(3) बहारों का आँचल सदा दान देते,
हो सूरज की गर्मी तो ये थाम लेते।
मरुस्थली धरा की करुण है कहानी
ना पंछी ना पंथी को छाया ना पानी।
इसी द्वन्द में मैं पड़ा सोचता हूँ,
कि नहरें खुदाऊँ और मधुबन खिलाऊँ।
चमन रो रहा है ---

(4) नदियों को हमने है माता बनाया,
उन्हीं को फिर हमने क्यों दूषित बनाया।
प्रकृति के उपहार को क्यों है जाना,
कि पर्यावरण को अब है बचाना।
इसी द्वन्द में मैं पड़ा सोचता हूँ,
कि विष मैं बनाऊँ या अमृत पिलाऊँ।
चमन रो रहा है ---

द्वारा: रमाकान्त गुहा
73 ज्योति नगर कालोनी
खण्डवा (म.प्र.)
मोबा नं. 7067383961
9617800578

CID-124853101

"मौसम आए, मौसम जाए"

मौसम साल में चार
सरदी, गरमी, वर्षा, बसंत बहार।
गरमी में सूरज तप तपाए,
ठंडी चीजें मन को भाए।

गरमी जाए, बरसात आए,
मेघों को भी साथ लाए।
बादल जम कर करें शोर,
देखो बागों में नाचे मोर।

बरसात जाए सरदी आए,
हम सब की मुश्किल बढ़ाए।
स्वेटर मफ़लर दे दो भाई,
और रात को मोटी रजाई।

सरदी जाए बसंत आए,
फूलों से धरती सज जाए।
खेतों में हरियाली लहलहाए,
होली सबका मन हर्षाए।

मौसम आए, मौसम जाए,
सबको अपने रंग में रंग जाए।

CID-124961961

कविता

प्रकृति नहीं है प्रयोगशाला

दिया जिसने जीवन का दान, खेल रहा उसे खिलौना मान
गोद में पाया जिसके प्यार-दुलार, उस पर करता खंजर का वार
बढ़ाकर लाभ अपना उसने, पहाड़ जंगल, नदियाँ छीने,
नदियों को करके सुरंग में कैद, रोककर पानी का रस्ता,
छलनी कर के पहाड़ का सीना, प्रकृति का सब कुछ है छीना,
थी इतनी सुख-सुविधा की चाह, निकाली प्रकृति को बांटने की राह,
पर्यावरण को पहुँचाया इतना नुकसान, नष्ट कर डाले संसाधन तमाम,
जब बना दिए असंख्य बांध, तब टूटा धरती के सब्र का बाँध,
विकास की भूख लील गई अनगिनत जान,
न जाने कितने हुए बेघर और परेशान,
बना कर मौसम को अनुकूल, किया काम प्रकृति के प्रतिकूल,
बना कर पूरी धरती को प्रयोगशाला, प्रकृति का हर नियम भुला डाला,
भीषण आपदाओं ने अब अपना खेल दिखाया है,
बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, तूफानों ने सब को हिलाया है,
समय है अब भी संभल जाओ,
विकास की आड़ में, विनाश को मत बुलाओ,
भावी पीढ़ी को संरक्षण का पाठ पढ़ाओ।

CID-124953401

The chance to make Amends!

The leaves have changed again,
So has the air, and the rain.
It seems that global warming is upon us,
There is global upheaval and thus,
Now is the time to talk, act, debate and discuss.

Do you recall your childhood,
Wasn't it so serene, fulfilling and good?
The chirping of the birds and the clean air of the skies,
Now we simply march towards our demise,
Oh! how our mother earth cries.

We have taken from the nature without any hesitation,
So much so that I fear we are beyond any salvation.
There is nothing much for our children to inherit,
Far Fewer flora and fauna to cherish,
Whatever is left may also perish.

However we can still pause and perhaps make a change,
Get everything in balance, establish a fair exchange.
There is still time to repent,
Unless we continue and eventually lament,
Let's use this golden chance to make amends!

CID-124901901

CLIMATE CRISIS

Summers are sweaty,
So we turn on the AC,
And increase the amount of CFC.

Polar ice is melting,
Soon there will be no bear and penguin.

Deserts getting dryer,
Forests are on fire,
Remember that face of the Koala bear?
Please start to care!

The Earth is green,
No no, now it's just a dream!

Global warming is alarming,
It's our final warning!
Let's save the planet,
Plant some tree,
Every life is expensive,
Nothing is free!

CID-124881631

– Anusha Home Chowdhury

Poem :- "Weather and Climate"!

Weather changes day-to-day, is it temporary?
say yes, yes, yes!
Climate is permanent, it always shows
what we expect.
OK, OK!
Weather is always what we get, but
climate is pretty average conditions to well set,

Climate is f f f.... funny but, weather is
s s s s... serious.
Weather can be predictable but, climate take
alot to be considerable.

Let us join and unite to keep our
surrounding clean;
Promise ourselves that no dirt will
be seen.
An easy way to make team, to
protect our mother earth,
with high self-esteem.

THANK YOU!

CID-124959071

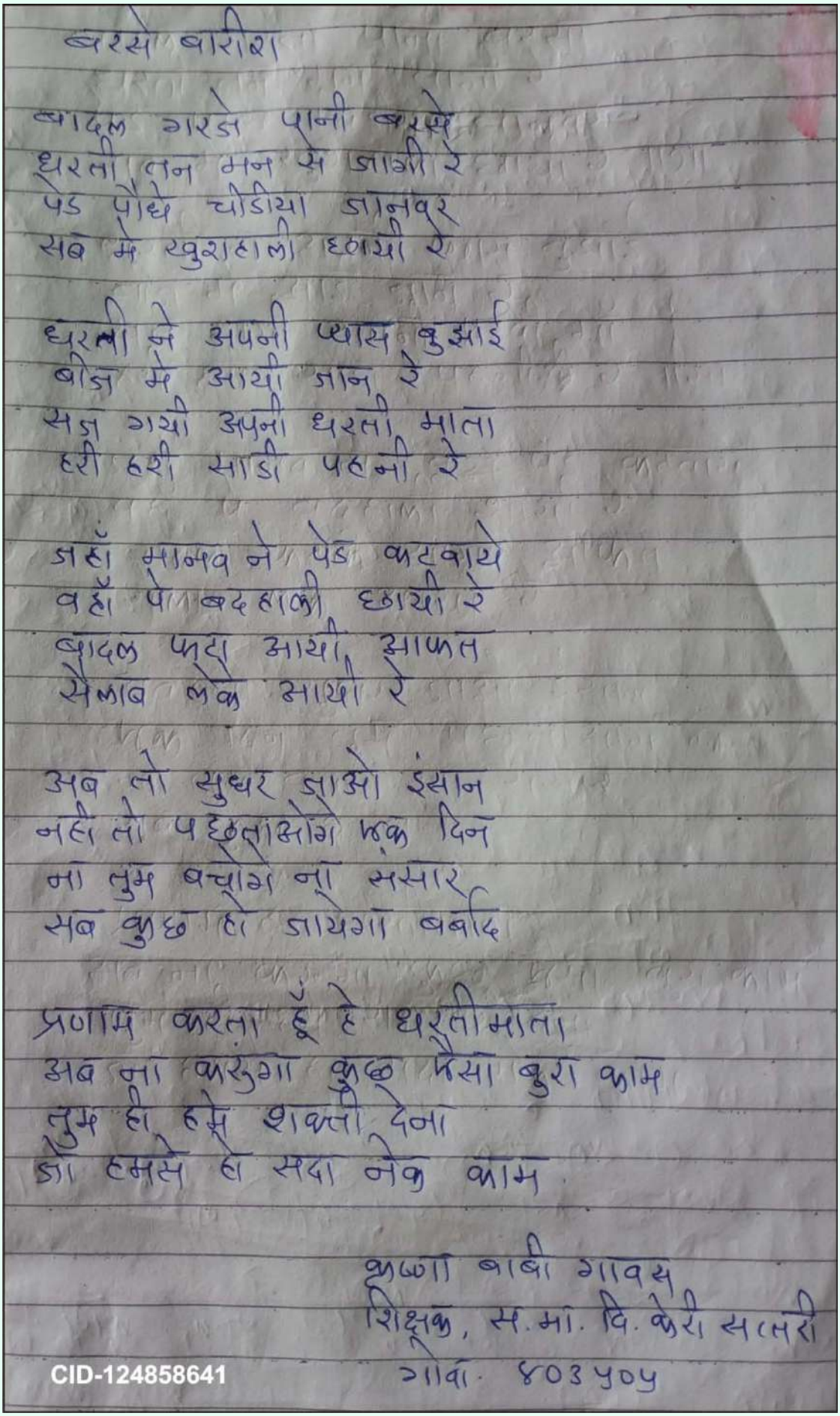

बरसे बारीश

बादल गरजे पानी बरसे
धरती तन मन से जागी रे
पेड पौधे चीडिया जानवर
सब मे खुशहाली छायी रे

धरती ने अपनी प्यास बुझाई
बीज मे आयी जान रे
सज गयी अपनी धरती माता
हरी हरी साडी पहनी रे

जहाँ मानव ने पेड कटवाये
वहाँ पे बदहाली छायी रे
बादल फटा आयी आफत
सैलाब लेके आयी रे

अब तो सुधर जाओ इंसान
नही तो पछतावोगे एक दिन
ना तुम बचोगे ना संसार
सब कुछ हो जायेगा बर्बाद

प्रणाम करता हूँ हे धरतीमाता
अब ना करुंगा कुछ ऐसा बुरा काम
तुम ही हमे शक्ती देना
जो हमसे हो सदा नेक काम

कृष्णा बाबी गावस
शिक्षक, स. मा. वि. केरी सत्तरी
गोवा. ४०३५०५

CID-124858641

जलवायु परिवर्तन प्रभाव

देखा था मैंने कभी, आसमां को सजा हुआ
चांद - तारों और पंछियों से
देखा था मैंने कभी, नदियों को बहते हुए
जिसमें रहती थी मछलियाँ सभी
देखा था मैंने कभी, धरती को हँसते हुए
जिस पर खेले थे हम सभी
देखा था मैंने कभी, चिड़ियों को चहचहाते हुए
जिससे रोज सुबह उठते थे हम सभी
देखा था मैंने कभी, वृक्षों को आसमां छूते हुए
मंद हवा से भी लहराते थे सभी
न जाने किस अंधकार में समाहित हो गए ये सभी ?
ढूँढती हूँ मैं उन्हें, न जाने किधर छिप गए ?
अब आसमां में सिर्फ काला धुआँ ही रह गया
अब नदियों में सिर्फ पन्नियाँ ही रह गई
अब धरती में सिर्फ काली सड़क ही रह गई
अब न कहीं चिड़ियों का बसेरा ही रह गया
अब न कहीं वृक्षों का डेरा ही रह गया
देख सकती हूँ मैं आने वाले भविष्य को
देख सकती हूँ मैं मानवों के भविष्य को
भाँप सकती हूँ मैं आनेवाले खतरे को
टल सकता है यह खतरा अभी भी
अगर हम रोक लें इन अनहोनियों को ॥

- स्वाति पटेल

CID-124895021

धरती की बेचैनी (कविता)

धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।
धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।
धरती ने क्या कुछ नहीं दी होगी,
सभी नहीं सोचते धरती ने कुछ माँगी होगी,
ये चीड़ अपनी सीना देती है हमें सोना,
पर इसने कभी नहीं माँगी चैना,
धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।
धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।

कभी बिजली छोड़ी, सुनामी लाई
ये सदियों से सब सहती आई
उठाए सबका बोझ अपने सीने में
बहुत मदद की इसने सबके जीने में
धरती है बड़ी साहसी बस बादल समझता है।

धरती माँ है न,
सबको पालती है,
हमें चलना सिखाती है
धरती है बड़ी दयालु बस बादल समझता है।

इसे भी हम समझें जरा,
न छीने इसकी सुंदर धरा,
इसकी भी इज्जत हो,
यही हमारी सोच हो,
यह समझदारी न इंसान समझता है।

धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।
धरती की बेचैनी बस बादल समझता है।

CID-124856311

प्रवेश कुमार

मन मौसम

काश बारिश कि बूँदों-सा बरस सकता ये मन/
इस नभ बिजली-सा गरज सकता ये मन/
इस मदमस्त बहते पानी-सा बह सकता ये मन/
इस मिट्टी की खुशबु-सा इतरा सकता ये मन/

काश इन झोंकों-सा इठला सकता ये मन/
इन खुशनुमा फूलों-सा हँस सकता ये मन/
इन फुहारों-सा मदमाता ये मन/
इन पंछियों-सा अपने घर को जा सकता ये मन/

यह सब हो सकता था यदि मनुष्य/
रहता प्रकृति के कहे अनुसार/
सोच-समझकर कर्म कर/
यह तेरा ही है कार्य-भार/

तू इसका और यह तेरी/
तू बाँसुरी, यह प्राणशक्ति तेरी/
मन से स्वीकार इसकी सरगम/
तू पा जाएगा अखिल जीवन।।

CID-124963191

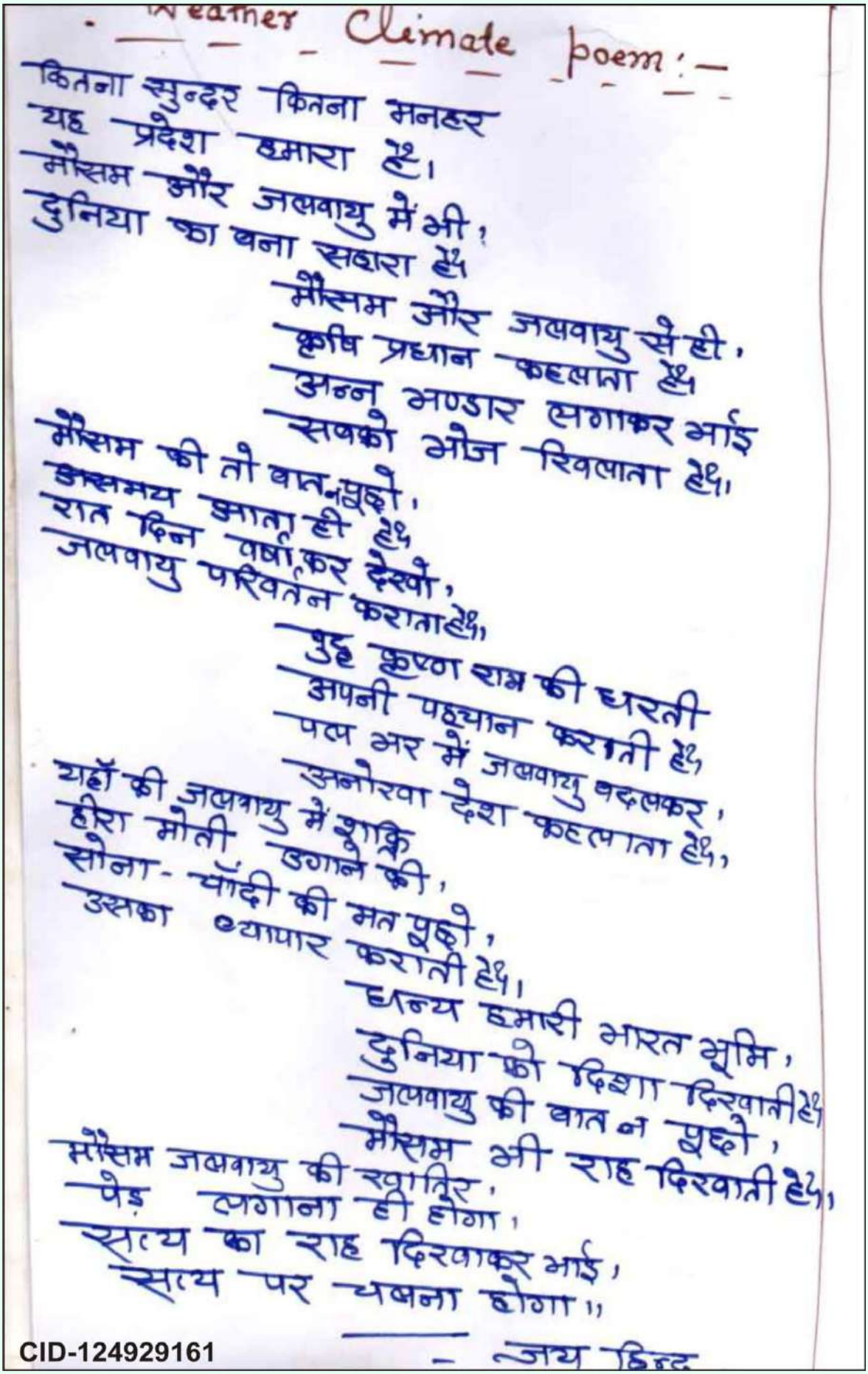

Weather Climate poem :-

कितना सुन्दर कितना मनहर
यह प्रदेश हमारा है।
मौसम और जलवायु में भी,
दुनिया का बना सहारा है
मौसम और जलवायु से ही,
कृषि प्रधान कहलाता है
अन्न भण्डार लगाकर भाई
सबको भोज खिलाता है।
मौसम की तो बात न पूछो,
उसमय आता ही है
रात दिन वर्षा कर देखो,
जलवायु परिवर्तन कराता है,
यह कृष्ण राम की धरती
अपनी पहचान कराती है,
पल भर में जलवायु बदलकर,
अनोखा देश कहलाता है,
यहाँ की जलवायु में शक्ति
हीरा मोती उगाने की,
सोना-चाँदी की मत पूछो,
उसका व्यापार कराती है।
धन्य हमारी भारत भूमि,
दुनिया को दिशा दिखाती है
जलवायु की बात न पूछो,
मौसम भी राह दिखाती है,
मौसम जलवायु की खातिर,
पेड़ लगाना ही होगा,
सत्य का राह दिखाकर भाई,
सत्य पर चलना होगा।।

— जय हिन्द

CID-124929161

Poem Competition

Wheather and Climate

Wheather change any time ,
Climate change long time .
Climate is what you expect,
Weather is what actually happens.
Happen each day in
atmosphere is wheather ,
Climate describes what
the weather is like,
over a long period

Weather is different in
different parts of the world and
changes over minutes, hours,
days, and weeks.
Wheather tells you what to wear,
Each day
Climate tells you what type to wear ,
Every day

--------- SOMYA GUPTA

CID-124838641

October Rain

I was greeted by October rain yesterday
Trickling down from the rooftop like pearls found in the ocean
They quickly vanish like mountain mist you think are clouds
And realize it's okay to pause for a moment
To watch the rain slow down the racing cars on the road and the throbbing heat in your head

It's half-past one, an unexpected mid-afternoon shower
Washing down the memories of an acidic past
Even the clouds remain still as a meditating owl
October rain comes with its privileges
It soothes your frayed nerves burnt by the ones who give less and take everything
Finally, the rain comes to an end

A rainbow appears, as rare as October rain
It looks like a gateway to heaven
And magical it is to watch the rainbow die a colorful death
Much like the paintings of Kahlo,
it's colorfully dark
A vision of ecstasy and a rupture in pain
Carving a path for joy to recycle itself and survive the thorns of darkness

October rain, do come again
It's mesmerizing to witness you pouring incessantly
Unparallel is your beauty that can be felt, seen, and heard
Come again, October rain
Because the way you heal, nothing else can

CID-124796801

WEATHER AND CLIMATE

No one knows, how that world was created
What came first, all remains a secret
The creator made each creature
Designed humans, animals, trees, and creepers

With every tiny part when he made them,
Hoped that they all would live together in content
Gave the humans auxiliary wisdom
To help create a United Kingdom

Years passed, all went well
When a bug in human's minds made them ill
Trees cut down; animals hunted
Every inch of the planet, they dominated

Slowly, steadily their empire grew
But a grave danger began to brew
Trees beheaded, soil became out of bounds
Their harmful actions polluted the grounds

When all of this together came
Seasons behaved like strange men
Sun shone bright on the salty snow
In summers, clouds had no rain to bestow

They exploited all resources
They never got enough
Planet blanketed by greenhouse gases
Living got tough

It was not long when humanity died
Each person falling like a block of dominoes
Became very late for them to realize
It was all repercussions of actions they chose.

Then what? life ceased,
Planet decayed,
No one breathed
And we don't know that world today

But we may meet that fate very soon
If there is nothing we do
Earth will be another planet to perish
Because of its own creatures, it once cherished.

CID-124824691

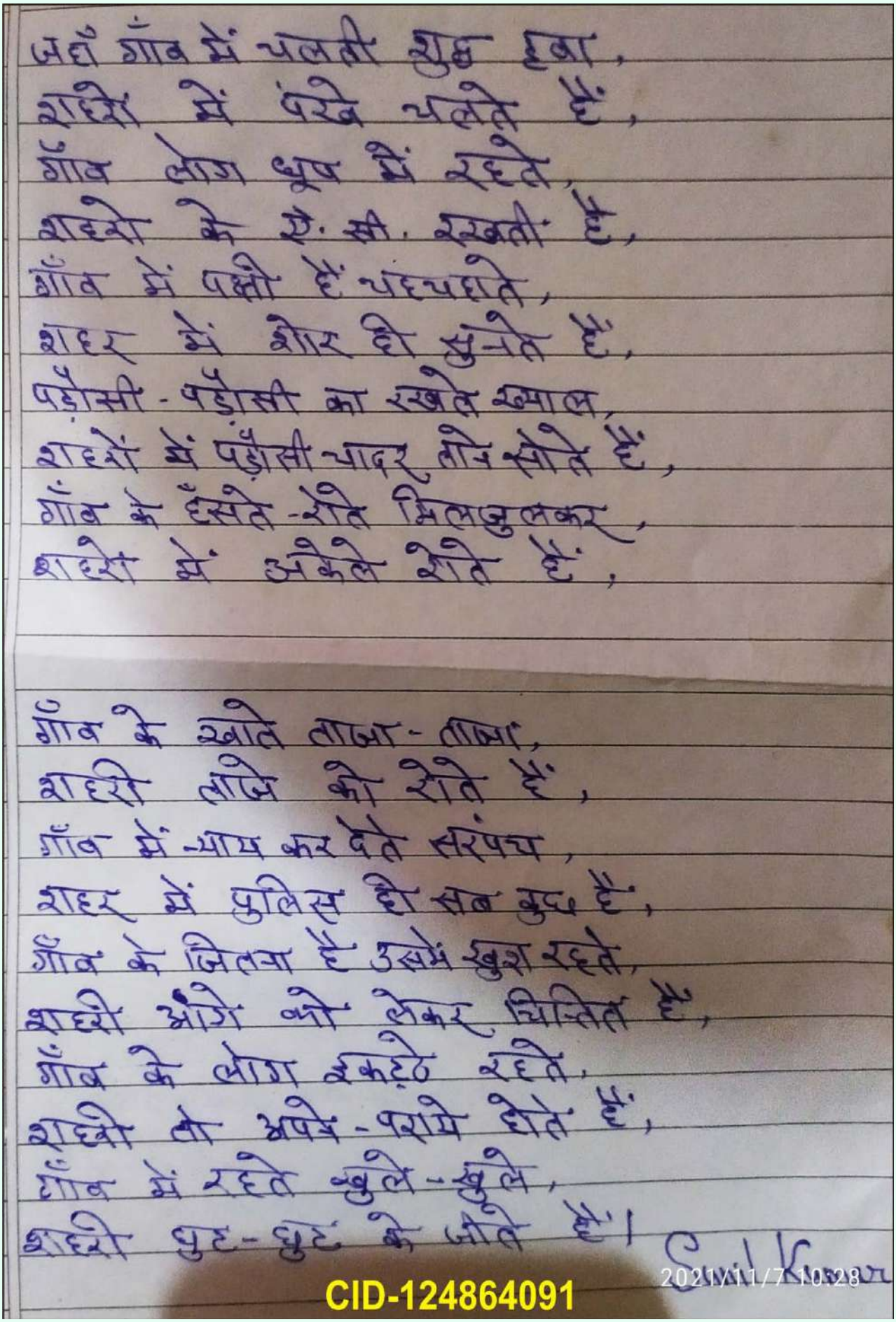

जहाँ गाँव में चलती शुद्ध हवा,
शहरों में पंखे चलते हैं,
गाँव लोग धूप में रहते,
शहरों के ए. सी. रखती है,
गाँव में पक्षी हैं चहचहाते,
शहर में शोर ही सुनते हैं,
पड़ोसी - पड़ोसी का रखते ख्याल,
शहरों में पड़ोसी चादर तान सोते हैं,
गाँव के हँसते - रोते मिलजुलकर,
शहरों में अकेले रोते हैं,

गाँव के खाते ताजा - ताजा,
शहरी ताजे को रोते हैं,
गाँव में न्याय कर देते सरपंच,
शहर में पुलिस ही सब कुछ है,
गाँव के जितना है उसमें खुश रहते,
शहरी आगे को लेकर चिन्तित हैं,
गाँव के लोग इकट्ठे रहते,
शहरों के अपने - पराये होते हैं,
गाँव में रहते खुले - खुले,
शहरी घुट - घुट के जीते हैं।

Sunil Kumar

2021/11/7 10:28

CID-124864091

Topic Weather and climate Date

Do you think weather and climate are same?

No, No, No, No.....

Weather and climate aren't same

Weather is different, climate is different

Weather shows

There is hot or cold, rainy or sunny

Climate shows

What's the tempreature today?

If its very cold,

Eat yummy yummy Gulab Jamun.

If its very hot,

Eat your favourite ice-cream.

If its rainy,

Eat delicious Samosa or Pakkodas.

And Enjoy every day.

- Akshita

VI A

- Bal Bhavan International School

CID-124958251

Summer, Winter, Autumn, Spring
Cheer the year as they bring
Sizzling hot, Chilling cold
Leaves fall and Flowers unfold

Summer's warm at beach side
Swim and surf on the bigger tide
Farmers sow and plough the land
Cones of Cream in every hand

Dresses made of woollen thread
Fireplace warm with cozy bed
Shivering cold nights to be
Make it comfy with hot green tea

Golden leaves lie on the ground
Leaves thin, thick and round
Trees and Branches shed their dresses
As birds and squirrels clean the messes

Spring is the princess of seasons
Not is it said without reasons
Weather pleasant, nature shines
Time for love they say, and all is fine

CID-124888081

Steps

The day I walked down the street,
happy to see the birds singing around me.
The trees welcomed me,
the soil accepted me.

The flowers called me,
the butterflies played with me.
The world that was full of life,
just like the seven colours of light.

But, today when I stepped out of my house,
my past seemed different from my present.
No trees that welcomed me.
no soil that accepted me.

No flowers that called my name,
no butterflies that mingled around me.
The temperature that rose the hell,
the world that caught fire, holding up the hell.

Come together, plant a tree,
Let it grow along with me.
Let the air be free for all,
Let the past again be the present of the world.

CID-124838441

ये धुँआ धुँआ सा अब क्या हैं
देखो जँहा को क्या हो गया हैं!

नही किसी को फ़िक्र कल की
ये जीने का अन्दाज़े बंया क्या हैं!

होते थे जो मौसम कभी पहले,
सर्दी,गर्मी और बरसात
हो या कि बसंत बहार!

अब किसी भी मौसम में कुछ भी
ना जाने अब क्या क्या हो गया हैं!

हमने खुद,खुद के साथ क्या किया हैं
ना जाने ये जीने का अन्दाज़े बंया क्या हैं!

क्यू धोका दे रहे हम खुद के साथ
आने वाली पीढ़ी को दे रहे अभिसाप!

गर रह ही ना जाएंगे ये जंगल,पेड़ और नदी
तो फिर क्यू ना हो जायेगी प्रकति में छति!

थोड़ा सा तो अब संयम बरतो अपने करतूतों पे
धरा को हरा भरा करके बचा लो तुम सपूतो को!!

CID-124798511

वाहनों की कतारे भरी सड़क कुछ कह रही।

धुओं से भरा माहौल कुछ समझा रहा।

बीखरी–बीखरी थैलीयाँ समेटे जमी चुप है मगर,

मोती सा बहता झरना रंगीन कैसे हुआ ?

सब समझौता कर एक दौर ले आये।

सड़के, माहौल, जमीं, झरना सभी स्वच्छ हुए।

लगा, इन्सान अब समझ गया,

हमारी स्वच्छता मे ही इसका है भला।।

तीन–चार महीने फिर वही दोहराने लगा।

प्रकृती ने फिर झटका दिया।

फिर घबराया मानव, सचेत होने लगा।

अगर अब समझ गया इन्सान तो फिर बात क्या।।

जिस धरा की गोद में पले बढ़े।

जिस हवा से निश्वास प्रश्वास है जुड़े।

बिना जिस जल के जीना है दुभर।

उस माहौल को स्वच्छ करो हे मानवगण !

CID-124873811

ए मेरे मौसम , तू कितना सुहाना

तेरा रूबरू कर गाऊ मै तेरा तराना

बारिश ले आए तू , ठंडक दे जाए

नंगे पांव नाचने का मेरा मन कर जाए

लाए तू गर्मी, फसलें लहलहा जाए

किसानों की तपस्या पूरी हो जाए

वसंत का फुआरा ,तू है खूब न्यारा

तेरा ही होकर रह जाऊं मै बनजारा

वो ओस की बूंदे ,सर्दी का अहसास

तू लाजवाब है ,कर गया है मेरे मन में वास

हर पहलू तेरा खूब सुहाना

कुछ कमी हो अगर तारीफ मे, तो खूब सताना

ए मेरे मौसम तू कितना सुहाना

तेरा रूबरू कर गाऊ मै तेरा तराना

CID-124839361

वर्षा रानी

बादल गरजे, बिजली कड़की,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई,
साथ में अपने खुशियाँ लाई
पकौड़े, समोसे चाए, की बारी है, अब आई।
मिट्टी की सौंधी खूशबू
जो है सबको भाई।
कागज की कश्ती के संग छाता सब लाएँ।
टिप-टिप-टिप-टिप पानी बरसा
सबको आवाज है आई।

सब बच्चे नीचे उतरे
पानी में छप-छप करने।।
अजब-गजब बूँदों की ये दास्तां
कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा,
कहीं खुशहाली तो कहीं बरबादी
सावन के झूले सब झूलें,
साथ में तीज का त्योहार मनाएँ।

वर्षा रानी, वर्षा रानी
साथ में अपने खुशियाँ लाई,
बादल गरजे, बिजली कड़की,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई,

~सुहानी ऐरन

CID-124817521

"धरा की मैं पुकार हूँ"

धरा की मैं पुकार हूँ।
प्रकृति का मैं श्रृंगार हूँ।

सर्द कुनकुनी धूप तो-
कभी रिमझिम बूँदों की फुहार हूँ।

कड़कती धूप हूँ तो-
कभी बसंत की बहार हूँ।

ये मेरा मिज़ाज है।
मेरी गोद मे ही तो -
ये धरा ,ये आकाश है।

विशाल हृदय मेरा है।
कभी प्रलय हूँ , विनाश हूँ।
कभी जीवन को वरदान हूँ।

छिन्न भिन्न मनुष्य कर रहा-
मुझे यूँ है रौंद रहा।

ये वक्त है सम्भलने का-
मुझे सहेज कर रखने का।

जाग मनुष्य ,उठ ज़रा
जीवन अपना तू बचा ज़रा।

क्योंकि धरा की मैं पुकार हूँ
प्रकृति का मैं श्रृंगार हूँ.....

CID-124826181

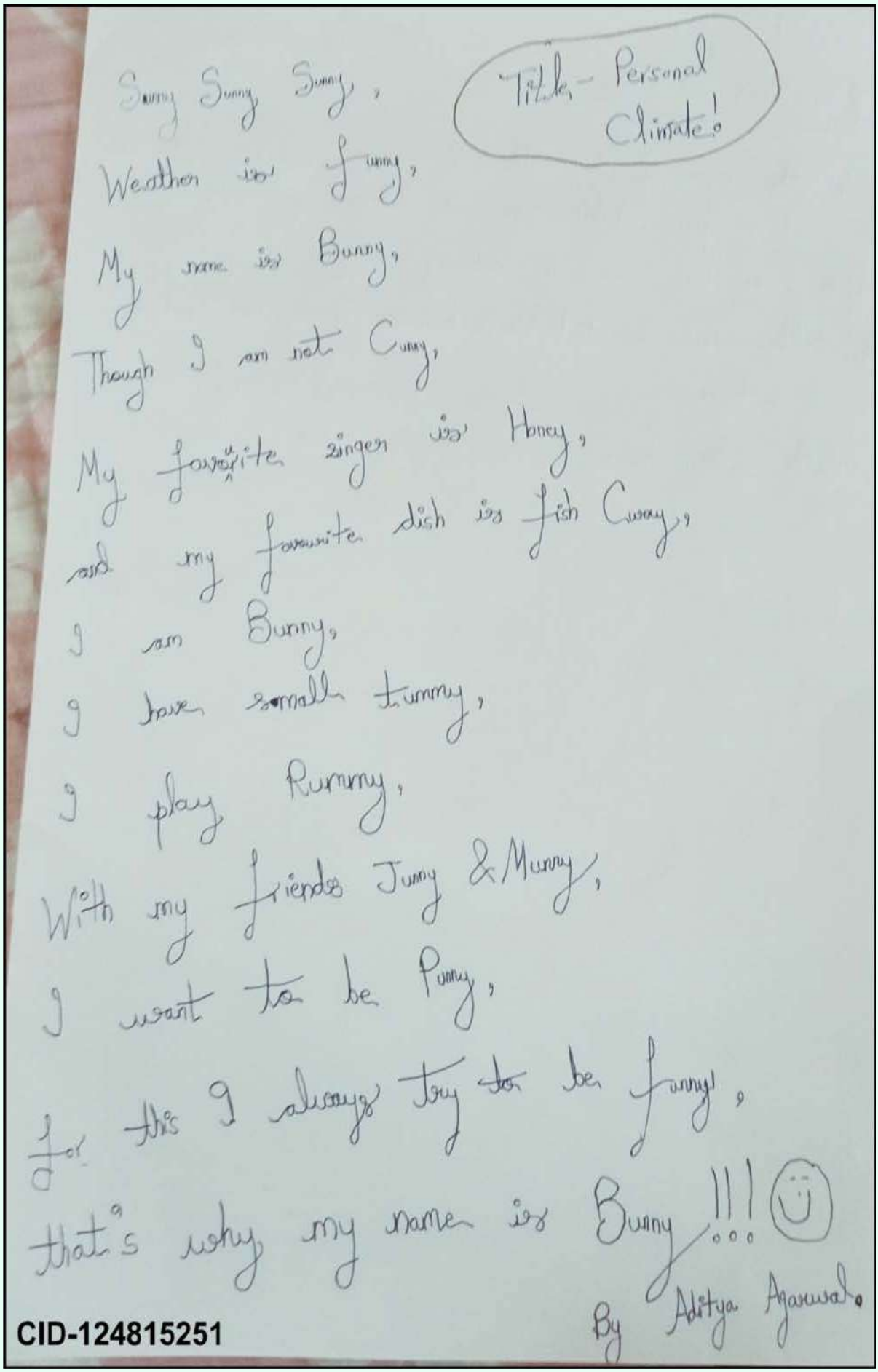

Title - Personal Climate!

Sony Sony Sony,
Weather is foggy,
My name is Bunny,
Though I am not Cunny,
My favorite singer is Honey,
and my favourite dish is fish Curry,
I am Bunny,
I have small tummy,
I play Rummy,
With my friends Jonny & Munny,
I want to be Funny,
for this I always try to be funny,
that's why my name is Bunny!!!

By Aditya Agarwal.

CID-124815251

Sad truth

Why are you cutting me down?

Why are you cutting down my friend?

Where are my friends? Where are my family?

Why is there smoke ? Why is there garbage?

You are said to have brain- you are said to have intelligence;

You are said to be the best creature born—

" My mother nature"—where she is? She is changed now..

I lost her glory, I lost her feels, I lost her now...

It's becoming hot , it's becoming stuffy

"Global warming" – I heard the name it was....

The ice is melting away, the soil is blowing away

The climate is changing, the weather is changing,

The form is changing, the world is changing...

Why are you cutting me ? Why are you cutting us down?

The time is running to chase you-

If its end for me now...

Its end for you too!

CID-124831931

CLIMATE AND WEATHER

Saesha Sarkar (Class-III)

Climate and weather,
Complement each other.
They have many character,
One is incomplete without the other.
Often we experience snowfall,
Days are short and nights long.
Cold winds blow from land to sea
We can see bare tree.
When plants start blooming
Bees and birds flap their wings.
This is very refreshing,
We love such a natural thing.
Then weather shifted warmer,
Now nights are no more longer,
As sun grows hotter
We feel so dryer.
When rain falls heavily,
Wind blows strongly,
Dark black cloud
Lightning, thunder so loud.
Everything look so fresh,
We wait for the bless.
Don't pollute climate
It will bring bad effect.

CID-124928921

CLIMATE VERSUS WEATHER

by Joan Bransfield Graham

Climate's your personality,
weather is
your mood—
a warm and sunny outlook,
with occasional
attitude.

Low pressure grumbles in with rain,
an atmospheric
pout.
High pressure smiles and saves the day,
sweeps the stormy
out.

Where are you living on this globe—
your latitudinal
position?
Location has a lot to do
with your climatic
disposition.

CID-124798581

Those are the days

Those are the days

When the sun is hot.

Escape from the rays

But enjoy a lot.

Those are the breeze

When the morning is foggy.

Which make us freeze

But the day is happy.

Those are the moment

When the rain drops fall from the sky.

Which make the earth wet

And you feel to fly.

CID-124961431

Smiling hope within me

Frozen lakes and shiny slow flakes,

It smells like Christmas cakes,

In the comfort of my night fire,

My skin feels the love of the knitted sweater ,I admire

There she stands smiling, my warmth in the winter!

Colourful umbrellas decorating my city,

Dirty uniforms, Oh my pity!

Lightning in the skies waiting to capture my smile,

Paper boats flowing in nile,

There she stands smiling with freshly brewed ginger tea,my sunshine in the monsoon!

The colours of the flowers,

Buzzing of the nectar lovers,

Fragrance of the blooms,

Just took away my gloom,

There she stands smiling, colours of my spring !

The pearls of sweat running down my face

That light energy fastens my pace

Its okay to get a little tan,

And enjoy the cold wind of a fan,

There she stands smiling, my showers in the summer!

Bend with the wind but don't you kneel

For the smiling hope is here to heal!

Meaning: Comparison of weather with happiness and adversities of life. And suggesting that Hope can bring the best in any weather.

Submitted by

Anusha S

achusbhat@gmail.com

CID-124830401

NOW OR NEVER

All these years we've lived, I'm sure you've definitely cribbed,

Oh !! the never-ending blazing heat, the scanty rains, the flooded streets, the brain freezing winter breeze, or the hot winds that never seem to cease.

Who do we blame these on conveniently, of course the Almighty Deity!

But little do we humans know; these are the fruits of our own show,

The show of pure negligence, the misuse of divine providence.

You ask How??

Haven't you seen the smoking chimneys, or the incessant cutting of trees?

What about the resources being depleted, or the animals getting hunted?

The greenhouse gases that are emitted, or the waste that the factories have vomited?

By bursting crackers what do we gain? Oh, the habit of garbage burning is another pain.

Whether Acid rain, or melting ice or the smog filled mornings that burn your eyes,

These are certainly the signs of global warm, but it's also the pain the earth has undergone.

All we've been doing these years is ticking like a bomb, it's hard to say if we will see the next dawn.

All I can say today, is that we really need to mend our way.

Before it's too late to regret, I hope we don't forget,

that this is our planet indeed, irrespective of your race or creed.

So, do take a step forward, to help make a change here onward.

Let every day be an effort, to do the good that we have deferred.

It's time we switch to a greener approach, before it's our turn to be poached.

Acid rain or melting ice, all shall vanish soon and nice.

That's when we all shall win, perhaps that how we can wash off the sin.

Whether you're brave or clever, listen !! It's now or never.

- BY NINON D'SILVA

CID-124964121

Weather And Climate (Poem)

What is it with our Weather?
I Cannot predicts it,
on a Sunny day, it was too hot,
So, I only wore a t-Shirt.
It got Colder by the minutes,
My Shivering arms were Bare.
And then it Started raining,
And that just wet my hair!

My feet got Soaking wet,
And I think I've Caught a Sniffle,
I don't believe the Weatherman.
Now, I think that it's all piffle!

But, I Can predict the Climate.
When it is the month of october to febuary, i Can Say it will be Cold, And when it is the Month between march to aprril, it Can be little hot, But betw-een june to august, it is gonna to be Sunny Summar.
When it is month of September it is the Coming of Winter.

Name - Dipti Mahi Singh
Class - 8th

CID-124961771

My Prayer to Rain: -

With their bright colours soothing my mind,
There lay roses pink and red.
But unlike their silken colours,
Dark, rolling clouds in the sky spread.

Whole day they block the sunlight.
Either it's day or night.

Now the clouds have started to rock
Giving a terrible thunder shock.

It might be raining for a day or two
What a wet day for me and you.

I'm thinking of filling my mind with fun
I thought a lot, but found none.

O Rain! Do stop,
I pray you to cease.
Don't you be so selfish,
To only care for trees.

You fall for hours with the speed of light,
Whenever you wish.
Then the poor clergy-man runs helter-skelter,
Just like a freshwater fish.

O Cloud! You shed lots of tears,
Why are you so gloomy?
You make the rivers so full of water,
That the water starts seeming foamy.

Raindrops, you drop on mountain peaks
And run off their face;
Down the valley lane you go
And then the ocean you trace.

One day passed, two days passed
The rain has stopped at last.

Now that you've stopped pitter-patter on my roof,
After analysing a lot, I concluded a proof-

You shed tears for farmers,
You shed tears for their crops;
You weep for thirsty people
Who live away from water drops.

O Rain! You're nature's finest gift.
O Rain! You are truly great.

-By Debarati Bag

CID-124910961

GO GREEN v/s GLOBAL WARMING

Care for the Nature, Care for Resources,
It's the need. Need of the Hour,
Concern for Life, Save Lives,
Fragile Ecosystem,
Wake up, Wake up, and Wake up Folks.

Nature is Bountiful, Green Paradise,
Trees are our Breath, Air is our Life,
God's Creation, Fondly Mother Nature,
Rescue, Rescue, Rescue Planet Earth Folks,

Precious Life, Gift of Nature,
Every Moment, Joyous Living,
Nature's Book, Learn to Live LIFE,
Concern for Fauna, Splendor flora,
Conserve, Conserve, and Conserve, Nature folks.

Walk, or Run, or Bike, Use Green Buses,
Think of Green Cars, Drive Green Trucks,
Save, GAS, Oops! I meant SAVE ENERGY.
Enjoy GREEN drive, enjoy GREEN DRIVE
'YES',"YAP" Enjoy GREEN DRIVE folks.

Nature Nurtures, Friendly Teacher,
Cuddling Mother, Nature Cools,
Put off Butts, Smoking Cigarettes,
Stop Wildfire, Save Forests,
Be Eco-Friendly, Eco-friendly please!
Eco-Friendly, Eco-friendly, Eco-friendly Folks.

No More Delays, No More Wastage,
Do not Desert, No Ugly Pollution,

Do not Fight, Don't Fight Nature's Fury,
Nurture Trees, Breathe Easy, CLEAN AIR
Be Friendly, Be Friendly Be-friendly Folks.

No More Delays, No More Wastage,
Do not Desert, No Ugly Pollution,
Do not Fight, Don't Fight Nature's Fury,
Nurture Trees, Breathe Easy, CLEAN AIR
Be Friendly, Be Friendly Be-friendly Folks.

COM'ON FRIENDS, LET'S SWEAR,
LIFE FOR EVERYONE,
STOP GLOBAL WARMING,
HAVE THE GLOBAL VISION,
LET'S SAVE PLANET EARTH,
LET'S SAVE PLANET EARTH,
LET'S SAVE PLANET EARTH.

CID-124802341

Weather And Climate Poem Competition :- (Organised By India Meteorological Department)

Title of the poem :- " Season for Everyone"

What we say about India,
Nothing is more than imagination
A country with a lots of gift from the nature ,
From the summer to the winter ,
From the spring to the autumn ,

Each season with lots of memories and with lots of shares ,
Season changes our thoughts of mind ,
From the Holi to the Christmas ,
Our climate is different from all aspects ,
Let's make this in a way , it should be.

Written By :- Sourav Bhowmick
Email Id – souravbhowmick733@gmail.com
Mobile Number - 6203084898

CID-124814501

WEATHER

Sian Sarkar (Class-III)

Weather o weather,
Don't go anywhere.
Please play with us
Stay here thus.
Weather said, don't worry my friend,
I'll come again in different name.
When the cold wind blows,
We enjoy the white snows,
Then weather comes,
Says we are chums.
When colourful flowers bloom,
We keep away our gloom.
Again weather arrives,
And spreads good vives.
When sun becomes brighter,
Everything grow warmer,
Then weather reminds
It remains in our minds.
When wind blows from west,
Rain falls heaviest,
Then weather says,
I keep my promises.
Winter, spring, summer, monsoon,
All come after each other soon.
Hence weather stay with us,
We live together thus.

CID-124928701

WHaT HaVE YoU DoNE!

Dear humans,
Do you read me?
I live in space
I'm all over
The place
Merely a being,
Sent by god.
I circle the world
Live among debris
You leave behind.
You have ruined
Your planet!
Now you want
To go to Mars,
So that you can
Pollute that planet in
A few thousand years,
I have shed
Enough tears
And my fears of
A millenium ago,

(i)

Are much the same.
Not only the
Land you destroy
But also your beautiful
Oceans,and
You have caused
Global destruction
Ice is melting into
Oceans, rising
Slowly drowning
Your planet.
You must immediately
Take action
Ban plastic bags
Deforestation must
Stop,this is paramount
Trees are life giving ,
Animals lose their
Habitat and move
Into suburbs,confused
And looking for food
You over populate
Why three or four children,

(ii)

Have one,
Be grateful,
Others have none.
Unemployment
Is on the rise,
The out of work have
No chance of
Winning first prize!
You have caused
Dissention among
Peoples of different
Colours, creeds and nations
Stop it now,
We are all brothers
And sisters
Help the poor
Who beg at your door!
Disparity of wealth is crazy,
The wealthy become
Wealthier and the
Poor live under bridges
And scavenge for
Food in dustbins.

(iii)

What a crying shame,
Shame on us, shame
On the governments
Access to water
Is humanitarian
All should have it.
Are police becoming
Criminals, or are they
Mere racists
They think their uniform
And a badge gives
Them authority to use guns,
Beat someone to death
Or kneel on their throats.
So I beseech you,do the
Right thing, be kind
Be mindful allow love
Forall,seep
Into your heart,
The beginning starts
With you,
But of course,
That you knew!

(iv)

CID-124851841

O my dear mother earth
Now I know your true worth
How you are selfless
How you are giving
How you are punishing
Yet you are forgiving

Humans treated you very rough
It was your time to be tough
You want us to learn some gratitude
And come out of our thankless attitude

How cool is breathing fresh air
We got to know with masks on
How beautiful the nature is
We got to know being home alone
We are learning how to survive
You are getting your time to revive

To correct past mistakes is our only will
Please give us back that happy feel
We now learnt our lessons
We will walk with humanity
Bring us out of this prison
We apologise for our cruelity

We pledge to keep you safe every other day
Please smile mother earth this mother's day

- **Roshni Billore Pune (+91 9923463936)**

CID-124859491

हवा का झोका

बारीश को मौका

कहासे आया ये बादल

हवामे चहल पहल

सब थे बेखबर

पेपर मे नही खबर

किसीको भी ना मालूम

कब बदला मौसम

सब हो गये हैरान

बह गया मकान दुकान

इंडिया मेट्रोलॉजिकल खाता हमारा

देगा देशवासी जनता को इशारा

तुफान कब आयेगा

बारीश कब घटेगा

अब सबको होगी खबर

न रहेगा कोई बेखबर .

CID-124889431

पर्यावरण गीत

पौधे आंगन में नित बढ़ें

निरामय सहजीवन की जय || टेक ||

तपती धरती कड़ी धूप से

हाल बुरा सबका गर्मी से

बिन तरु ठंडे साये कहाँ से?

सहज ही परिसर रम्य बनेगा बहुत पेड़ जब पलें || १ ||

नित पौधा यदि एक भी लगता

मलिन हवा की मिटती चिंता

फूल-फलों की रहे विपुलता

सूखे का सामना कभी भी हमें न करना पड़े|| २ ||

बने न बाधा पेड़ द्वार पर

उपकारी है बल्कि मित्रवर

शाखागत एकता सीखकर

रहें एक हम, भले कार्य में तन मन अर्पण करें|| ३ ||

बिन तरु व्यर्थ हमारा जीवन

प्रेम करें हम उसको अर्पण

मिल सकता है तभी वन्य धन

रहें सदा ही ऋण में तरु के उसका पोषण करें|| ४ ||

CID-124864601

(मौवी - मौसम विभाग का संक्षिप्त रूप)

कविता - मौसम विभाग ने है ठानी

मौसम विभाग ने है ठानी सर्वश्रेष्ठ सेवा देने की
सुसज्जित है नयी तकनिकी और उपकरणों से।

देता है पल पल की खबरें सही और सटीक;
कब होगी धूप और कब होगी छांव;
कहाँ गिरेगा ठनका कहाँ होगी वर्षा।

अजब ज्ञान है गजब विज्ञान;
अचूक पूर्वानुमान चक्रवात की
बचता लाखों जान-माल।
महीनों पहले देता
सही सूचना और परामर्श।
ना करता भेदभाव किसी से
चाहे वो हो गांव या फिर शहर नगर।

किसानों को सही राह दिखता
करता है भरसक मदद,
चाहे हो सर्दी, गर्मी, या बरसात।

जब आता गर्मी का मौसम, मौवी सारा हाल बताता;
सूरज का मिजाज बिगड़ेगा, वो दिनभर आग बरसायेगा।

लू की लहर चलेगी, गर्मी की कहर चलेगी;
पसीने की नहर बहेगी, पानी भी गरम रहेगी;
अगर रहे असावधान, बीमारी की कहर चलेगी।

मौवी आगे हमें बताता मौसम कब करवट बदलेगी;
वर्षा की छटा बिखेरेगी मोतियों सी जल बिखेरेगी,
खेतिहरों के मुख मुस्कान खिलेगी, खेतों में फसल लगेगी;
गावों में उल्लास दिखेगा किसानों में उत्साह दिखेगा।

मौवी आगे ये बतलाता मौसम के सब हाल बताता;
अनावृष्टि होगी या फिर अतिवृष्टि या फिर होगी अच्छी वर्षा।

मौसम बनेगा नायक या फिर खेलनायक?
क्या लाएगा बाढ़ भयानक या फिर होगा सूखा ही सूखा।

मौसम लेगी फिर करवट, सर्दी का मौसम आयेगा;
साग सब्जियाँ खूब मिलेगी खूब मस्तियाँ होगीं

मौवी हमें फिर चेतेगा, पल पल कि खबर बतागा।
कहाँ पड़ेगी शीतलहर, कहाँ गिरगी बर्फ अधिक;
शीतकाल का खेल होगा, हिमस्खलन का खतरा बढ़ेगा;
कुछ महीने जीवन होगा कुछ मुश्किल।

मौसम लेगी फिर करवट , मौवी फिर बतलायेगा;
फिर आएगा वसंत का मौसम जो सबको भायेगा;
मौसम और जलवायु का हर सटीक खबर और सलाह
मौवी सालभर बतलायेगा।

सृजक - राजीव

(मौवी - मौसम विभाग का संक्षिप्त रूप)

CID-124952921

पर्यावरण की चेतावनी

गहरा रहा है संकट के काल
न होगा जल न होगा वायु से भरा काल
पर्यावरण है जलवायु का आधार
यदि होगा इस पर प्रहार
तो नुतन धरा खींच जायेगा
जीव जन्तु का ना नाम होगा
सुखे वृक्ष के खुंटे होंगे
बिन फुलों के उपवन दिखेंगे।
सर पर तो मटकी दिखेगी ।
पर इसमे पानी की एक बुंद न होगी
जो था प्राण वायु का आधार
वह बन जायेगी घुटन का सार

या तो बिन मांगे धुप मिलेगी
या जल की खेत दिखेगी
पर ये ना सोचे हम बच जायेंगे
प्रभावित होने वालों के पहली
सुची मे हम आयेंगे।
इसे लो मेरी चेतावनी जान
पर मै ना तुम्हें डराऊंगा
अपना जान एक उपाय बताऊंगा
पेड़ लगाओ वनों का एक जाल बनाओ।
जल को तुम कल का समझो
धुंऐ-धुल का प्रबंध करो
मेरे आंचल को साफ रखो
दिखाओ अपनी विवेक का
योगदान
एक बेहतर पर्यावरण का रेखा चित्र धरो

अपना दो तुम संपूर्ण योगदान
मै भी तुम्हे निश्चिंत कर जाती हुं।
अगर करोगे सेवा तुम मेरी
मेरा तुम्हे संपूर्ण प्यार मिलेगा
तुम तो रहोगे मेरे साथ
तुम्हारे आने वाले बच्चों के
ऊपर भी मेरा हाथ मिलेगा।

CID-124801521

●●●

मौसम

प्रकृति के हैं रूप निराले,
आओ देखो मौसम मतवाले।

जब सूरज तेज़ चमकता है,
पृथ्वी का हृदय दहलता है।

गरम हवा से सागर का जल,
भाप बन-बन उड़ जाता है।

तब इसी भाप से बनते बादल,
जो छम-छम बरसा करते हैं।

वर्षा धरती की प्यास बुझाती,
जिससे चारों ओर हरियाली छाती।

हम फल-फूल और अनाज पाते,
जिससे जन अपनी भूख मिटाते।

पृथ्वी जब ठिठुरती जाड़े से,
सूरज की किरणें उसे बचातीं।

घर-आँगन में बिखर-बिखर,
खेतों में वे फसल पकातीं।

किरणों से जब जाड़ा उड़ता,
सब ओर बसंत का मेला जुड़ता।

चारों दिशाओं में खुशियाँ छाती,
जीवन में मधुरता भर जाती।

सूरज भैया से हम सीखें,
औरों के लिए नित जीना।

स्वयं कष्ट सह सहकर,
औरों को नव-जीवन देना।

CID-124798531

मेरा अपना

एक माँ थी
जिसके गर्भ से मेरा जनम हुआ,
और एक माँ है
जिसकी गोदी में मैं पला बढ़ा।

जनम देने वाली कब की चली गई
नाराज़ जिंदगी
धरती माँ ने भी चुप्पी ले ली।

मिट्टी का घेरा टूट कर बिखर गया
तपती धूप में आँखें जल गईं।
प्यास लगी, प्यास बढ़ी
ऊँचे पहाड़ों में भी बर्फ पिघलने लगी,
अब तो है पानी ही पानी
फिर भी प्यास न बुझी।

दूर से ही आकाश नीला, वहाँ बादल से धूल ज्यादा
हरियाली सिर्फ तस्वीरों में है, आँखों के आगे धुआँ धुआँ।
बेहतर बनने की चाहत में जिंदगी हो रही है तबाह।
धरती माँ बोलीं,
अब तो संभल जा, थोड़ा सा बदल जा
फिक्र तो मेरी भी कर
नहीं तो कहाँ तू मेरा अपना ?

कुमार कुलदीप मेधी
4, आलोकपुर पथ, जापरिगोग
गुवाहाटी, आसाम-781005
फोनः 9864383750
email: kuldipmedhi@gmail.com

CID-124862701

Spring

The fields are rich with daffodils,
A coat of clover cloaks the hills,
And I must dance, and I must sing
To see the beauty of the spring.

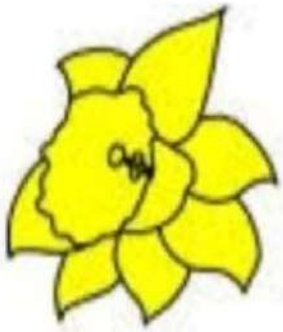

Summer

The earth is warm, the sun's ablaze,
It is a time of carefree days;
And bees abuzz that chance to pass
May see me snoozing in the grass.

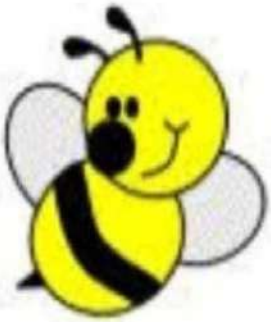

Fall

The leaves are yellow, red, and brown,
A shower sprinkles softly down;
The air is fragrant, crisp, and cool,
And once again I'm stuck in school.

Winter

The birds are gone, the world is white,
The winds are wild, they chill and bite;
The ground is thick with slush and sleet,
And I can barely feel my feet.

The last is done, the next is here,
The same as it is every year;
Spring -- then sunshine – autumn -- snow
That is how each year must go.

CID-124958811

Natures Cradle Me Too - The Earth

Wherever you go whatever you do always bring your own sunshine

Every morning gaze at the sun and explore the world with a childlike mind

Respect the oceans and rivers, conserve the purified waters

Love every plant and tree as earth's daughter

Nature always nourishes when we go green,

Remove plastic and keep our planet clean

Recycle the trash use alternative options

Creating from bamboo jute silk will save earth from auction

Save every animal nurture every insect and protect every worm

Sign a pledge with flying wings and let's confirm

Reduce the use of energy in office and home, avoid leaving chargers on

Generating power from solar energy a new life on earth will be born

Global warming is bad for farming and benevolent earth is our perfect dream

Cleaning the rivers and the seas is a mission supreme

Think before you throw, and recycle before you synthesize and dispose

Waste might fertilize the granular soil with compost and inclined angle of repose

Nurture the garden, plant a medicinal herb as trees become vital

Increase ozone and save the land or lives would be fatal

Flourish the bees and marine life and protect the habitat

Preserve the yoga sutras and crown the earth with a white hat

CID-124956771

Baarish ki aansu

Kabhi socha hai,
ki shayad barsaat mein,
baadal aansu baha rahein ho,
is qudrat ko dekh, jiska vinash humne kiya hai?
Nahi! Toh suno ki baadal kaise rote hain

Ek din barsaat mein main baadalon mein ud rahi thi
Vo din tha ki main Jaipur se Bombay vapas aa rahi thi
Tab un baadalon ki udaasi dikhe na jaane kaise
main unse guftagu karne lagi thi
Baadalon se puchha maine, itne aansu kyu?
Toh baadal kehte, tum insaano ne kya
kar diya is kudrat ka haal, jaise
vahi ho iske khuda, vahi ho iske bhagwaan
Pedho ka mita diya hai tumne naam-o-nishan
ye khubsurat duniya jaise bana di ho veeran.

Tab ehsaas hua ki asal mein jaha green
jungles hone chahiye the, vaha concrete
jungles aa gaye hai...
Aur phir vo baatein adhuri reh gayi,
Humari Mumbai land karne ki ghadi aa gayi.
Unke alfaaz ko sun-ne wala koi mil
gaya hoga,
Par, jo badlaav hum lana chahte
hai
usko kiske alfaaz mile?...
Bas yahi soch hum ghr ki taraf aa
se aakash mein aansu bahate reh
gye...

CID-124813811

CLIMATE AND WEATHER

Climate's your Personality,
Weather is
your mind —
a worm and Sunny out look,
with occasional
attitude.

Low pressure grumbles with rain,
an Atmospheric
Foul.
High Pressure smiles and save the day
Sweeps the stormy
out
where are you livining on the globe —
your latitudial position
Location has a lot to do
with your climate
disposition.

CID-124788131

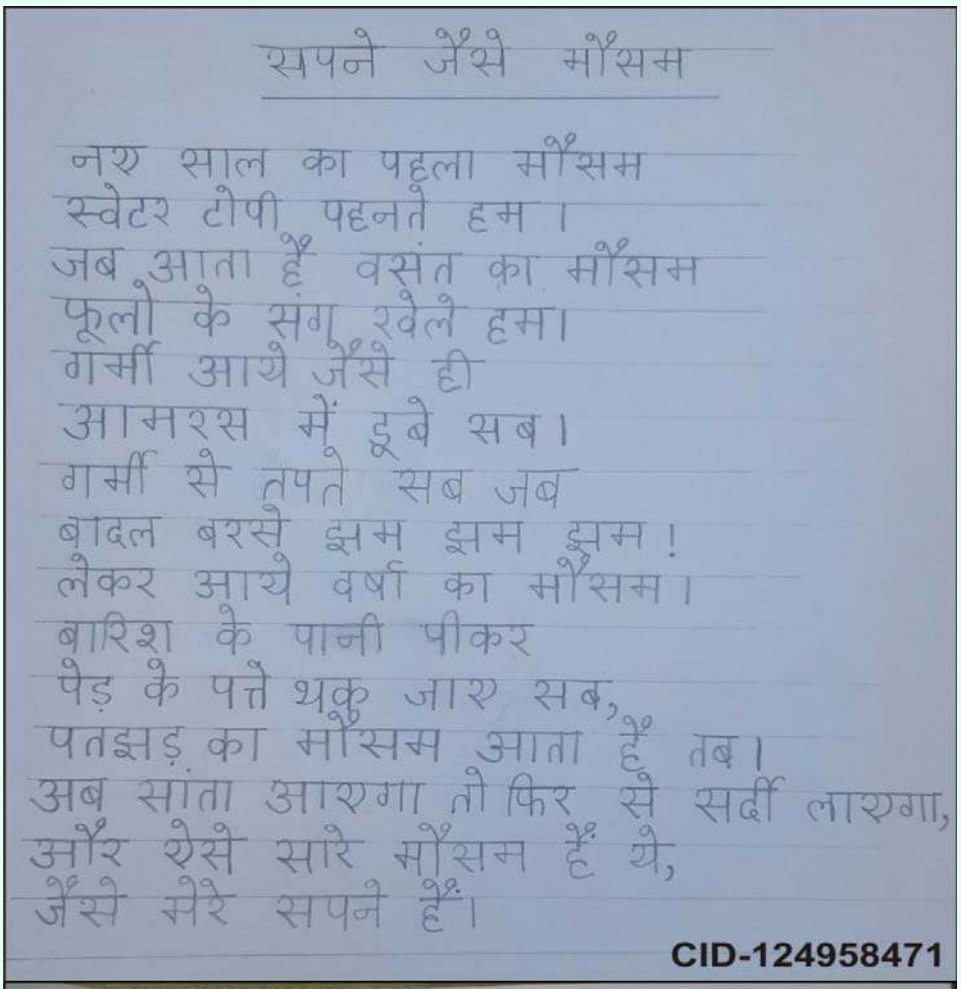

सपने जैसे मौसम

नए साल का पहला मौसम
स्वेटर टोपी पहनते हम।
जब आता है वसंत का मौसम
फूलों के संग खेले हम।
गर्मी आये जैसे ही
आमरस में डूबे सब।
गर्मी से तपते सब जब
बादल बरसे झम झम झम!
लेकर आये वर्षा का मौसम।
बारिश के पानी पीकर
पेड़ के पत्ते थक जाए सब,
पतझड़ का मौसम आता है तब।
अब सांता आएगा तो फिर से सर्दी लाएगा,
और ऐसे सारे मौसम हैं ये,
जैसे मेरे सपने हैं।

CID-124958471

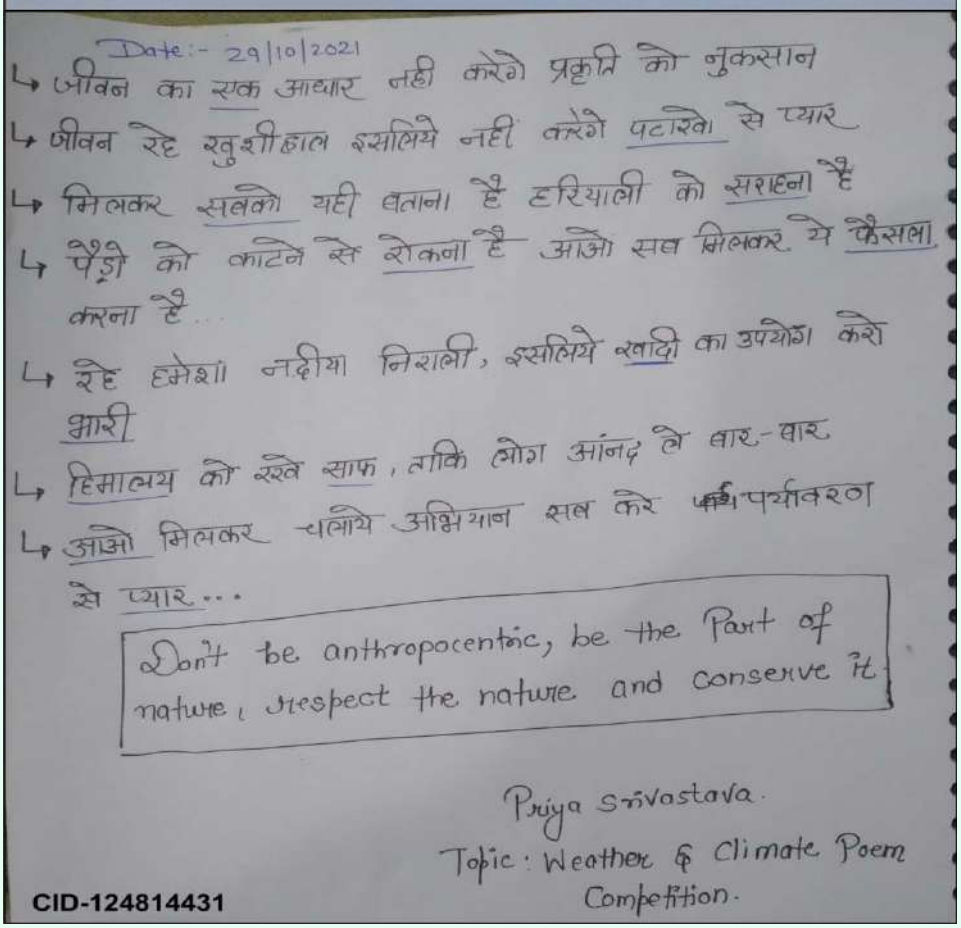

Date:- 29/10/2021

↳ जीवन का एक आधार नही करेंगे प्रकृति को नुकसान
↳ जीवन रहे खुशीहाल इसलिये नहीं करेंगे पटाखे से प्यार
↳ मिलकर सबको यही बताना है हरियाली को सराहना है
↳ पेड़ो को काटने से रोकना है आओ सब मिलकर ये कौसला करना है...
↳ रहे हमेशा नदीया निराली, इसलिये खादी का उपयोग करो भारी
↳ हिमालय को रखे साफ, ताकि लोग आनंद ले बार-बार
↳ आओ मिलकर चलाये अभियान सब करे पर्यावरण से प्यार...

Don't be anthropocentric, be the Part of nature, respect the nature and conserve it.

Priya Srivastava.
Topic: Weather & Climate Poem Competition.

CID-124814431

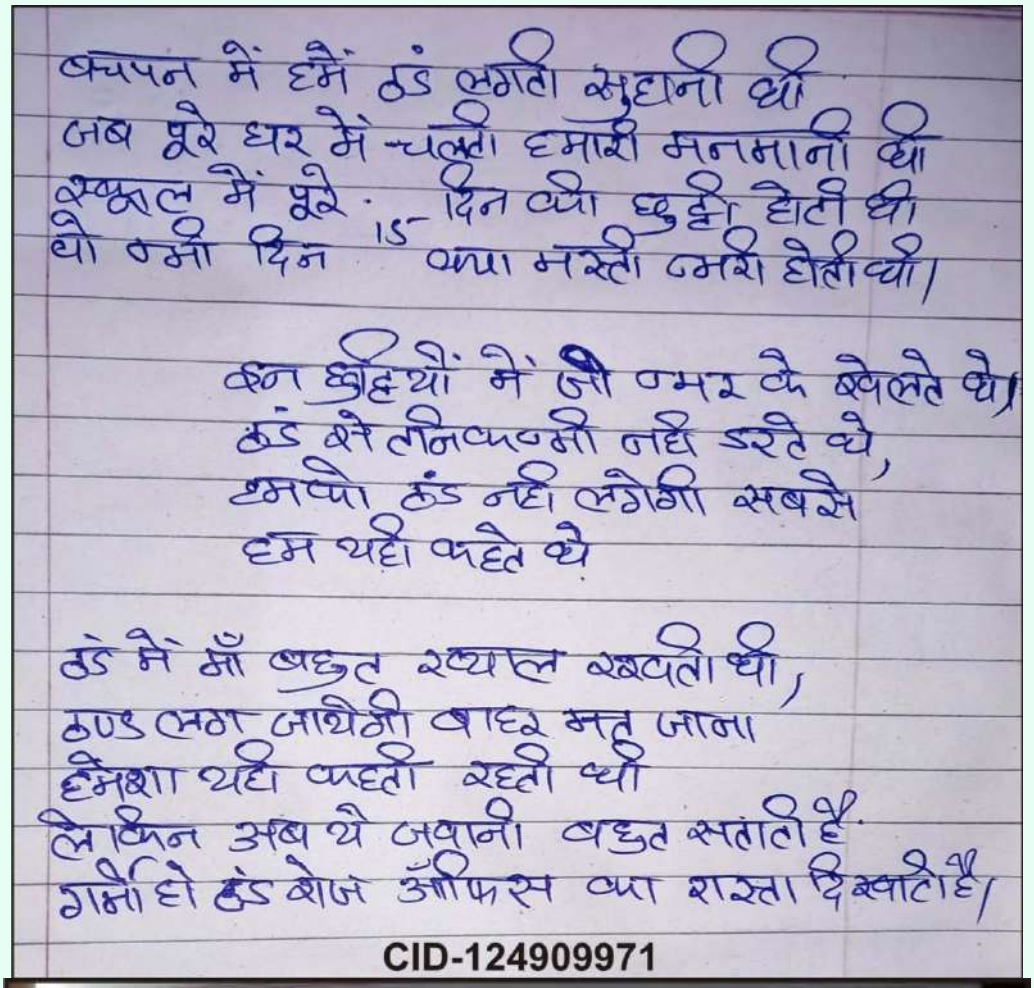

बचपन में हमें ठंड लगती सुहानी थी
जब पूरे घर में चलती हमारी मनमानी थी
स्कूल में पूरे 15 दिन की छुट्टी होती थी
वो भी दिन क्या मस्ती भरी होती थी।

इन छुट्टियों में जो भर के खेलते थे,
ठंड से तनिक भी नहीं डरते थे,
हमको ठंड नहीं लगेगी सबसे
हम यही कहते थे

ठंड में माँ बहुत ख्याल रखती थी,
ठण्ड लग जायेगी बाहर मत जाना
हमेशा यही कहती रहती थी
लेकिन अब ये जवानी बहुत सताती है
गर्मी हो ठंड रोज ऑफिस का रास्ता दिखाती है।

CID-124909971

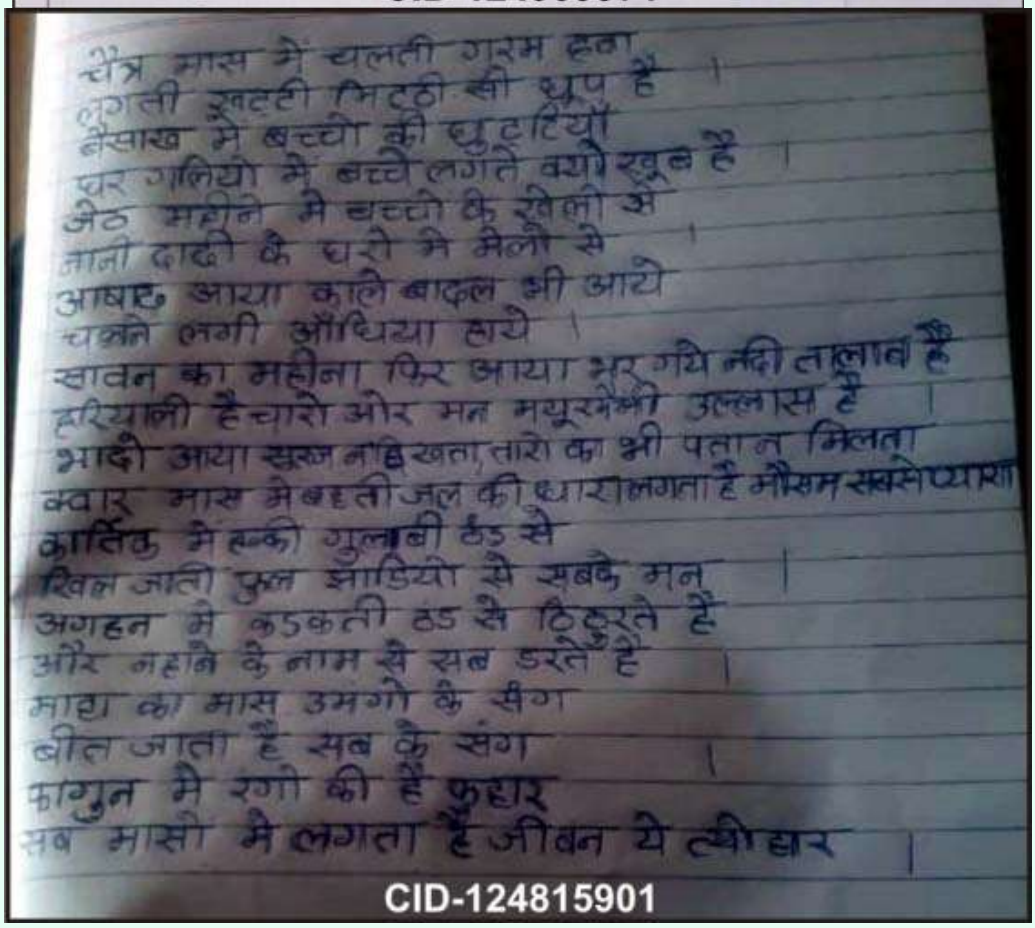

चैत्र मास मे चलती गरम हवा
लगती खट्टी मिट्ठी सी धूप है।
बैसाख मे बच्चो की छुट्टियाँ
घर गलियो मे बच्चे लगते बड़े खुश है।
जेठ महीने मे बच्चो के खेलो से
नानी दादी के घरो मे मेलो से।
आषाढ़ आया काले बादल भी आये
चलने लगी आँधियां हाये।
सावन का महीना फिर आया भर गये नदी तालाब है
हरियाली है चारो ओर मन मयूर में भी उल्लास है।
भादो आया सूरज नहि दिखता, तारो का भी पता न मिलता
क्वार मास मे बहती जल की धारा लगता है मौसम सबसे प्यारा
कार्तिक मे हल्की गुलाबी ठंड से
खिल जाती फूल झाड़ियो से सबके मन।
अगहन मे कड़कती ठंड से ठिठुरते है
और नहाने के नाम से सब डरते है।
माघ का मास उमंगो के संग
बीत जाता है सब के संग।
फागुन मे रंगो की है फुहार
सब मासो मे लगता है जीवन ये त्यौहार।

CID-124815901

Land of god

This is the land of god,
This is the land of purity,
But collectively we all are guilty for the destruction of this beautiful land.
Soory god we are failed to protect our mother earth,
Your most lovely creation,
the land of beauty, the land of life.
But its not to late
Again we collectively make this the land of every living being,the land of every life.
Due to our selfishness we snatch its beauty , we snatch its air, its water, its land
We twitch every thing which is the life of this earth.
Now its time to return back what we take away
Its time to change the earth into gleefull earth,
Because this land belongs to us.

CID-124783681

Oh dear weather
Here, there and near
Giving life to atmosphere
Just like our mother

According to places you differ
During winter we shiver
Feeling hot ? It's summer
But no one seems to suffer

Always you are clever
A mystery forever
A secret of nature
Far from our answer

CID-124881901

Fight for nature for future

RAINDROPS HIT THE LEAVES AND DISSOLVE IN THE SOIL

DO YOU HAVE THE POWER TO CARRY THIS WATER TO THE EARTH

THE MOMENT WHEN DAY TURNED INTO EVENING
THOUGHT ABOUT CLIMATE CHANGE
UNDER ARTIFICIAL LIGHT
THROUGH CLIMATE CHANGE, THE EARTH TURNED AGAINST MAN
HUMAN PLEASE PROTECT OUR NATURE DONT DISTROY IT

CID-124788121

BE WARE

BE WARE ABOUT FLOOD
BE WARE ABOUT GLOBAL WARMING
BE WARE ABOUT CLIMATE
BE WARE ABOUT WEATHER ||1||

O MAN DON' T CUT TREES
BE WARE ABOUT GLOBAL WARMING
O MAN DON' T WASTE WATER
BE WARE ABOUT DROUGHT ||2||

SAVE WATER ,SAVE TREES
SAVE OUR LIVES

O MAN IF CUT THE TREES
BE WARE ABOUT WEATHER
O MAN IF YOU WASTE WATER
BE WARE ABOUT CLIMATE ||3||

SAVE WATER ,SAVE TREES
SAVE OUR LIVES

CID-124804111

आया सावन

गरजते बादल, बरस्ता पानी
उमड़-घुमड़ आई बरखा रानी
मिट्टी की खुशबू चारो ओर
राधा संग नाचे माखन चोर।

देखो-देखो बच्चों की नादानी
बारिश में भीग इन्हे है मौज मनानी
चारो तरफ शोर ही शोर
वन-वन घूमे, नाचे मोर।

आओ सुनाए सावन की कहानी
नई नहीं ये है सदियों पुरानी
बरसे पानी नाचे मोर
मधुबन में गाए नंद किशोर।

CID-124874891

यह उत्सव मेरे महान भारत की अमृत गाथा का है दर्पण
खुशनुमाह ताजगी भरी हवांए करती है जहां नवजीवन अर्पण
मौसम भी प्यारसे इसकी खुशहालीके लिये करे यहां खुदको समर्पण

किसान, मच्छीमार अपनी उपजसे सही ज्ञान पाकर होते मालामाल
आत्मनिर्भर भारत अब जानता है पुरे देश के मौसम का हाल
आओ मनायें निश्चीत मनसे आझादी का पंचहत्तरवा साल

आंधी-तुफान तो है आते - जाते वक्त बेवक्त यहा वहां
वक्तसे पहले करके पहचान, देश को करे तैयार हो जरुरत जहां
मौसम के हर हाल के लिये आधुनिकताने संभाला है स्थान यहां

जमीन, जल हो या आकाश की हर वक्त होती निगरानी
कोशीश है होती कमसे कम हो जान - माल की हानी
जनजीवन को कमसे कम हो प्राकृतिक आपदांओंसे परेशानी

करके भौगोलीक धाराओंका परीपुर्ण सर्वेषण
कम से कम करे हम जमीन, जल और आकाश का प्रदुषण
आओ बनाये अपने भारत सारे विश्व के लिये आकर्षण

CID-124791411

चलो, आज कुछ अलग करते हैं.....

चलो, आज कुछ अलग करते हैं,
सोशल मीडिया से निकलकर,
वातावरण की गोद में चलते हैं।
बहुत समय से बेचैन से हैं हम,
दवा भी तो काम नहीं आ रही,
बड़े हैरान से हैं हम।
कभी तेज गर्मी, कभी एकदम सर्दी,
कभी भयंकर बारिश, कभी तूफान आए दिन आते हैं,
इंसान तो बस चिंता में ही सो जाते हैं।
अब तो यहां विराम चिन्ह लगाना पड़ेगा,
पेड़ों को कटने से बचाना पड़ेगा,
तो चलो पहल आज से ही करते हैं,
सोशल मीडिया से निकलकर,
वातावरण की गोद में चलते हैं।
कुछ पेड़ तुम लगाना, कुछ हम लगाएंगे,
थोड़ी सी कोशिश तुम करना, थोड़ा हम वातावरण को सुंदर बनाएंगे।
बस इसी कोशिश से एक बार फिर से पेड़ लहराएंगे, पक्षी गीत गाएंगे,
देखना, जिंदगी को एक बार फिर से हम सकून से जी पाएंगे।

CID-124823861

ये हरे–भरे पेड़ औ पौधे, हैं पर्यावरण के आभूशण
काटोगे गर इनको तुम तो फैलेगा प्रदूशण

अभावों में घन पादप के न अन्न ना दाल न होंगे फल
रह जाएंगे सब गहन पिपासे, न होगी वर्शा न होगा जल

प्राण वायु को सब तड़पेंगे, वन हो जाएंगे विपन्न
मन औ मीत सब विह्वल उठेंगे, हर तन मन होगा अप्रसन्न

नव पौधे यदि नित आरोपें, जन संख्या पर भी हो गतिरोध
चहुं ओर फल फूल खिलेंगे पर्यावरण का होगा परिशोध

हम कुदरत को यूं न कुरेदें, ना हो पीड़ित कोई जन्तु–जगत
वरना पीड़ित हम सब होंगे, और पड़ेगा हमें कुदण्ड

पौधा तुलसी का मेरी सखी, नीम है मेरा सांचा मीत
पीपल की छाश है सुखद सी, फल राजा के गाउं गीत

तरु बरगद है गुरू सभी का, जिसके नीचे रचे ग्रंथ गीत
जामुन की गुठनी है नगीना, जिसमें शोभित जीवन आभूशण
आओ मिल–जुल इन्हें संजोएं, स्वच्छ रखें हम वातावरण

CID-124959001

Nature is what we all should guard,
without which life would be difficult & hard
Air, water & everything that we pollute,
what will we handover to our little wards
This planet looks beautiful with flowers that blossom,
butterflies that wander & makes it all awesome
we all love the colour of nature around,
Rainbow in clouds & Bird's chirping sound
Mountains as we them standing high,
the space that's beyond that blue grey sky
the sound of music with water that flow,
spectrum of sun that makes Earth glow
We all have only this planet in common,
we have to protect it & leave it to no-one
For if we do not wake-up & be responsible,
life on Earth will soon be impossible

Neeti Swashant Srivastava

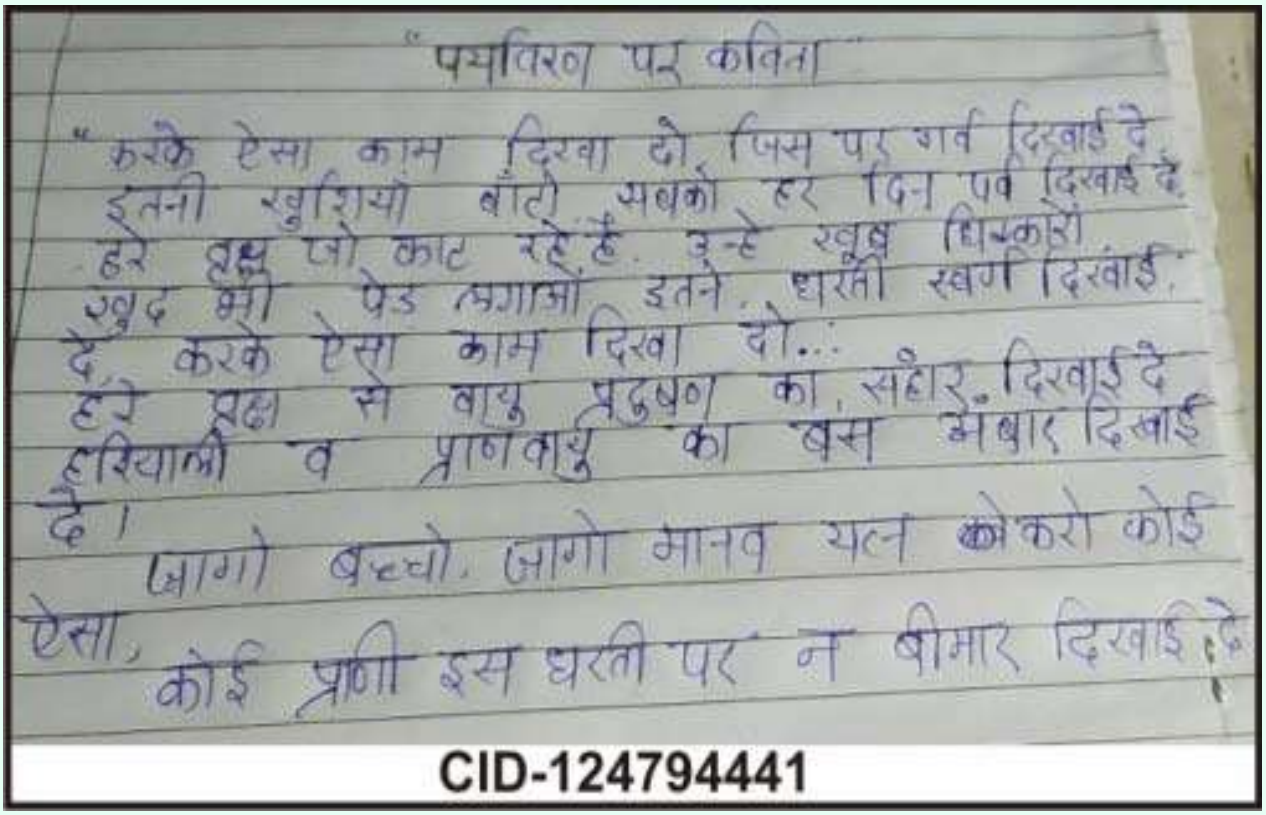

पर्यावरण पर कविता

"करके ऐसा काम दिखा दो, जिस पर गर्व दिखाई दे
इतनी खुशियां बांटो सबको हर दिन पर्व दिखाई दे
हरे वृक्ष जो काट रहे हैं उन्हे खूब धिक्कारो
खुद भी पेड़ लगाओ इतने धरती स्वर्ग दिखाई
दे करके ऐसा काम दिखा दो...
हरे वृक्ष से वायु प्रदूषण का संहार दिखाई दे
हरियाली व प्राणवायु का बस भंडार दिखाई
दे।
जागो बच्चो, जागो मानव यत्न करो कोई
ऐसा, कोई प्राणी इस धरती पर न बीमार दिखाई दे

CID-12479441

Wether

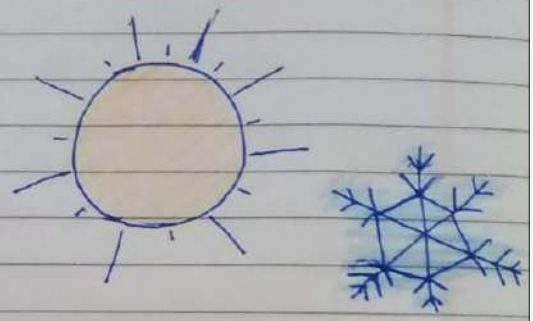

Weather is hot,
Weather is cold,
Weather is changing,
As the weeks unfold.
Skies are cloudy,
Skies are fair,
Skies are changing,
In the air.
It is raining,
It is snowing
It is windy
With breezes blowing.
Days are foggy,
Days are clear,
Weather is changing,
Throughout the year.

CID-124878341

- I can't help but stop and,
look at the sunnier clime.
- Clouds, however hard they try,
can't be so benevolent & altruistic.
- I can't help but stop and,
feel the peaceful breeze.
- Wind, however hard it tries,
can't be so gentle & serene.
- I can't help but stop and,
wonder at the blissful weather.
- Heaven, however hard it tries,
can't be so gracious & pleasant.

CID-124916711

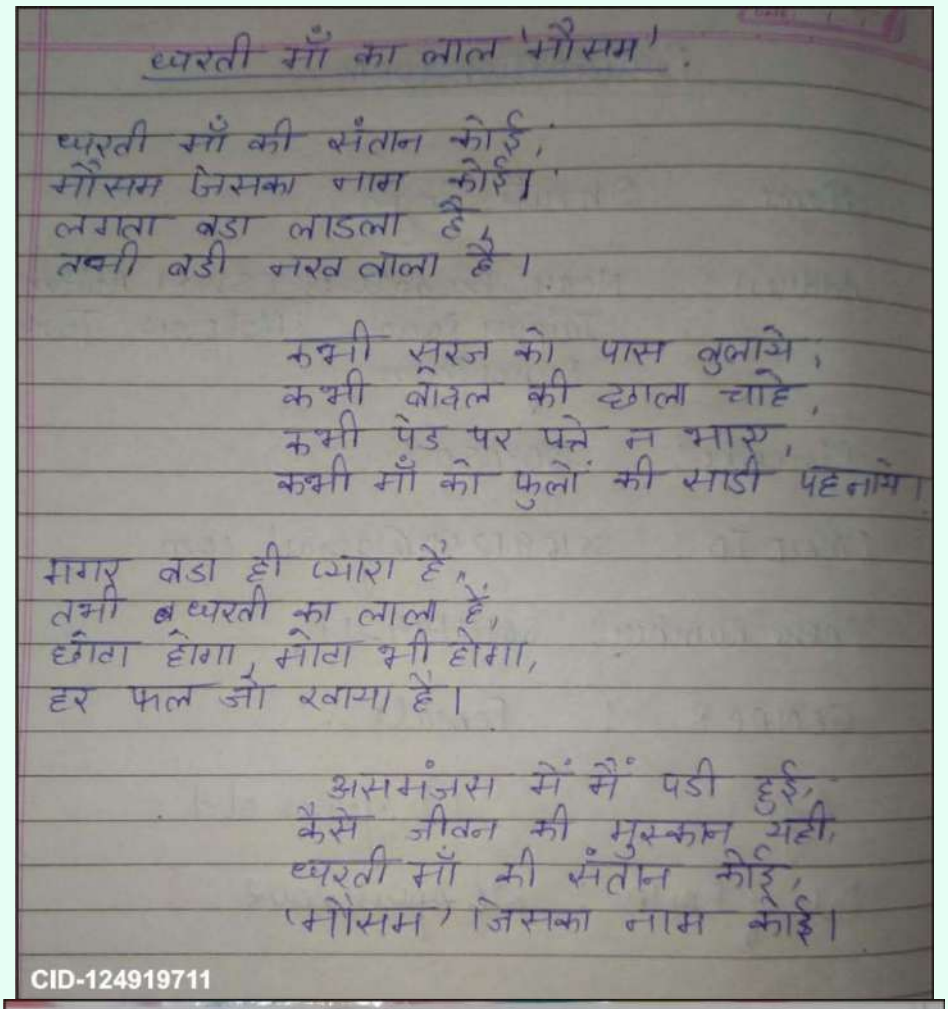

धरती माँ का लाल 'मौसम'

धरती माँ की संतान कोई,
मौसम जिसका नाम कोई।
लगता बड़ा लाडला है,
तभी बड़ी नखरे वाला है।

कभी सूरज को पास बुलाये,
कभी बादल की छाया चाहे,
कभी पेड़ पर पत्ते न भाए,
कभी माँ को फूलों की साड़ी पहनाये।

मगर बड़ा ही प्यारा है,
तभी ~~ब~~ धरती का लाला है,
छोटा होगा, मोटा भी होगा,
हर फल जो खाया है।

असमंजस में मैं पड़ी हुई,
कैसे जीवन की मुस्कान यही,
धरती माँ की संतान कोई,
'मौसम' जिसका नाम कोई।

CID-124919711

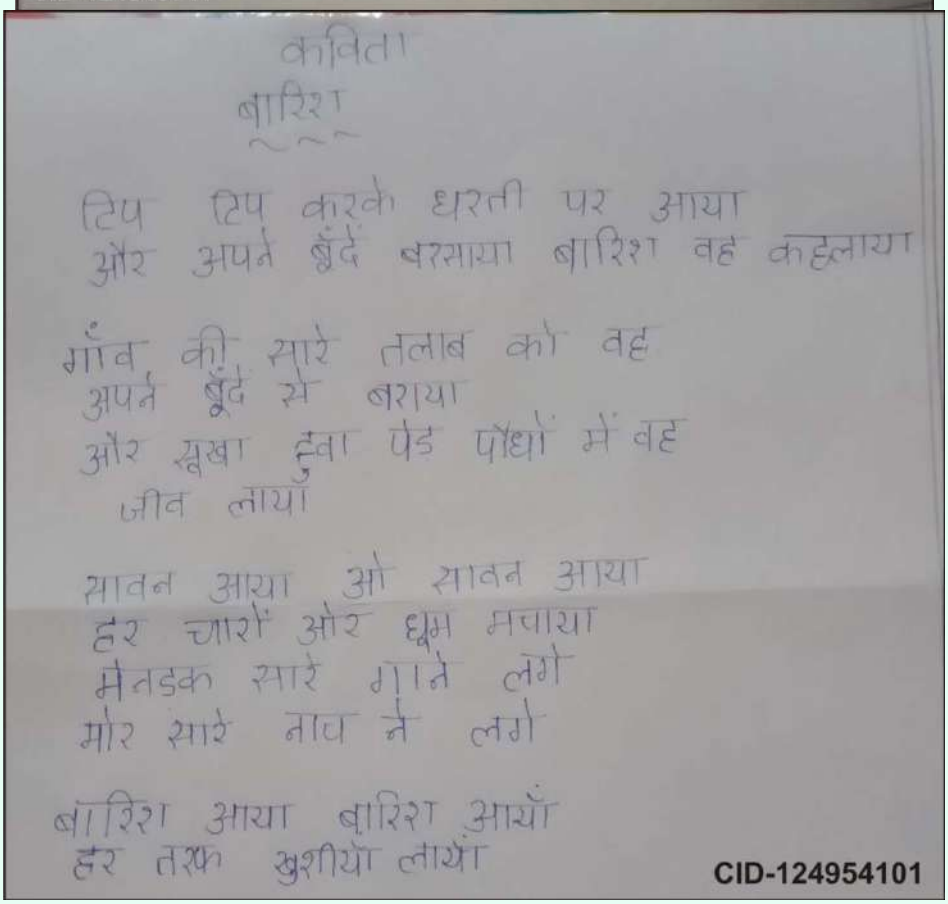

कविता
बारिश

टिप टिप करके धरती पर आया
और अपने बूंदें बरसाया बारिश वह कहलाया

गाँव की सारे तलाब को वह
अपने बूँदें से भराया
और सूखा हवा पेड़ पौधों में वह
जीवन लाया

सावन आया ओ सावन आया
हर चारों ओर धूम मचाया
मेंढक सारे गाने लगे
मोर सारे नाच ने लगे

बारिश आया बारिश आयाँ
हर तरफ खुशीयाँ लायाँ

CID-124954101

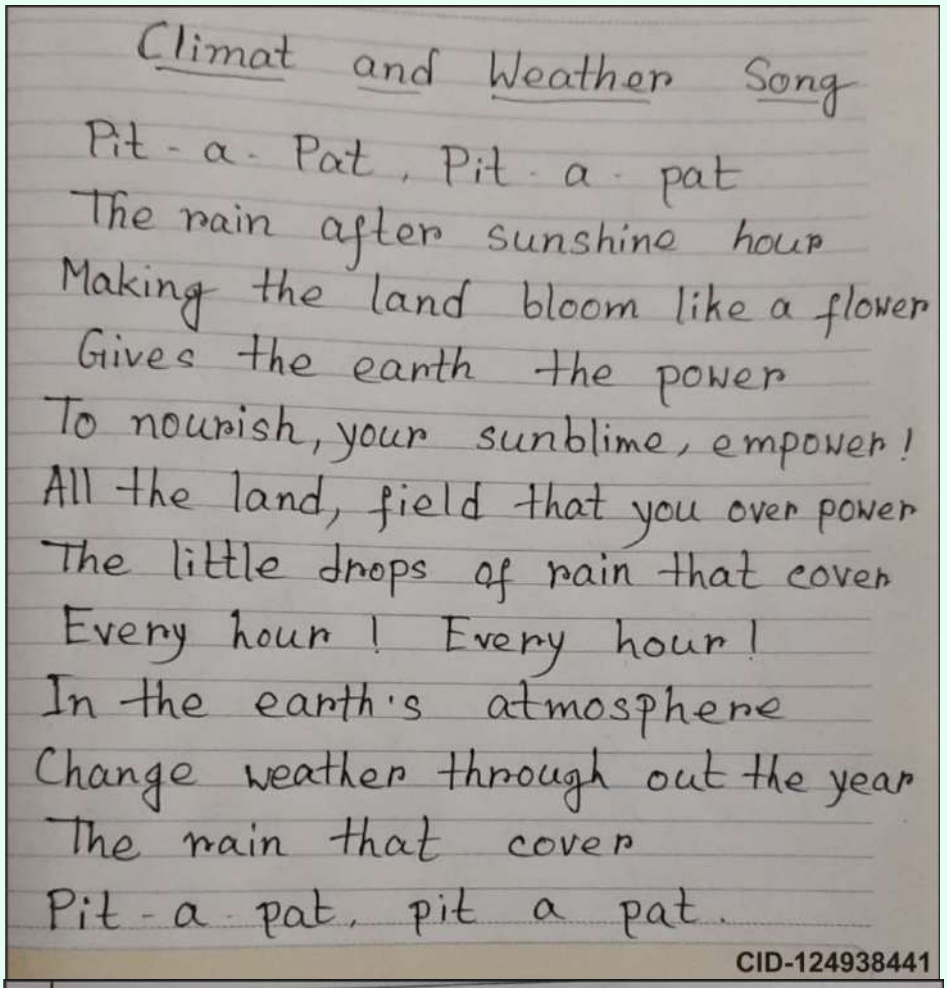

Climat and Weather Song

Pit - a - Pat, Pit - a - pat
The rain after sunshine hour
Making the land bloom like a flower
Gives the earth the power
To nourish, your sunblime, empower!
All the land, field that you over power
The little drops of rain that cover
Every hour! Every hour!
In the earth's atmosphere
Change weather through out the year
The rain that cover
Pit - a - pat, pit a pat.

CID-124938441

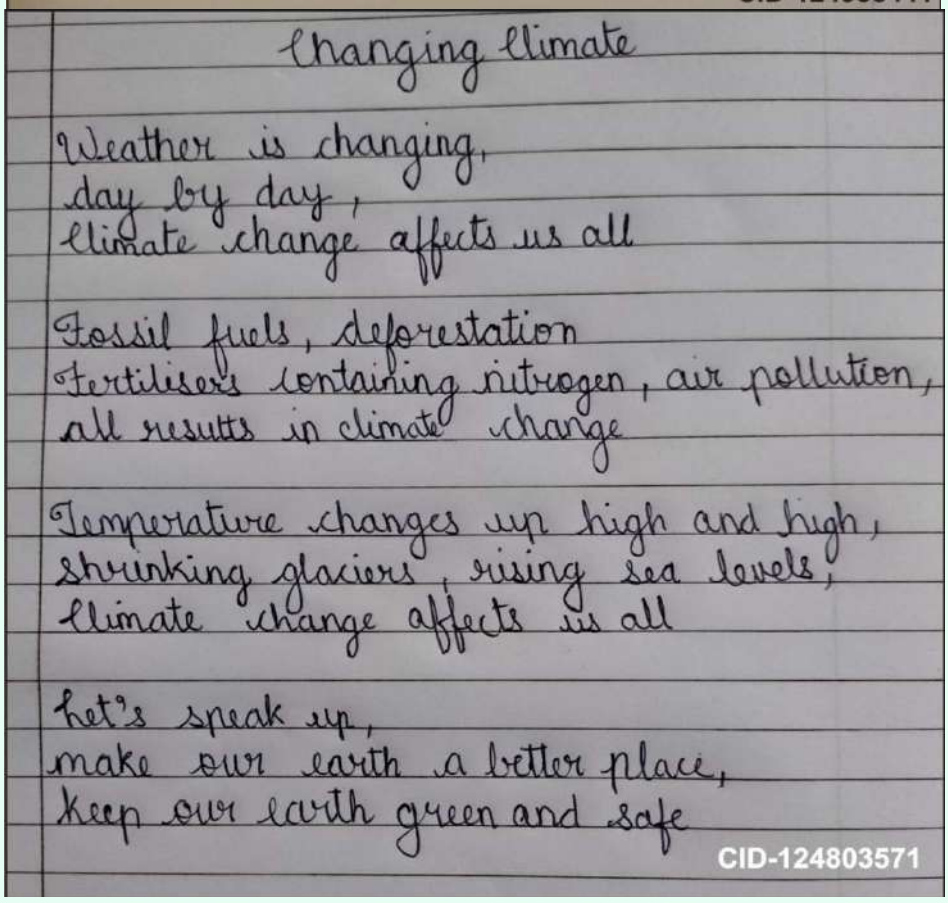

Changing climate

Weather is changing,
day by day,
climate change affects us all

Fossil fuels, deforestation
fertilisers containing nitrogen, air pollution,
all results in climate change

Temperature changes up high and high,
shrinking glaciers, rising sea levels,
climate change affects us all

Let's speak up,
make our earth a better place,
keep our earth green and safe

CID-124803571

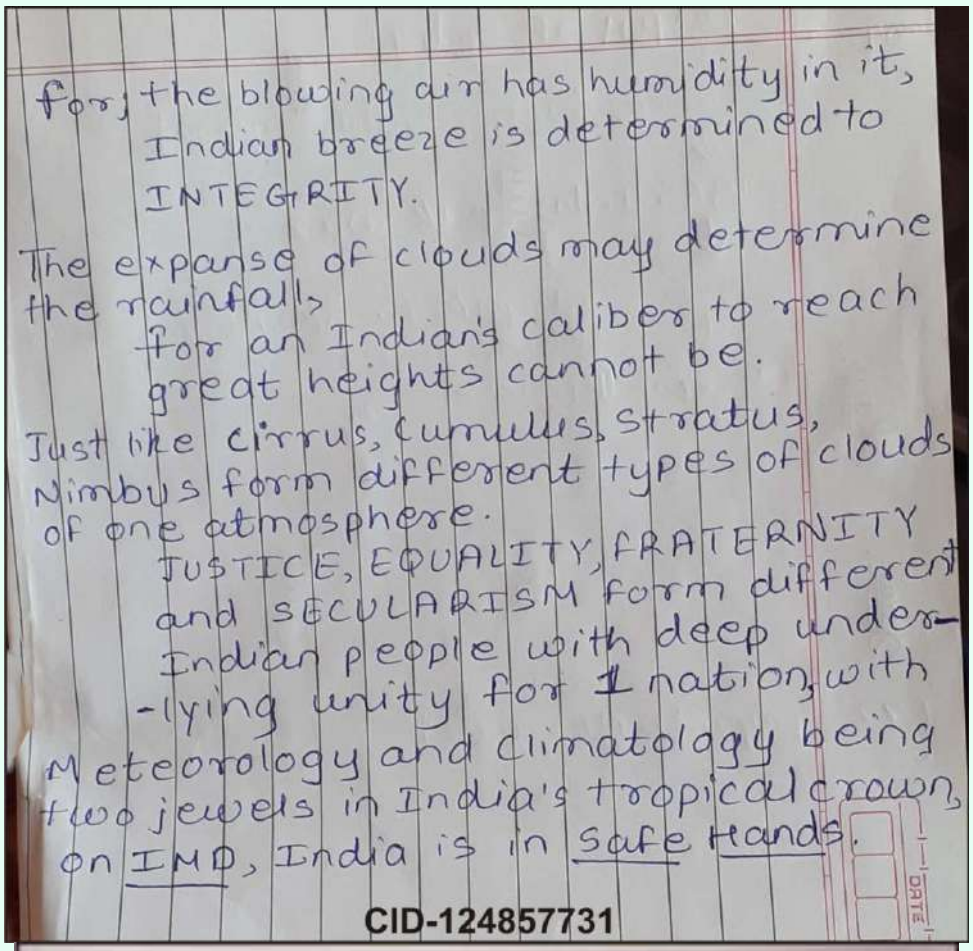

for, the blowing air has humidity in it,
Indian breeze is determined to
INTEGRITY.
The expanse of clouds may determine
the rainfall,
for an Indian's caliber to reach
great heights cannot be.
Just like cirrus, cumulus, stratus,
Nimbus form different types of clouds
of one atmosphere.
JUSTICE, EQUALITY, FRATERNITY
and SECULARISM form different
Indian people with deep under-
-lying unity for 1 nation, with
Meteorology and climatology being
two jewels in India's tropical crown,
on IMD, India is in safe Hands.

CID-124857731

A process in the weather of the heart
Turns damp to dry: the golden shat
Storms in the freezing tomb
A weather in the quarter of the veins
Turns night to day; blood in their suns
light up the living worm.
A process in the eye forewarns
The bones of blindness; and the womb
Drives in a death as life leaks out.
A darkness in the weather of the eye
Is half its light; the fathomed sea

CID-124810591

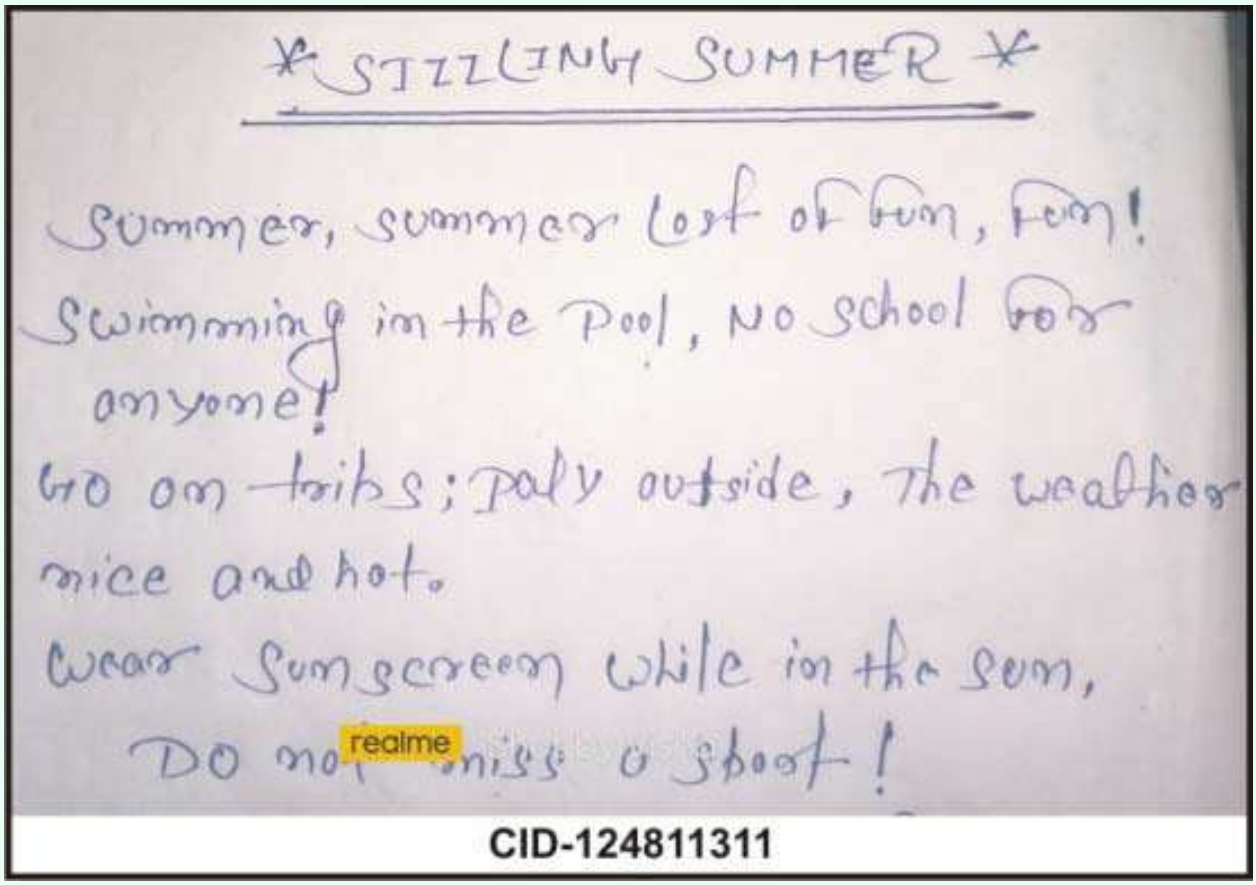

* SIZZLING SUMMER *

Summer, summer lost of fun, fun!
Swimming in the Pool, No school for anyone!
Go on trips; paly outside, The weather nice and hot.
Wear Sunscreen while in the sun,
Do not miss a sport!

realme

CID-124811311

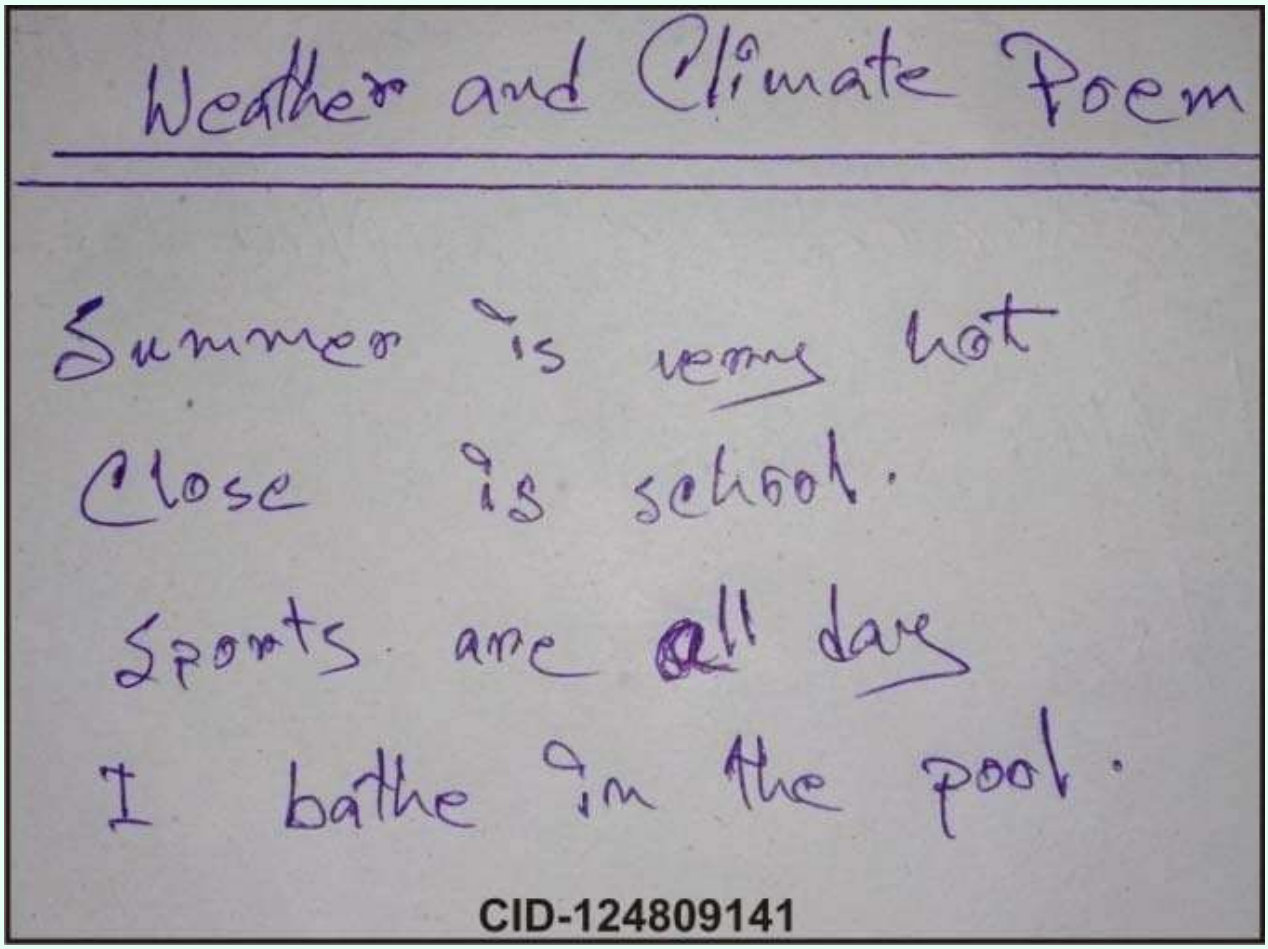

Weather and Climate Poem

Summer is very hot
Close is school.
Sports are all day
I bathe in the pool.

CID-124809141

WEATHER

Oh! Its a windy day,
wind blows to no end,
Sometimes heavy,sometimes light,
Blowing things out of sight,

Oh! Its a cloudy day,
Clouds look so puffy,
Some are big,some are small,
They are light and fluffy,

Oh! Its a rainy day,
The rain is falling all around,
Pick up your umbrella go outside,
Splash the water and enjoy,

Oh! Its a snowy day,
White dots from the sky,falling to the ground,
Throw a snowball,build a snowman,
Warm yourself in winter clothes,

Oh! Its a foggy day,
Skies are painted gray,
There is a blanket of fog all around,
It's hard to see things around.

CID-124866851

POEM

Sunny,Rainy,windy or snowy
We be there cherishing for glory !
Rose, Butterfly,Cuckoo and lioness
Enjoys the weather with gladness .
The weather is always transient,
But we know the climate is constant.
Summer,Winter, spring and fall
We contribute ourselves to all.
Morning,Noon, Evening and Night
We make our things to be right.
Sunny, Rainy, windy or snowy
We be there cherishing for glory !

CID-124804661

The Change is Real

I looked up into the sky with my fluttering eye,
It felt to me someone had clenched the sky's
Snatched it's blue and coated it brownish-black.
I marveled at who made the beaming sun frown,
like a king devoid of his crown.
I asked my conscious could the earth cry, the sky lie.
Believe me, my friend the weather and climate have changed.

The iceberg below me spoke, don't look up my son
you have lost your shield, ozone is no longer your friend,
due to your deed, you have met your end.
Look down, look around oh fortunate you are to have a home
look at that polar bear's cub he has not even a
a single inch of land to roam.
I asked my conscious could the ice melt and homes disappear
Believe me, my friend the weather and climate change are to be feared.

Water, water everywhere except at the place it has to be there.
I could see the earth in the chain, the climate, and the weather change
Ozone depletion, Co2 emission, deforestation, disrupted precipitation,
After all, who's to be blamed, believe me, my friend the change is here
If we don't act now our end is near.

CID-124814911

WEATHER AND CLIMATE POEM COMPETITION

AZADI KA AMRIT MAHOTSAV

Weather and Climate- both share a unique and even a strange relation.
The first keeps changing, while the other remains static for a longer duration.
At times they create challenging situations and confuse us,
causing hurricanes, droughts, forest fires, tsunamis and floods!

But we humans have never learnt to bow down or lose hope.
No matter how bad the situation may be, we always learn to cope!
With this spirit, the seed of India Meteorological Department was sown.
To research about the matters of meteorology and allied subjects well known!

The mission of the department is to create a weather-ready nation.
By providing a monitoring, forecasting, managing and warning station.
We are safe because of their persistent and determined efforts.
It is their mission to protect the environment and ensure that no one gets hurt.

We all must be responsible and act wisely to stop climate change.
Taking care of our beautiful Earth is well within our range.
Let us thank the wonderful efforts of our Meteorological Department.
And pledge to contribute for our Earth's growth and development!

CID-124783801

FOR OUR MOTHER EARTH

Poem

We fly with our aims
We fly with our dreams
Never saw our earth's pain
That increased always in it's vein.

We rooted our destructors
We uprooted our protectors
Never saw her cry
We never mind it. Why?

We gazed at our gain
Till her pain burst on us like rain,
wind, fire ,waves, flood....
We realized the pressure in her blood.

Bring back her beauty,
Bring back her greenery,
For our earth, For our earth,
For our mother earth.

CID-124830061

सर्दी आई, सर्दी आई,
मन भावन सर्दी आई।
आओ खेलें, आओ खाएं,
मिल जुल कर धमाल मचाएं।
ना गर्मी की चुभन,
ना पसीने की किचकिच।
मनपसंद पकवान,
खाए जाएं खचाखच।
धूप में बैठ,
लें चाय की चुस्की।
'ऐलोवीरा जैल' लगाएं,
दूर करें खुश्की।

CID-124821781

सावन का महीना

सावन का महीना लागे मन भावन
बादल गरजे, पानी बरसे
कोयल गाए गीत सुहावन।

मधुबन में बंसी बजाए नंद किशोर
राधा संग गोपियाँ नाचे कृष्ण के चारों ओर
मुरली की धुन पर झूमे और नाचे मोर।

खेतों में लहराए हरी-हरी फसल
तालाब में मुस्कुराते हुए खिले कमल
टिप-टिप बरसे पानी जैसे कोई गज़ल।

नदियों में नई ऊर्जा, बागों में नए फूल
सागर हुआ विशाल, शांत हुआ धूल
कलियों पर तबस्सुम, बगियों में बच्चे रहे झूल।

सावन का महीना, पुरवाई से रूबरू
भीगा हुआ चमन
और मिट्टी की सोंधी खुशबू।

CID-124874781

Weather Ways

Weather the weather we have it
each day.
It's hot, or it's cold, or it's sunny or
gray.
It's blowy, or snowy, or rainy or clear.
There's SOME kind of weather each
day of the year.

CID-124880771

My planet on fire

Tears roll down my eyes
My heart is out and scream in cries

Climate is posing a serious threat
Any time dry any time wet

More storm, flood and drought we face
Rising sea level at all the place

Melting glaciers up in poles
Shrinking mountains uncontrolled

Temperature is rising and rising so high
Polar bear extinct and creatures die

Human activity and deforestation
Created emergency for all the nations

With the dawn of industrial revolution
Global warming, environmental pollution

Climate is changing at a rate so higher
Indeed, my planet is on fire

Be natural and care for nature
A call for action for all the creatures

Practice 3 Rs to keep climate change away
The future depends on what we do today

CID-124867671

**Climate's your personality,
weather is
your mood—
a warm and sunny outlook,
with occasional
attitude.**

**Low pressure grumbles in with rain,
an atmospheric
pout.
High pressure smiles and saves the day,
sweeps the stormy
out.**

**Where are you living on this globe—
your latitudinal
position?
Location has a lot to do
with your climatic
disposition.**

CID-124821291

SESSIONS WITH MY SEASONS

If it gets rainy

I will go out for a rally

If it gets cloudy

I will make a hotter coffee

If it gets sunny

I will take my showers heavenly

If it gets snowy

I will create my snowmam hobby

If it gets springy

I will decorate my home leafy

Changes bring fulfillness to life -the way

Climate does it in a year.

-SHIVANI

A girl from The Nature

A girl for The Nature !!!

CID-124837411

रो-रोकर पुकार रहा हूं हमें जमीं से मत उखाड़ो

रो-रोकर पुकार रहा हूं हमें जमीं से मत उखाड़ो।

रक्तस्राव से भीग गया हूं मैं कुल्हाड़ी अब मत मारो।

आसमां के बादल से पूछो मुझको कैसे पाला है।

हर मौसम में सींचा हमको मिट्टी-करकट झाड़ा है।

उन मंद हवाओं से पूछो जो झूला हमें झुलाया है।

पल-पल मेरा ख्याल रखा है अंकुर तभी उगाया है।

तुम सूखे इस उपवन में पेड़ों का एक बाग लगा लो।

रो-रोकर पुकार रहा हूं हमें जमीं से मत उखाड़ो।

इस धरा की सुंदर छाया हम पेड़ों से बनी हुई है।

मधुर-मधुर से मंद हवाएं, अमृत बन के चली हुई हैं।

CID-124809881

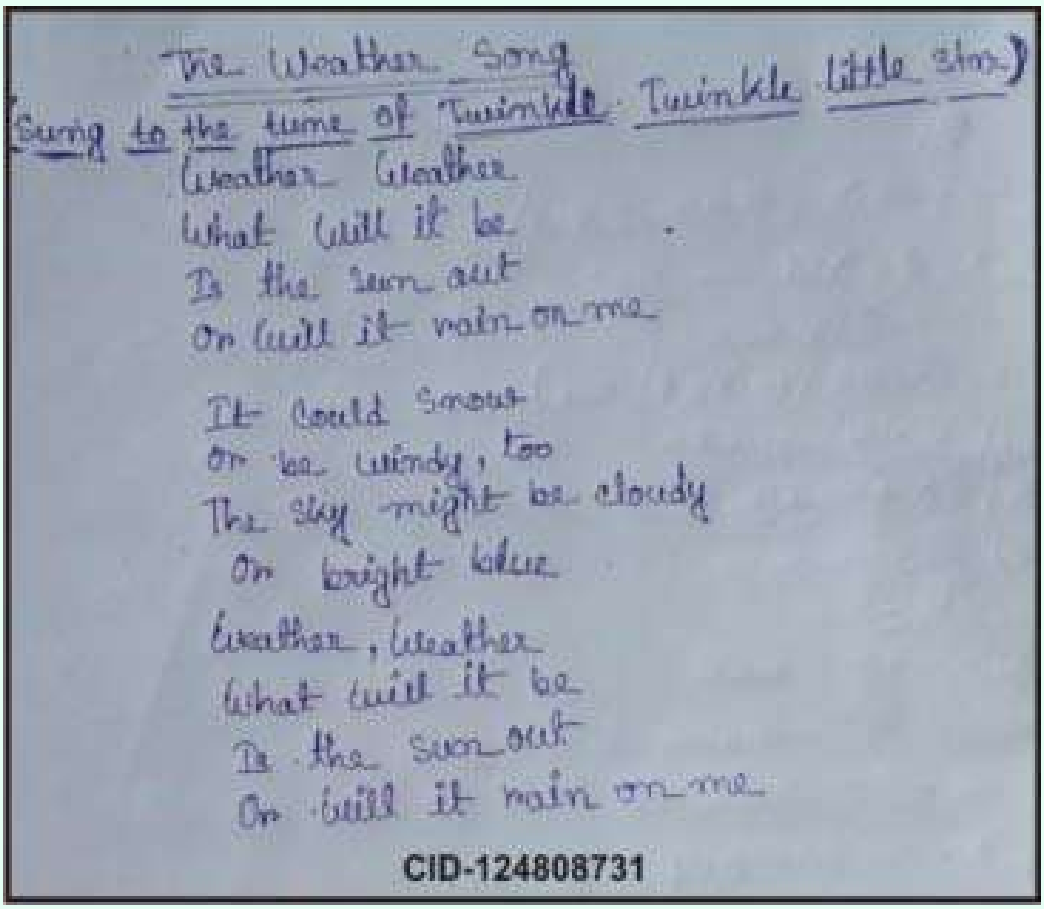

The Weather Song
(Sung to the tune of Twinkle Twinkle little star)

Weather Weather
What will it be
Is the sun out
Or will it rain on me

It could snow
Or be windy, too
The sky might be cloudy
Or bright blue

Weather, Weather
What will it be
Is the sun out
Or will it rain on me

CID-124808731

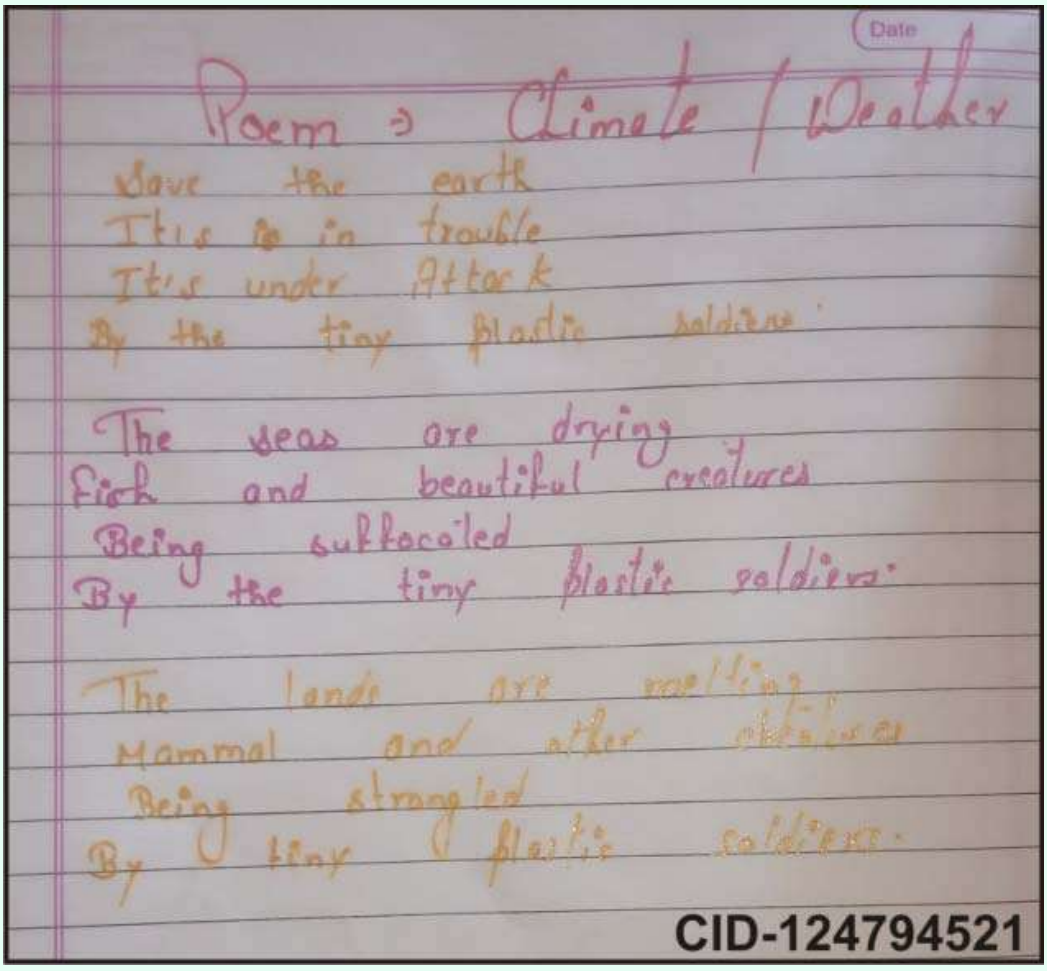

Date

Poem ⇒ Climate / Weather

Save the earth
It is in trouble
It's under Attack
By the tiny plastic soldiers

The seas are drying
Fish and beautiful creatures
Being suffocated
By the tiny plastic soldiers.

The lands are melting
Mammal and other creatures
Being strangled
By tiny plastic soldiers.

CID-124794521

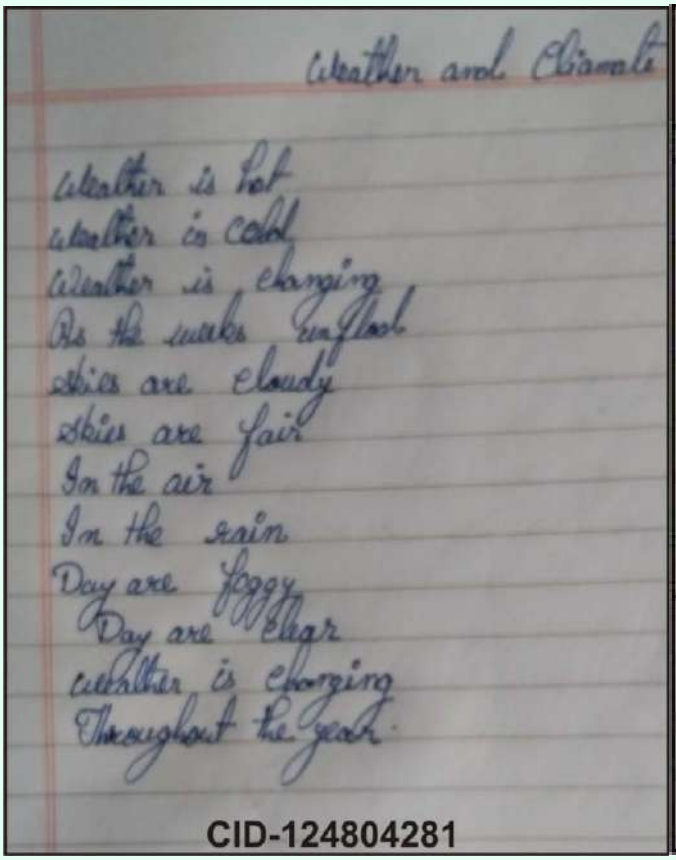

Weather and Climate

Weather is hot
Weather is cold
Weather is changing
As the weeks unfold
Skies are cloudy
Skies are fair
In the air
In the rain
Day are foggy
Day are clear
Weather is changing
Throughout the year.

CID-124804281

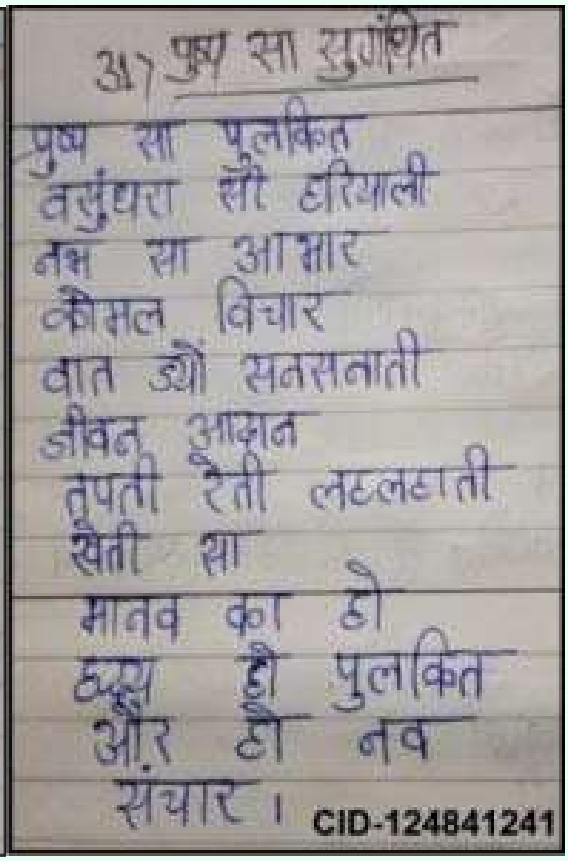

37) पुष्प सा सुगंधित

पुष्प सा पुलकित
वसुंधरा सी हरियाली
नभ सा आभार
कौमल विचार
वात ज्यों सनसनाती
जीवन आदान
तपती रेती लहलहाती
खेती सा
मानव का हो
हृदय हो पुलकित
और हो नव
संचार।

CID-124841241

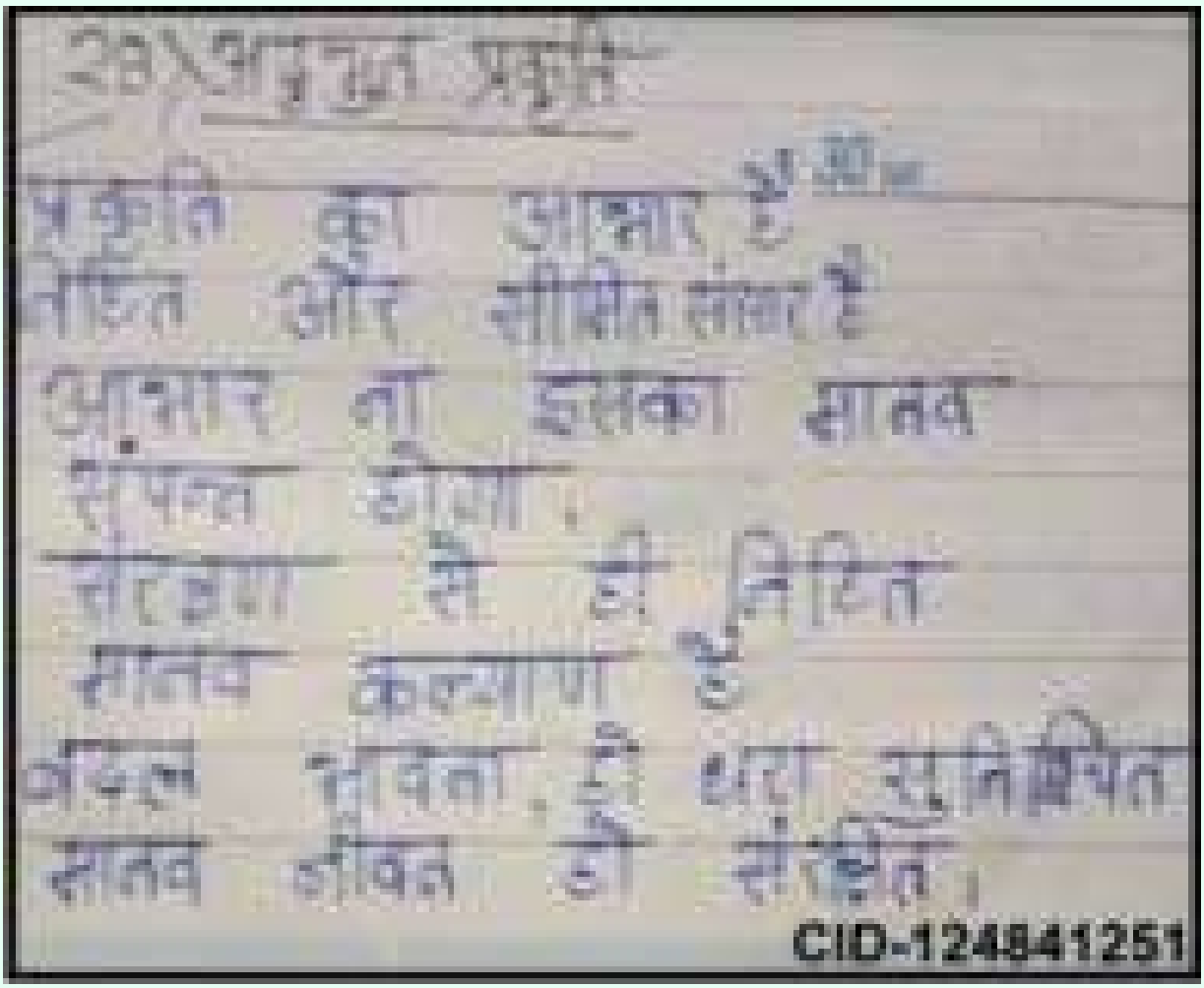

38) अनुपम प्रकृति

प्रकृति का आभार है
नैतिक और सीमित संसार है
आभार ना इसका मानव
संभव होगा।
संरक्षण से ही निहित
मानव कल्याण है
जंगल जीवित है धरा सुनिश्चित
मानव जीवन हो संरक्षित।

CID-124841251

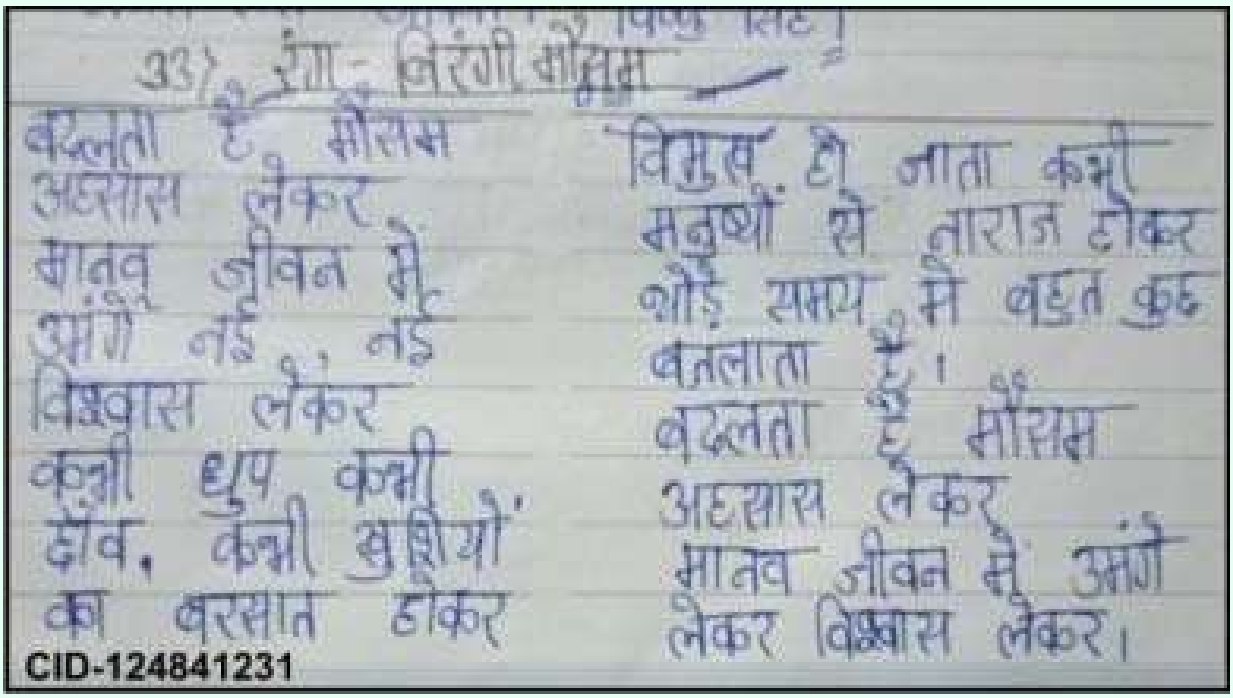

33) रंग - तिरंगी मौसम

बदलती है मौसम
अहसास लेकर
मानव जीवन में
अंगों नई नई
विश्वास लेकर
कभी धूप कभी
छाँव, कभी खुशियों
का बरसात होकर

विमुख हो जाता कभी
मनुष्यों से नाराज होकर
थोड़े समय में बहुत कुछ
बतलाता है।
बदलता है मौसम
अहसास लेकर
मानव जीवन में अंगों
लेकर विश्वास लेकर।

CID-124841231

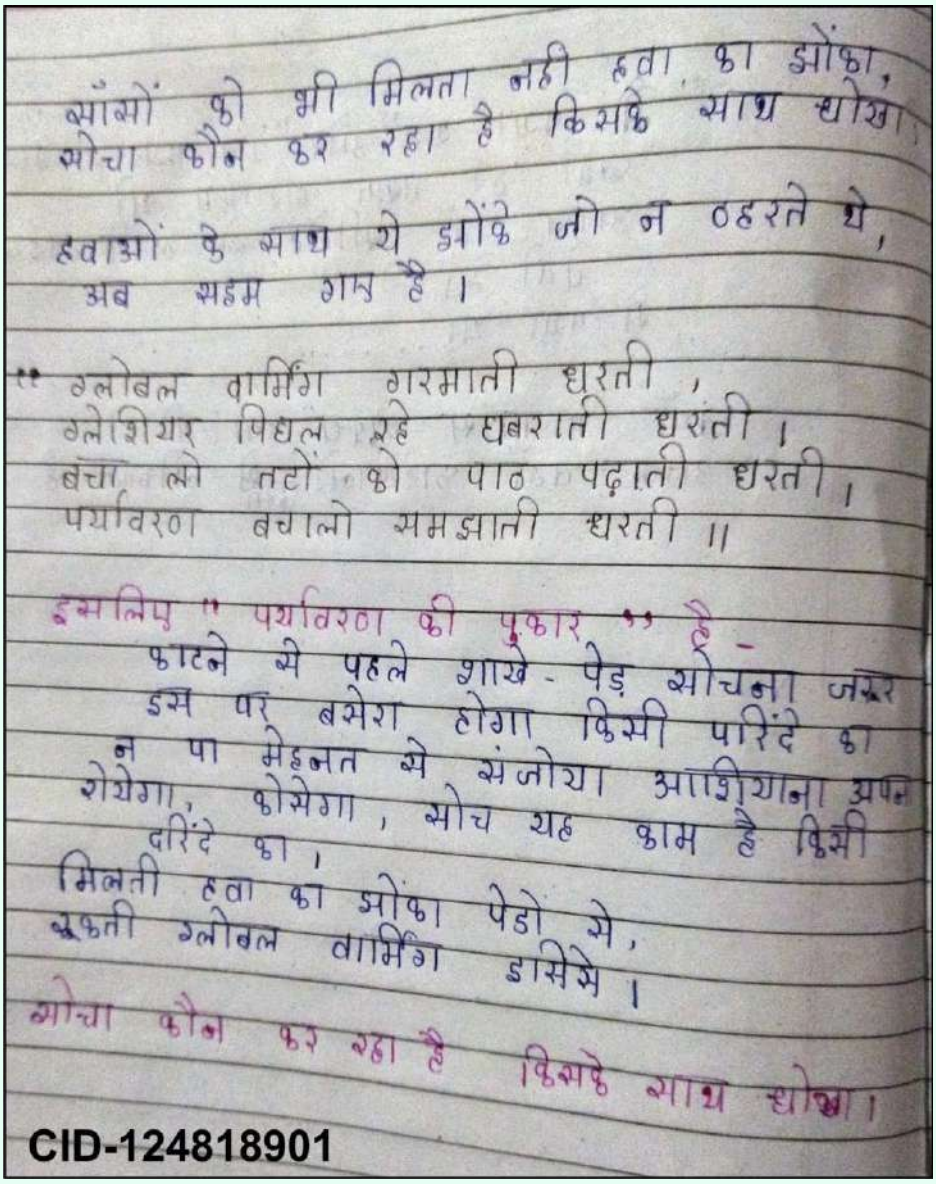

साँसों को भी मिलता नहीं हवा का झोंका,
सोचा कौन कर रहा है किसके साथ धोखा।

हवाओं के साथ थे झोंके जो न ठहरते थे,
अब सहम गए है।

" ग्लोबल वार्मिंग गरमाती धरती,
ग्लेशियर पिघल रहे घबराती धरती।
बचा लो तटों को पाठ पढ़ाती धरती,
पर्यावरण बचालो समझाती धरती ॥

इसलिए " पर्यावरण की पुकार " है -
काटने से पहले शाखे - पेड़ सोचना जरूर
इस पर बसेरा होगा किसी परिंदे का
न पा मेहनत से संजोया आशियाना अपना
रोयेगा, कोसेगा, सोच यह काम है किसी
दरिंदे का,
मिलती हवा का झोंका पेड़ो से,
रुकती ग्लोबल वार्मिंग इसीसे।
सोचा कौन कर रहा है किसके साथ धोखा।

CID-124818901

पर्यावरण

आओ चलो मिलकर सब अब
एक नई दुनिया सजाते है।
भविष्य मे जगह जगह हरियाली देखने
चलो आज पेड लगाते है।

मानो हर एक की है जिम्मेदारी
पेडों को जीवनदान देना यही है समझदारी
बाढ़ हो या प्रदुषण, पेड हमको बचाते है
चलो आज मिलकर पेड लगाते है।

गंगा माँ भी है परेशान
खुला गगन खो चुको है प्रदुषण से अपनी शान
प्रकृती का स्वास्थ्य अभी बचाते है।
चलो आज पेड लगाते है।

पैसो का लालच, काट डाला
पहाडी पेडों का गेहना
लाल तडपता सूरज दे चुका है
ग्लोबल वार्मिंग की सूचना
बिखरे पहाडों को फिरसे सजाते है
आओ चलो मीलकर पेड लगाते है॥
आओ चलो मीलकर पेड लगाते है॥

दिपाली तलवलीकर

CID-124889721

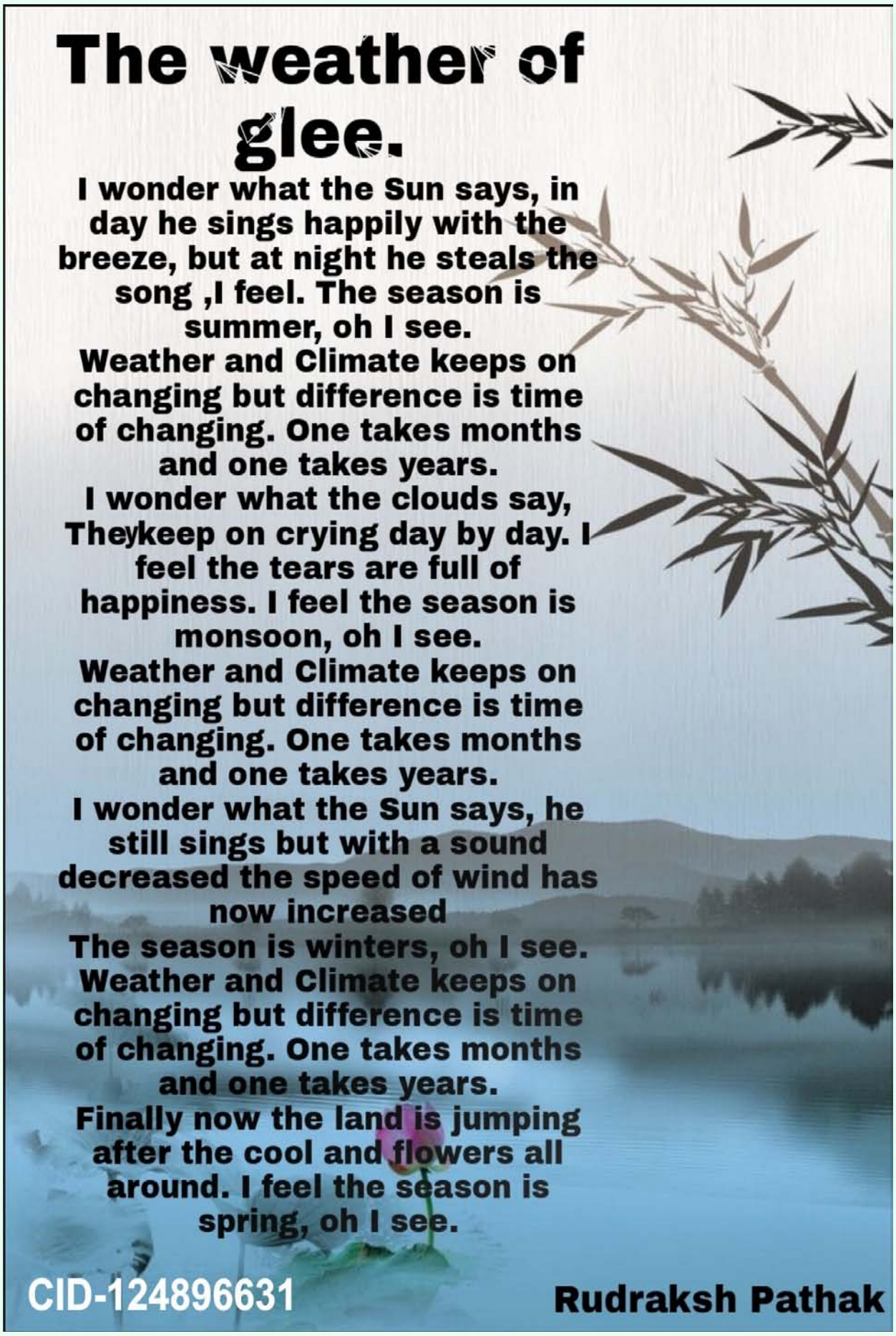
The weather of glee.
I wonder what the Sun says, in day he sings happily with the breeze, but at night he steals the song ,I feel. The season is summer, oh I see.
Weather and Climate keeps on changing but difference is time of changing. One takes months and one takes years.
I wonder what the clouds say, Theykeep on crying day by day. I feel the tears are full of happiness. I feel the season is monsoon, oh I see.
Weather and Climate keeps on changing but difference is time of changing. One takes months and one takes years.
I wonder what the Sun says, he still sings but with a sound decreased the speed of wind has now increased
The season is winters, oh I see.
Weather and Climate keeps on changing but difference is time of changing. One takes months and one takes years.
Finally now the land is jumping after the cool and flowers all around. I feel the season is spring, oh I see.
CID-124896631
Rudraksh Pathak

Four Seasons

Spring

The fields are rich with daffodils,
A coat of clover cloaks the hills,
And I must dance, and I must sing
To see the beauty of the spring.

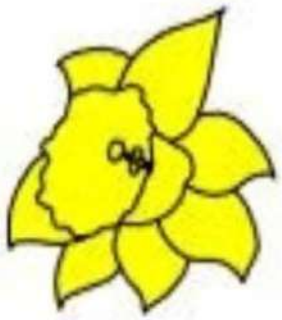

Summer

The earth is warm, the sun's ablaze,
It is a time of carefree days;
And bees abuzz that chance to pass
May see me snoozing in the grass.

Fall

The leaves are yellow, red, and brown,
A shower sprinkles softly down;
The air is fragrant, crisp, and cool,
And once again I'm stuck in school.

Winter

The birds are gone, the world is white,
The winds are wild, they chill and bite;
The ground is thick with slush and sleet,
And I can barely feel my feet.

The last is done, the next is here,
The same as it is every year;
Spring -- then sunshine – autumn -- snow
That is how each year must go.

CID-124896851

Me with weather and climate

Weather and climate are not the same,
However, everyone gets confused with their name,
I learnt about it in grade 7,
But am still confused about it in grade 11,

Weather means state of atmosphere at a place,
While climate means the conditions of an area over a long pace,
These two affect our lives in many ways,
But no one thinks about it anyway,

People worldwide talk about climate change,
But I feel it a little strange,
We all are responsible for this,
But for blaming each other we can't resist,

Generating power, manufacturing goods, deforestation are a just a few that have resulted to this problem,
By doing this we have banned the earth to blossom,
Let's take a pledge,
To keep the earth privileged,
With fresh air and pure water,
For the future generation that is going to be bought up

CID-124900571

The Moods of Mother Nature

The whole World is affected today
Her mood keeps changing drastically nowadays
We may see and feel it
In the form of sudden cloud bursts
Or the non-stop downpour causing floods
The droughts, the tsunamis,
The cyclones or the wildfires
Not able to keep calm, She is furious
For how we used her for our own means
Not thinking of how She feels

Though much damage done
We may still try to mend
Trying to soothe Her
By being less consuming, controlling our greed
Meanwhile, we need to be more ready
Be able to forecast her mood rightly
Let's equip ourselves to explore the hints she gives
And be ready at the same time for her wraths
We can only prepare ourselves for what is to come
As prevention is only in Her hands.

CID-124912331

आओ सारे मिलकर करें हम नये भारत का निर्माण
बापू की शान को आगे बढ़ाने,दे सब अपना बलिदान
वन संरक्षण और संवर्धन करके देश को पहनाए हरा गहना

आओ सारे मिलकर करें हम ध्वनिप्रदूषणमुक्त भारत का निर्माण
कहा मोटर का भोंपू भोंपू । कहा कबूतर का गूटरगु ।
कहा मालगाड़ी का टी टी ! कहा चिड़िया का ची ची !
ट्राफिकनियमों का करे पालन और पक्षीसंवर्धन का करे उपाय

आओ सारे मिलकर करें हम धरतीमाता का ऋण अदा
स्वच्छ घर, स्वच्छ शहर, और स्वच्छ देश का करे निर्माण
कचरे को रिसाईकल करे,देश को बनाए स्वच्छता का पर्याय ।

आओ सारे मिलकर करें हम पुनः प्राप्य ऊर्जा का संचार
ओजोनस्तर को बचाये, देश की आबादी में दे अमोल योगदान
धरती के तापमान को करने काबू करे हरा भरा देश का निर्माण ।

आओ सारे मिलकर करें हम स्वस्थ भारत का निर्माण
शुद्ध हवा और सात्विक आहार से दे देश को स्वस्थता का उपहार ।
आओ सारे मिलकर करें हम वायुप्रदूषणमुक्त देश का निर्माण
आओ सारे मिलकर करें हम नये भारत का निर्माण

-सुनिता पंड्या

CID-124912681

AN ODE TO CLIMATE ACTION

The pernicious effects of anthropogenic climate change are no longer covert,

Floods, Droughts, and Forest fires have now become rampant and overt.

Cloud to Ground lightning strikes have intensified,

Their skyrocketing frequency has left human beings petrified.

The infestations by voracious locusts and other pests,

Provide succour to the hypothesis that we have treated climate change with jest.

Global warming has ballooned wet bulb temperatures,

The excruciating combination of heat and humidity has transmuted human beings into slacken creatures.

Stubble burning during winters has intensified smog,

Downdraft based air cleaning towers can prove to be a vital cog.

Augmenting urban forest cover through techniques like Miyawaki have been mooted,

They can ameliorate the carbon dioxide emission limits that we have overshooted.

Battery and Green Hydrogen should power the car and ferry,

This will help the world make merry.

Adoption of Renewable Power would clean the air,

Operating polluting coal based thermal power plants is not fair.

It is high time that the words of the environmentalists are heard,

Or our next generations might not hear the chirp of a single bird.

Each and Every citizen needs to indulge in climate action with heart and soul,

This would surely prove to be a vital stepping stone towards achieving our nation's goal.

CID-124914151

इस प्यारी - सी धरती को क्या बना दिया है,
हरी- भरी थी जिसे रेगिस्तान बना दिया है।

मोती बिखरते थे जिन नदियों में
आज उनमे कचरो का ढेर बहा दिया है
मतलबी इंसान ने नदियों को नाला बना दिया है।

फूलो - सी महक आती थी जिन हवाओं में,
आज उनमें जहर का धुंआ मिला दिया है।
खुले आसमान में उड़ते थे जो पंछी
उनको मौत के घाट उतार दिया है।
मतलबी इंसान ने इस धरती को आग का गोला
बना दिया है

पेड़ - पौधो से सजी थी जो धरती
बिना किसी मतलब भूख मिटाती थी जो धरती
आज इंसान ने उसे हर तरफ से नोंच लिया है।
मतलबी इंसान ने आज धरती को ही मिटा दिया है।

धरती के सबसे खूखार जानवर ने
खुद को भगवान समझ लिया
जो धरती पर रहने लायक नही
उन्होंने चाँद, मंगल का सपना सजा लिया
मतलबी इंसान ने इस धरती को
नरक बना लिया है।

CID-124915281

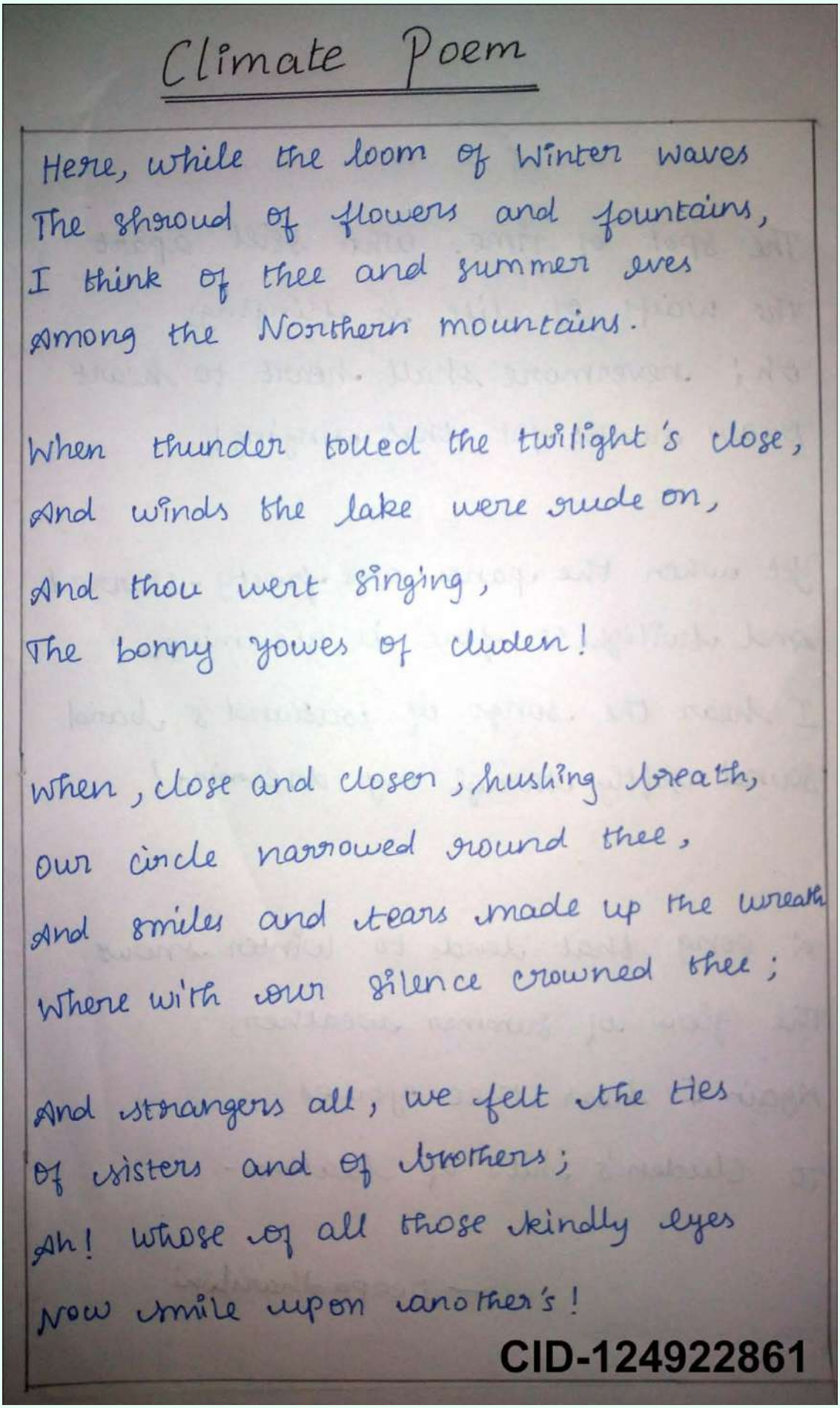

Climate Poem

Here, while the loom of Winter waves
The shroud of flowers and fountains,
I think of thee and summer lives
Among the Northern mountains.

When thunder tolled the twilight's close,
And winds the lake were rude on,
And thou went singing,
The bonny yowes of cluden!

When, close and closer, hushing breath,
Our circle narrowed round thee,
And smiles and tears made up the wreath
Where with our silence crowned thee;

And strangers all, we felt the ties
Of sisters and of brothers;
Ah! whose of all those kindly eyes
Now smile upon another's!

CID-124922861

CLIMATE CHANGE

One fine lazy morning,
I saw the red alert warning
Displayed on my tv screen,
And in my home, this created a scene!
The warning was all about a cyclone,
All got tensed, normal was I alone!
So, I got up and asked the reason of this tension,
That was when I got the total attention!
The repeated occurring cyclones are reason of this stress,
And when cyclones come, they end up in a mess.
Loss of property and loss of lives,
Happiness is vanished, and all-around sound of cries.
The reason of these cyclones is climate change,
And the changes in atmosphere occur without any range!
This climate change causes change in pattern of rainfall,
For the life on earth, this is an alarming call.
Few centuries back the climate change was normal,
But after 1800's the pollution has made it abnormal.
Burning of fossil fuels like oils, coal and gas,
Make environment dirty and produce heat trapping gas!
This climate change also includes global warming,
Which refers to earth's rising surface temperature, that's a warning.
This global warming is caused by excess of pollution,
And it has caused a major weather revolution.
Glaciers are melting, sea levels are rising, making air unclean,
Creatures on earth losing life, letting death win
These are the effects of global warming, but it's not their fault
It was all started by us, and they are finishing it in short!
So, if you want to be alive and not be dead,
Then learn from this lesson, explained to me by my dad,
Do maximum use of public vehicles, do walk or cycle for short distances,
And always follow ways which cause minimum pollution,
This should be always followed and not for few instances,
Here I end after giving you solution!!

By:Nihari Sanjay Pandya(7016900205)

CID-124924451

MOTHER EARTH- WE CARE

Earth, our Mother, must feel very sad,
The way we humans treat her is really bad.
We cut down her trees, destroy her greenery,
Of the laws of Nature, we make a mockery.

We burn her fossil fuels, we pollute her air,
We dump wastes in her waters, we just don't care,
We bring about heat waves and global warming,
The effects of which are quite alarming.

The glaciers are melting, and sea levels rising,
The marine life, we are carelessly sacrificing,
Cyclones and tropical storms were earlier rare,
Now, quite often, we have to suffer and bear.

Today we are facing harsh climate changes,
From droughts to floods and forest fires, it ranges,
It's time for the World to stand up as one,
As Life, other than on Mother Earth, there is none.

Stop cutting trees, stop using plastics,
It's time now to follow eco-friendly tactics,
Stop spreading toxic wastes, both in water and air,
Lest, life on Earth, becomes an entity rare.

-Shivapriya Ghosh
Class 2,
Shri Shikshayatan School,
Kolkata.

CID-124925121

खत्म हुआ अब पानी बादल चला गया है,

पेड़ कटे जो साथ में हरियाली धरा छोड़ भगा है।

रूप लिये मां सीता की बरखा भी चली गई,

जैसे रावण दानव प्रदूषण लेकर इनको भाग गया है।

धरती की जलती है छाती, तेरे पांव में,

दुर्गति कर दिया है तूने, आदमी अपने दांव में।

विकसित करके पाऊंगा मैं खुशहाली कहकर,

पाला है, तूने अपना सुख कचरा के छाव में।

जल गई है मां की साड़ी बचपन ने पाया साया, जिसके ममता के आंचल में।

बार-बार बेवजह आया जल-जीवन को जैसे ना को,

जैसे न हो जरूरत आगे जन-जीवन को,

पत्थर हो गई अब धरती, रास्ते भी कठुराए,

ठहर न सके कुआं, ताल में अब गड्ढे भी ठुकरा गए।

भर ले प्राण घड़े में पानी, दे जीवन भावी पीढ़ी को।

पौधे पेड़ कटे जो बदले, घर तेरे महल में,

जिंदगी नहीं मिलती बनने के इस गलत पहल में।

सांस लेने को नहीं चाहिए, पैसे तेरे नोट हरे, जो

संत वृक्ष है देता, वायु प्राण बसा तेरे तन में।

हे मानुष लगा दे पौधे मिलकर जग के हर एक कर से।

कब सुधरेगा तू आदमी, तब सुधरेगा तू।

CID-124943801

MONU KUMAR
CLASS-X
ST. ANTONY'S SCHOOL KHORA

126/2011

Page No.
Date

(विचित्र - प्रकृति)

जब देखता हूँ कोई चित्र,
तो लगता है विचित्र,
अब पहले जैसी सुंदरता प्राकृतिक में ना रही है,
क्योंकि मनुष्य के द्वारा हर पल वह दूषित हो रही है।
है! मानव ज़रा उस परमात्मा से तो डर,
जिसके सामने तू खड़ा है, स्थिर निडर ॥

जब देखता हूँ कोई चित्र,
तो लगता है विचित्र,
चिड़ियों की चहचहाहट और नदियों की गड़गड़ाहट,
इसके उपरांत तू कभी न सुन पाएगा,
अगर इसी तरह तू इस माँ को दूषित कर हानि पहुंचाएगा।
है! मानव (मानुष) तुने यह क्या गलत प्रण ले लिया,
अपने स्वार्थ के हेतु भूमि का विनाश ही कर दिया ॥

जब देखता हूँ कोई चित्र,
तो लगता है विचित्र,
आशा है, है! ज्ञानी मनुष्य तुझ पर,
जिसका काबू है पूरे धरती और नभ स्तर पर।
कामना है कि फिर इस धरती माँ का सौंदर्य तू इन्हे लौटाएगा,
प्रत्येक वृक्ष, जीव आदि को हर्षित पहुंचाएगा,
प्रण कर है! मनुष्य स्वयं से अभी, कि इस धरा को फिर से,
(आज) (स्वर्ग सा सुंदर बनाएगा) ॥

जब देखता हूँ कोई चित्र।
तो लगता है विचित्र ॥

— [Monu Kumar (मोनू कुमार)
X class
(A)]

CID-124945061

Mother Nature

Our mother nature,
Helps every living creature.

We are her daughter and sons,
On her wish our life runs.

She gives us waters,
And mud to our friend potters.

She gives what we eat,
And soil to our feet.

She gives us oxygen for free,
And carbon dioxide to our brother plant and trees.

And in return we are cheating,
Killing our brother and deforesting.

Polluting water and air,
Is not fair.

And polluting land,
Should be banned.

This would be our last chance,
We should check ourselve once.

Arent we behaving selfish and rude?
Destroying our mother, is it good?

By Meghneel Dhar

CID-124946041

Weather Change Of Four Seasons

Spring :-

The fields are rich with daffodils,
A coat of clover cloaks the hills,
And I must dance, and I must sing
To see the beauty of the spring.

Summer :-

The earth is warm, the sun's ablaze,
It is a time of carefree days;
And bees about to abuzz that chance to pass
May see me snoozing in the grass.

Autumn :-

The leaves are yellow, red, and brown,
A shower sprinkles softly down;
The air is fragrant, crisp, and cool,
and once again I'm stuck in school.

CID-124946201

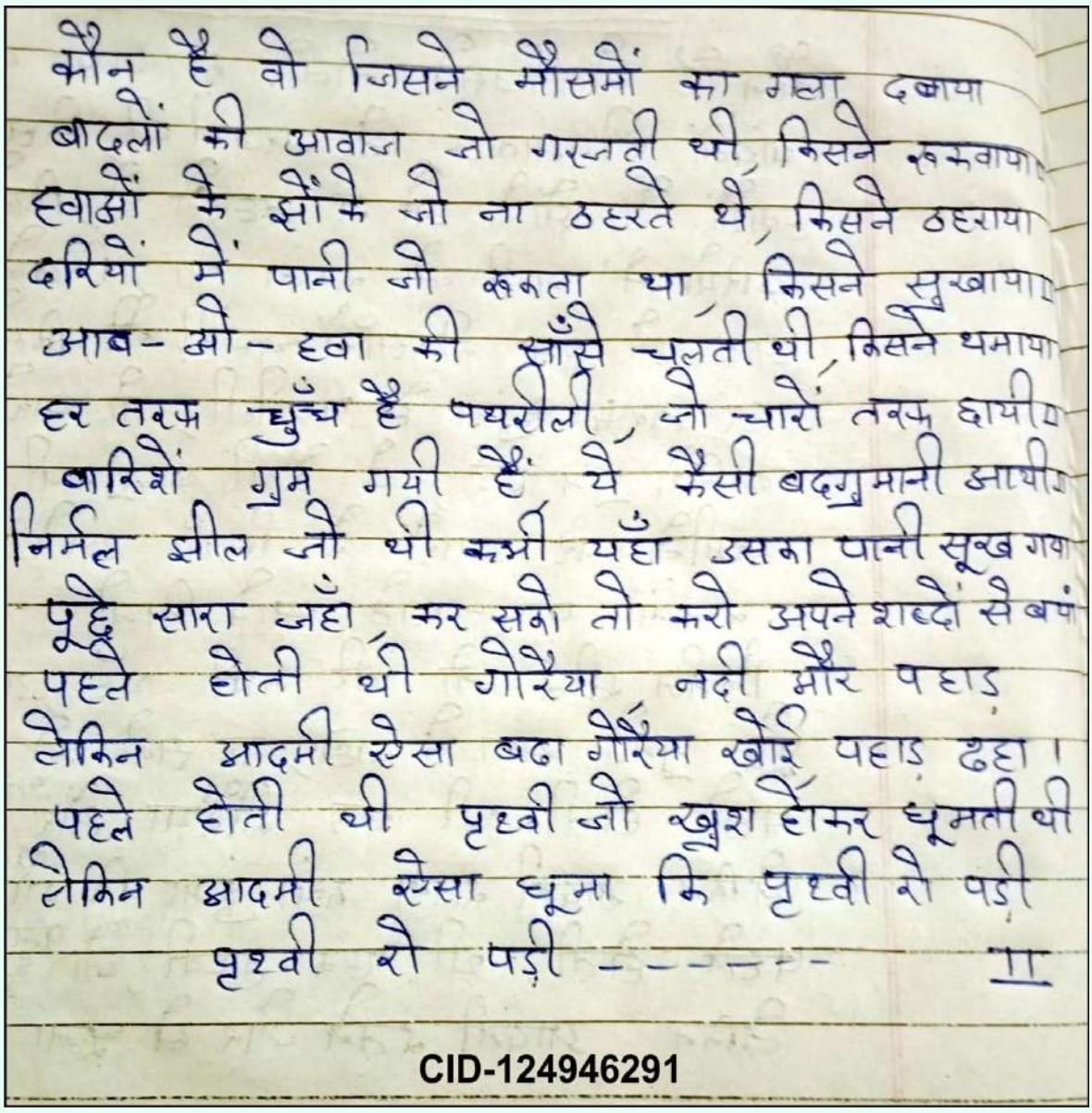

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कौन है वो जिसने मौसमों का गला दबाया
बादलों की आवाज़ जो गरजती थी, किसने रुकवाया।
हवाओं के झोंके जो ना ठहरते थे, किसने ठहराया
दरियों में पानी जो रुकता था, किसने सुखाया।
आब-ओ-हवा की साँसे चलती थी, किसने थमाया
हर तरफ धुँध है पथरीली, जो चारों तरफ छायी।
बारिशें गुम गयी हैं ये कैसी बदगुमानी आयी।
निर्मल झील जो थी कभी यहाँ उसका पानी सूख गया
पूछे सारा जहाँ कर सके तो करो अपने शब्दों से बयां
पहले होती थी गौरैया नदी और पहाड़
लेकिन आदमी ऐसा बढ़ा गौरैया खोई पहाड़ ढहा।
पहले होती थी पृथ्वी जो खुश होकर घूमती थी
लेकिन आदमी ऐसा घूमा कि पृथ्वी रो पड़ी
पृथ्वी रो पड़ी ------ ॥

CID-124946291

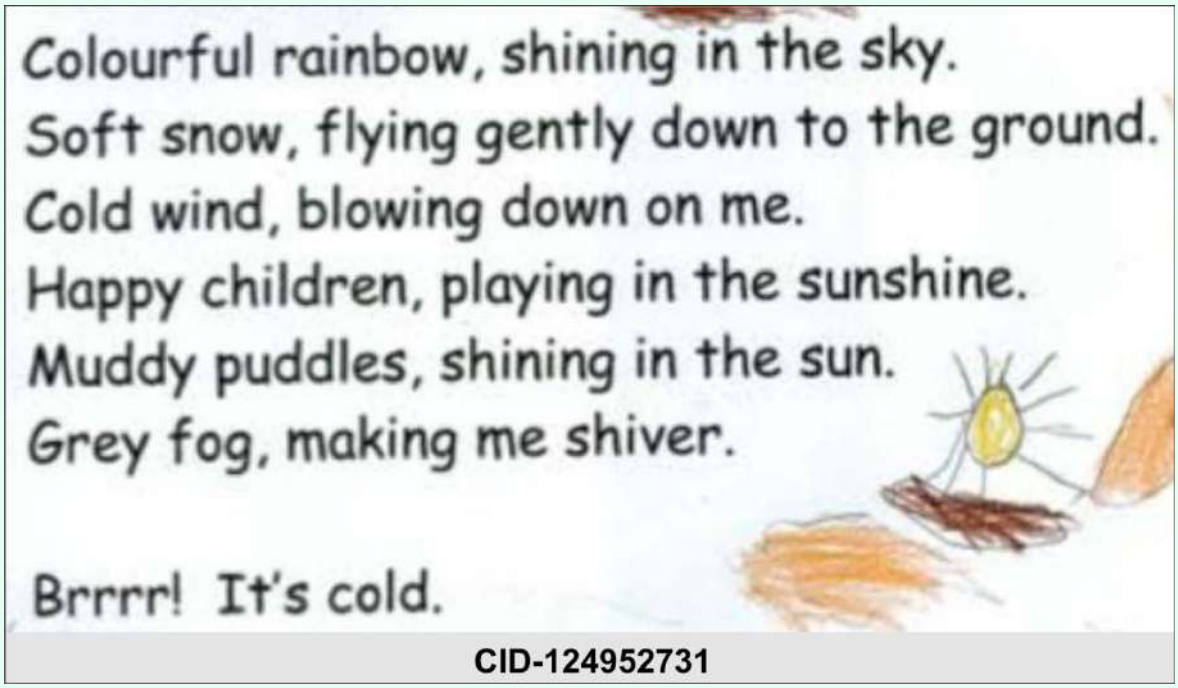

Colourful rainbow, shining in the sky.
Soft snow, flying gently down to the ground.
Cold wind, blowing down on me.
Happy children, playing in the sunshine.
Muddy puddles, shining in the sun.
Grey fog, making me shiver.

Brrrr! It's cold.

CID-124952731

WAKING UP TO A DAY

It aches in my heart,
To see the land,scarred by who once played on it.

Our earth is an ailing planet,healing from the deserted lands and heartbreaks,
My earth is suffocating,crying for help.

I wake up to look at a life,
Where,the skies are no more clear,
Each grain of sand,is hurling with fear,
I fear waking up to a day,where my Mother Earth is no more dear.

Air,water,soil nothing's safe from pollution,
Endangering the soul of life,how great is this population?

Fallen trees,forest fires,burnt up lives,smoke running wild and free,
The day every tree will die,will be the moment every man will die,not just me.

I walk through oceans,where tides rise with nothing but grief,
Where the water meets the sand only to weep,
Where the skies and stars are scared to show,
Where the trees and flowers choose to wither and not to grow.
This wasn't the world,when I was a kid,long,long ago.

I,want the winters,summers and monsoons to come on time,
wish to see from the old woman,a hopeful smile,
I,hope for a day,where monsoon bursts and children pile and play.

And with this I pray,
Save her to save us.Let's open our eyes,we owe her everything we own.

CID-124952751

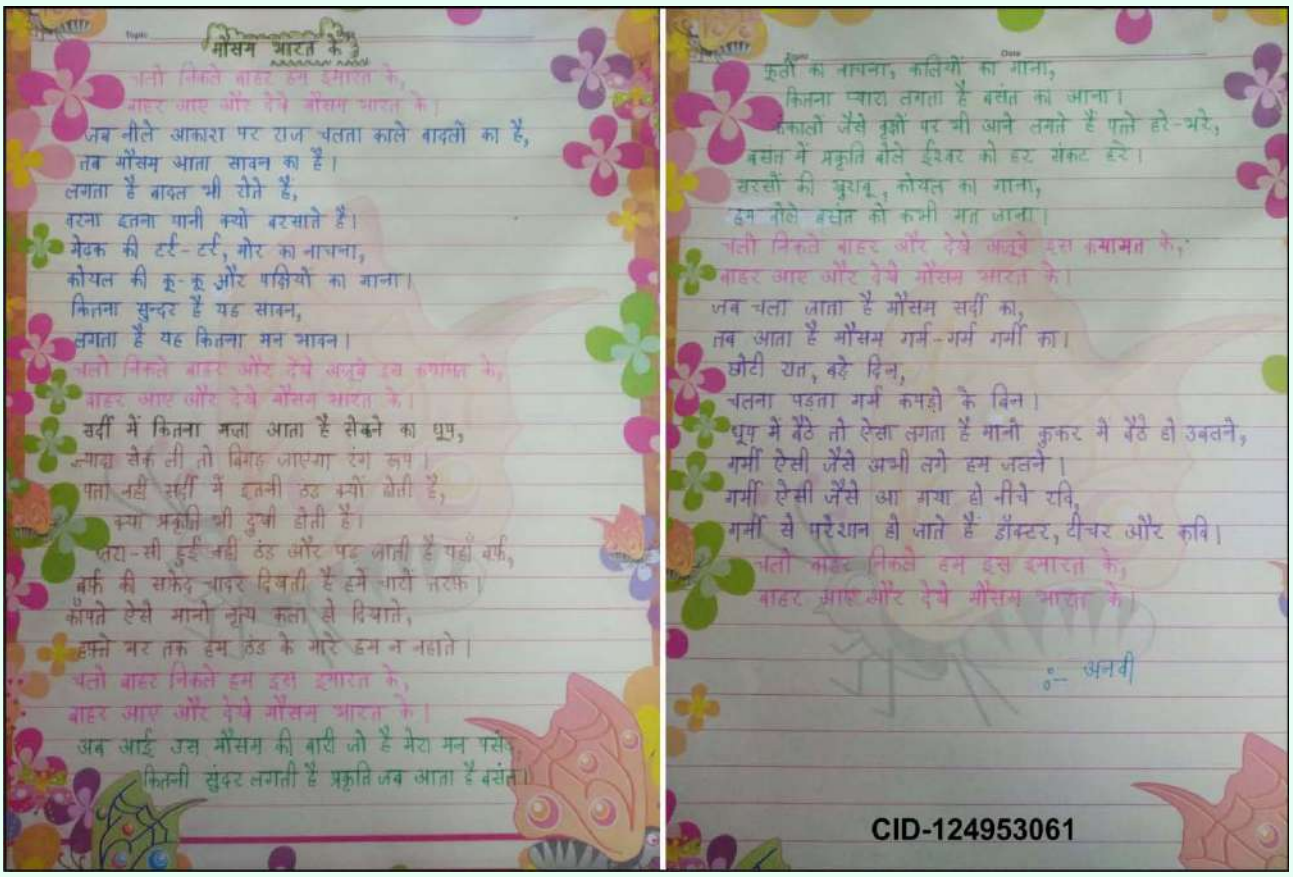

मौसम भारत के

चलो निकले बाहर हम इमारत के,
बाहर आए और देखे मौसम भारत के।
जब नीले आकाश पर राज चलता काले बादलों का है,
तब मौसम आता सावन का है।
लगता है बादल भी रोते हैं,
वरना इतना पानी क्यों बरसाते हैं।
मेढक की टर्र-टर्र, मोर का नाचना,
कोयल की कू-कू और पक्षियों का गाना।
कितना सुन्दर है यह सावन,
लगता है यह कितना मन भावन।
चलो निकले बाहर और देखे अद्भुत इस कायनात के,
बाहर आए और देखे मौसम भारत के।
सर्दी में कितना मजा आता है सेकने का धूप,
ज्यादा सेक ली तो बिगड़ जाएगा रंग रूप।
पता नहीं सर्दी में इतनी ठंड क्यों होती है,
क्या प्रकृति भी दुखी होती है।
जरा-सी हुई नहीं ठंड और पड़ जाती है वहाँ बर्फ,
बर्फ की सफेद चादर दिखती है हमें चारों तरफ।
काँपते ऐसे मानो नृत्य कला ही दिखाते,
हफ्ते भर तक हम ठंड के मारे हम न नहाते।
चलो बाहर निकले हम इस इमारत के,
बाहर आए और देखे मौसम भारत के।
अब आई उस मौसम की बारी जो है मेरा मन पसंद,
कितनी सुंदर लगती है प्रकृति जब आता है बसंत।

फूलों का नाचना, कलियों का गाना,
कितना प्यारा लगता है बसंत का आना।
पेड़ों जैसे वृक्षों पर भी आने लगते हैं पत्ते हरे-भरे,
बसंत में प्रकृति बोले ईश्वर को हर संकट हरे।
सरसों की खुशबू, कोयल का गाना,
हम तोहे बसंत को कभी मत जाना।
चलो निकले बाहर और देखे अद्भुत इस कायनात के,
बाहर आए और देखे मौसम भारत के।
जब चला जाता है मौसम सर्दी का,
तब आता है मौसम गर्म-गर्म गर्मी का।
छोटी रात, बड़े दिन,
चलना पड़ता गर्म कपड़ो के बिन।
धूप में बैठे तो ऐसा लगता है मानो कूकर में बैठे हो उबलने,
गर्मी ऐसी जैसे अभी लगे हम जलने।
गर्मी ऐसी जैसे आ गया हो नीचे रवि,
गर्मी से परेशान हो जाते हैं डॉक्टर, टीचर और कवि।
चलो बाहर निकले हम इस इमारत के,
बाहर आए और देखे मौसम भारत के।

:- अनवी

CID-124953061

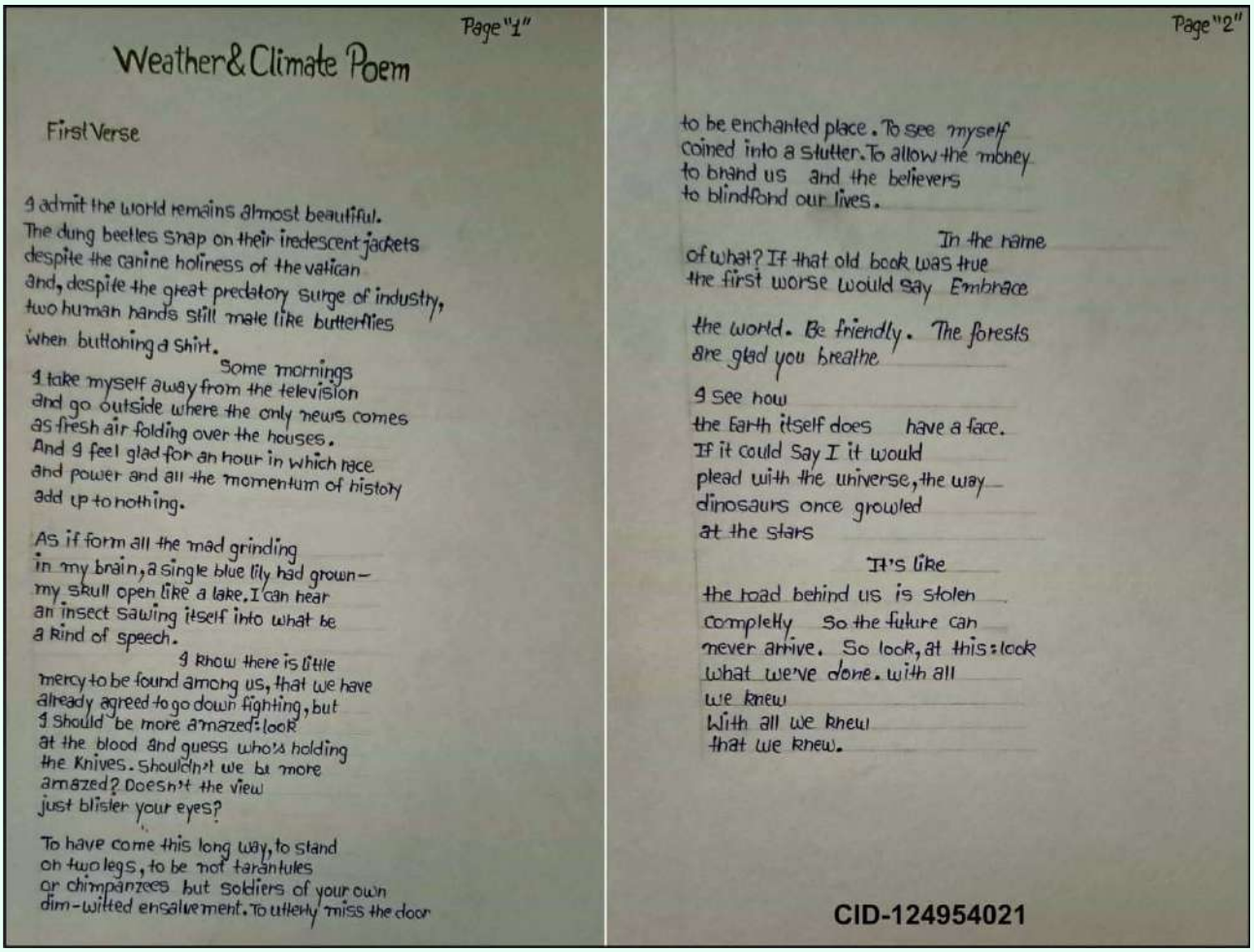

Page "1"

Weather & Climate Poem

First Verse

I admit the world remains almost beautiful.
The dung beetles snap on their iredescent jackets
despite the canine holiness of the vatican
and, despite the great predatory surge of industry,
two human hands still mate like butterflies
when buttoning a shirt.
Some mornings
I take myself away from the television
and go outside where the only news comes
as fresh air folding over the houses.
And I feel glad for an hour in which race
and power and all the momentum of history
add up to nothing.

As if form all the mad grinding
in my brain, a single blue lily had grown—
my skull open like a lake. I can hear
an insect sawing itself into what be
a kind of speech.
I know there is little
mercy to be found among us, that we have
already agreed to go down fighting, but
I should be more amazed: look
at the blood and guess who's holding
the knives. Shouldn't we be more
amazed? Doesn't the view
just blister your eyes?

To have come this long way, to stand
on two legs, to be not tarantules
or chimpanzees but soldiers of your own
dim-witted ensalvement. To utterly miss the door

Page "2"

to be enchanted place. To see myself
coined into a stutter. To allow the money
to brand us and the believers
to blindfold our lives.

In the name
of what? If that old book was true
the first worse would say Embrace

the world. Be friendly. The forests
are glad you breathe

I see how
the Earth itself does have a face.
If it could say I it would
plead with the universe, the way
dinosaurs once growled
at the stars

It's like
the road behind us is stolen
completly So the future can
never arrive. So look, at this: look
what we've done. with all
we knew
With all we knew
that we knew.

CID-124954021

Poem

Weather and Climate

Weather and Climate are two faces of a coin
if they are good it's fine
everything on the earth will shine
otherwise only strain and strain

good weather helps crops to grow
makes farmer's face glow
bad weather makes every growth slow
resulting GDP of India a big blow

a weather forecast by IMD
makes everyone ever ready
to meet calamities which are bloody
offering citizens all goody

CID-124959101

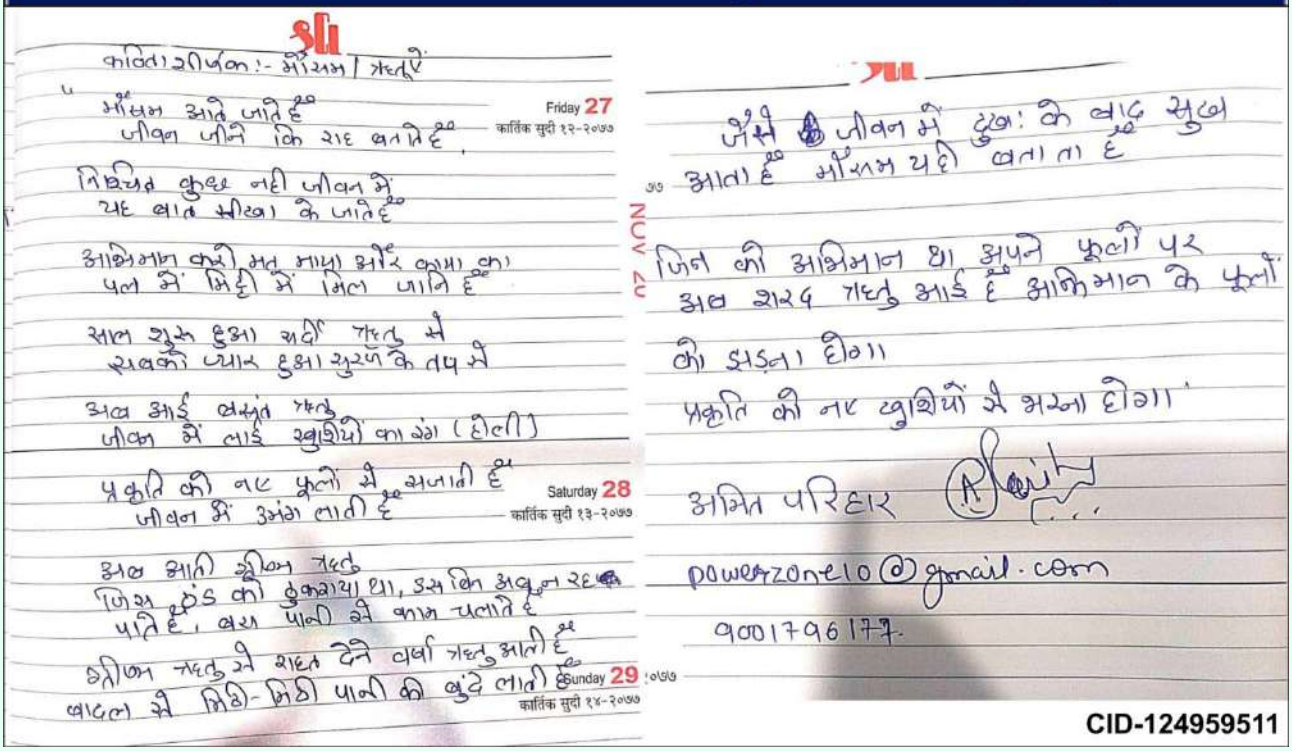

मौसम एवं जलवायु

कविता लेखन प्रतियोगिता

एक थी चिड़िया बड़ी निराली,
थोड़ी नटखट और मतवाली ।
सीमाहीन नभ क्षितिज मिलन की,
उसने पंखों की होड़ थी ठानी ।

बीच उड़ान में गिर पड़ी वह,
अधमरी सी होकर जमीन पर ।
पूछा मां ने गिरने का कारण,
कहा वजह है - जलवायु परिवर्तन ।

नभ क्षितिज मिलन की होड़ जीतने,
खोले जब सतरंगी पंख ,
धूएं धूल की भरी गुबार ने,
कर दी नभ की राहें तंग ।

हार न चिड़िया ने मानी थी,
उठकर उड़ने की ठानी थी ।
किंतु पुनः मुंह की गिरी वह,
क्योंकि मौसम ने बदली रवानी थी ।

शीतल से गर्म हुआ अब मौसम,
तपता सूरज, तपती धरती, तपते पंछी, तपता जीवन,
होड़ में आगे बढ़े पंछी भी गिरे,
और जलवायु परिवर्तन ने छीनी नभ से उनकी मिलन ।

CID-124960871

My poems are not guilty

On paper, the latitude of this poem sits in rough notebooks and geography chapters,

Slipping onto cold minds,

Struggling to make a move, on world map.

In practice, the world is now a shade card of red,

And in no time, it will be brown or maybe white,

Where we all will be on the verge to be numb like extinct species.

"What goes around comes around" whispers in morse code another poem on a significant day,

To slip into our minds,

But I fear what if they slip like glaciers?

Because, we chop the eco- friendly quotes the very next day while throwing plastic bottles on the railway station and burning numerous firecrackers on Diwali nights,

But I fear what if we resemble embers of firecrackers, burning from within, returning to ashes?

The axis of the words is forgotten in no time,

So, I write active poems to alarm you,

And this time, my poetic devices are not guilty to be renewable, time and again, to sink into your mind.

This time, my poems have become a sanctuary so as to preserve the terminology of the rare, living ones,

Still, the numbers are less, of living poems (leading to action) and species,

How I wish my poems don't become a non- living museum to hold onto beautiful earth like history, a history overshadowed by a new model of our home on science exhibition day.

How I wish!

CID-124960901

Assault of Nature

Weather is changing
Time is Passing
Days are becoming hotter
The reason is global warming
Years have Passed, and will
keep on passing if we do
not change our attitude
towards global warming

This is our fault
We will have to be taught
Mother Earth will despise
We, will face an assault

Glaciers will melt
Water will fall
We will have to change
otherwise we will face an assault

CID-124961801 Avni Agarwal

THE EARTH- OUR ONLY HOME

Thank you mother earth for this beautiful world,

Smiling daffodils blue ocean;

Monsoon rainfall bright sunlight,

Splendid greeneries keep us alive.

You have given ample for our need,

We are ungrateful – we have endless greed.

Cutting down trees and polluting nature,

We are welcoming a dark future.

This is the high time to take an oath together-

No resource wastage, littering nowhere.

Let's plant million trees, make it green-

Don't forget we are warned by global warming.

Glacier provides water pure and fresh,

Don't melt them by burning massive fuel.

We can stop climate change to protect our earth,

This is our only home- God created with love.

CID-124962021

PLASTIC

(Am I responsible for the weather and climate change?)

I was born beautiful!

I decorated all your homes!

I cut down on huge expenses!

I try my best to save the resources!

I am the protector of food by taking the role of barn!

I will always be a womb for your belongings!

Why, I even use artificial skin to protect the corpse!

Even so! Why are you throwing me out and making me a monster?

I do not want to live like a turtle!

I wish to live like a moth! Like an insect! Like a bird! Enough to live like you!

I pray to the Creator! If you consider me the modern Narakasura! My death! To be held in the hands of those who created me!

Because, I too love Nature!

PLASTIC RECYCLING

-P.SUNDARA MURTHY

PGT COMMERCE,

KENDRIYA VIDYALAYA GANDHIGRAM (DINDIGUL)

GRI POST, CHINALAPPATTI, DINDIGUL, TAMIL NADU, INDIA

PINCODE: 624 302

sundaramurthypsm@gmail.com

98439 01333; 80119 65321

CID-124962411

Garmi

Garmi ka mausam hai ayaa.

Isne hme bhut sataya.

Aasman ne hai aag barsaya.

Suraj ne maya barsaya.

Aesi cooler pakhe roj chalaye.

Fir bhi na thand mil paye.

Lekin ek fayda bhi ho paye.

Aam tar buja roj khilaye.

Aao hum per legaye.

Aam tar buja roj khaye.

Chalo per badhaye.

Mausam ko bachaye

CID-124962891 Lakshmi Mishra

Weather & climate poem competition

Hindi Kavita

जलवायु परिवर्तन का परिणाम है, सूखा और बाढ़।
सूखा पड़ जाने पर हो जाता है जीवन बदहाल॥
वृक्ष और जीव जन्तु हो जाते है, बेहाल।
और अगर आ जाये बाढ़ तो पड़ जाता है हाहाकार॥
आज भी हमारे किसान है वर्षा पर निर्भर।
सही समय वर्षा से मिलता है खेती को जीवन॥
जलवायु परिवर्तन है हमारे कर्मो का ही फल।
पेड़ो को काटकर बनाते जा रहे हम घर॥
कैसे भूल गये हम केदारनाथ की वो आपदा।
प्रकृति के क्रोधित होने की वो व्यथा॥
न भूलो जब प्रकृति क्रोधित होती है।
जितना देती है उससे ज्यादा ले लेती है॥
जीवन को दुख से भर देती है।
अपनो को अपनो से दूर कर देती है॥
पर्यावरण को बचाना है तो करलो ये काम।
प्रकृति की रक्षा में दो अपना योगदान॥
पेड़ो को बचाने के लिए लगा दो जी जान।
प्रदूषण को खत्म करने का करो बस काम॥

CID-124962951

जब पत्तों पर ओस दिखे कोहरा कोहरा हर ओर दिखे
तो शरद ऋतु आ जाती है।
जब पेड़ो के पत्ते जल जाए,दिन रात चैन न आए।।
तो ग्रीष्म ऋतु आ जाती है
जब हरियाली चहुं ओर दिखे,बारिश बारिश हर ओर
दिखे, तो सावन ऋतु आ जाती है।।
जब पेड़ अपने पत्ते गिराए,झर झर चले हवाएं
तो पतझड़ ऋतु आ जाती है।
जब नए पेड़ पौधे नजर आए,हर ओर फसलें
लहलहाए, तो बसंत ऋतु आ जाती है।
मौसम के प्रकार कई,तभी तो बदले जल्दी जल्दी,
पर जलवायु का तो रूप एक ही,तभी तो बदले सालों
में।।
मौसम का तो ज्ञान सभी को
पर जलवायु का ध्यान नहीं।।
मौसम बदलता हम सबको।
और इंसान बदलते जलवायु को।।
मिलकर अब जागरूकता फैलाना है।
जलवायु को प्रदूषण से बचाना है।।

CID-124963021

ऋतु-समृद्ध विस्तृत भारत में, विविध मौसम की खिलती छटा,
तपती धूप, ठंड बर्फीली, और कभी घनघोर घटा।

उत्तर में विराट हिमालय डटा रहा, बीता अर्सा,
मानसून की नमी रोककर, करवाता शीतल वर्षा।

दक्षिण की पावन नदियाँ हो जाती जब जल से रिक्त,
'लौटता मानसून' वर्षा करवाकर करता उनको पुनः सिक्त।

बंगाल की खाड़ी में जब तापमान बढ़ जाता है,
पारा गिरता, प्रेशर घट चक्रवाती माहौल बनाता है।

घिरती तब घनघोर घटा तूफाँ तट से टकराता है,
तटवर्ती भारत के लिए समय संकट का आता है।

चाहे वह हो अरब सागर, अथवा बंगाल की खाड़ी हो,
चक्रवात हो, आँधी हो या वृष्टि प्रलयंकारी हो।

पूर्व-सूचना द्वारा जो तैयारी सुगम कराता है,
विविध यत्न कर के जो भविष्य का सटीक अनुमान बताता है,

भारत का मौसम विभाग वह, लाखों जान बचाता है।

CID-124963091

In the middle of summer, i hear a slight mummer
Then comes a few droplets bringing a thunder
The sky goes dark with the coconut trees sway with the breeze.

Dogs run for shelter while people with umbrellas pass by
My heartbeat picks up when the showers increase,
A long and strong thunder rumbles from the dragon living high up in the clouds.

The gutters will be clogged by morning, ponds and rivers filled, the clothes left to dry soaked again.
And despite the loud drumming in my chest, sounding just like the thunder, i take a step forward.
And smile when the rain comforts my face.

CID-124963431

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
कैसा ये दुर्दिन दिखाया रे मानव अजब तेरी माया
गर्मी में ठण्ड से सबको कंपाया अजब तेरी माया
सर्दी में पसीने से लथपथ कराया अजब तेरी माया
एक ऋतू में दूजे का दर्शन कराया अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
धरती पर कैसा अनोखा मौसम ये बनाया अजब तेरी माया
एक ही समय में दो-दो ऋतुओं को लाया अजब तेरी माया
ऊपर बैठे परमेश्वर का सिर भी चकराया अजब तेरी माया
ऋतूओं की दुविधा उनकी भी समझ ना आया अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
कालचक्र को मानव तूने कैसा घुमाया अजब तेरी माया
स्वर्ग सी धरा को नरक द्वार तक लाया अजब तेरी माया
निज स्वार्थ पूर्ति में पृथ्वी हित को भुलाया अजब तेरी माया
ऋतुओं में कैसा उलटफेर मचाया रे मानव अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
आधुनिकता के नाम पर कैसा उधम मचाया अजब तेरी माया

(i)

विकास-रथ के पहिये से प्रकृति को धुल में मिलाया अजब तेरी माया
प्रकृति से अमृत ले उसको बदले में विष पिलाया अजब तेरी माया
जल, थल , वायु के प्रदुषण को चरम पर पहुँचाया अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
विज्ञानं की शक्ति पर इतना इतराया अजब तेरी माया
बिन सोचे-समझे प्रकृति से जा टकराया अजब तेरी माया
संसाधन असीमित नहीं सीमित है ये तेरी समझ क्यूँ ना आया
दोहन के लालच पर नियंत्रण ना पाया अजब तेरी माया

अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया
संभल जा! अब भी समय है वरना पीढ़ी दर पीढ़ी पछताएगा
खुद का बोया बबूल कितनी पीढ़ी तक कटवायेगा
पृथ्वी जब लेगी प्रतिशोध तू बस हाथ मलते रह जायेगा
एक क्षण में तेरा नामोनिशान धरती से मिट जायेगा

विज्ञानं की शक्ति से भी खुद को ना बचा पायेगा
जो कुछ है बनाया पल भर में बिखर जायेगा

(ii)

पृथ्वी से जो तूने लिया वापस पृथ्वी में मिल जायेगा
तेरी करनी का फल ना जाने किस पीढ़ी तक भोगा जायेगा
संभल जा! अब भी समय है वरना पीढ़ी दर पीढ़ी पछताएगा

जब-जब प्रकृति ने अपना रौद्र-रूप धर तांडव है मचाया
जलप्रलय, लू और शीत लहर से कोहराम है मचाया
निर्बल,लाचार,असहाय,बिखरा हुआ तूने खुद को है पाया
बार-बार की भूल से अब तक कुछ सीख ना पाया
मिथ्या अहंकार में क्यूँ पृथ्वी से टकराया
अजब तेरी माया हे मानव अजब तेरी माया

कहते हैं ये जननी है, एक सीमा तक सब सह जाएगी
यदि सीमा का किया उलंघन तो कैसे तुझे बचाएगी
सब आज करते है प्रतिज्ञा , पृथ्वी को फिर से स्वर्ग बनायेंगे
अब तक जो बिगाड़ा है पृथ्वी का फिर से पहले जैसा बनायेंगे
प्रदुषण रोकने के हर संभव उपाय को तन मन से अपनाएंगे
पृथ्वी के हर कोने को फिर से पहले जैसा हरा भरा बनायेंगे
हम एक कदम यदि प्रकृति निर्माण में आगे बढ़ाएंगे
प्रकृति भी दो कदम आगे बढ़कर हमे गले लगाएगी
सब कुछ फिर से पहले जैसा हो जायेगा
ऋतुओं का मेला फिर से बारी बारी ही आएगा
गर्मी पसीने से और वर्षा बारिश से सबको भिगाएगी

(iii)

धरती को अपने वास्तविक रंग में देख ईश्वर भी मुस्कुराएँगे
सब मिल फिर से धरती को स्वर्ग बनायेंगे और खुशियों का फूल खिलाएंगे

जय हिन्द-उतिष्ठ भारत
अवधेश कुमार(23-11-2021)
शिवाय अपार्टमेंट, २०२, ३ रा तल,ब्लाक सी-१०
विपिन गार्डन,द्वारका मोड़,नई दिल्ली-११००५९
मोबाइल-९५९९९८११८३
ईमेल-awadhesh.kumar@ncrb.gov.in

CID-124963781

(iv)

October month weather and climate

O suns and skies and clouds of June,
And flowers of June together,
Ye cannot rival for one hour
October's bright blue weather;

When loud the bumblebee makes haste,
Belated, thriftless vagrant,
And goldenrod is dying fast,
And lanes with grapes are fragrant;
When gentians roll their fingers tight
To save them for the morning,
And chestnuts fall from satin burrs
Without a sound of warning;

When on the ground red apples lie
In piles like jewels shining,
And redder still on old stone walls
Are leaves of woodbine twining;
When all the lovely wayside things
Their white-winged seeds are sowing,
And in the fields still green and fair,
Late aftermaths are growing;

When springs run low, and on the brooks,
In idle golden freighting,
Bright leaves sink noiseless in the hush
Of woods, for winter waiting;

When comrades seek sweet country haunts,
By twos and twos together,
And count like misers, hour by hour,
October's bright blue weather.

O sun and skies and flowers of June,
Count all your boasts together,
Love loveth best of all the year
October's bright blue weather.

CID-124783231

October month weather and climate

O suns and skies and clouds of June,
And flowers of June together,
Ye cannot rival for one hour
October's bright blue weather;

When loud the bumblebee makes haste,
Belated, thriftless vagrant,
And goldenrod is dying fast,
And lanes with grapes are fragrant;
When gentians roll their fingers tight
To save them for the morning,
And chestnuts fall from satin burrs
Without a sound of warning;

When on the ground red apples lie
In piles like jewels shining,
And redder still on old stone walls
Are leaves of woodbine twining;
When all the lovely wayside things
Their white-winged seeds are sowing,
And in the fields still green and fair,
Late aftermaths are growing;

When springs run low, and on the brooks,
In idle golden freighting,
Bright leaves sink noiseless in the hush
Of woods, for winter waiting;

When comrades seek sweet country haunts,
By twos and twos together,
And count like misers, hour by hour,
October's bright blue weather.

O sun and skies and flowers of June,
Count all your boasts together,
Love loveth best of all the year
October's bright blue weather.

CID-124783221

मौसम का अनुमान

धरती का बढ़ रहा तापमान,
मौसम बदले और आए तूफान।
ऋतुएं बदली,बदले सब अनुमान,
मानव ,जीव जंतु सभी हैं परेशान।।

बेमौसम की बारिश आती है बाढ़
थम जाती है जिंदगी की रफ्तार,
खेती किसानी को बना देती है दुश्वार।
आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे 75 वा साल।
अंतरिक्ष में हमने भेजे ऐसे उपग्रह
जो भेज रहे मौसम का आंखों देखा हाल।

मौसम का पूर्वानुमान बना वरदान,
चाहे हो खेती या अन्य कोई काम सभी कुछ कर देता है आसान
मौसम विभाग का यह पूर्वानुमान।

CID-124792761

Hark! Hail! The tiles ain't slipping!
Hark! Hail! The Joy is coming!
Hark! Hail! The Bore is kneeling!
As I do frolic on the grass
Here and there, the bore is scarce!
Ball is kicked over the tile
Punishment ain't deliver-i-ed!
The bright white swans are statues
Antelopes do overlook all!
There are no more slippery fears
Heat has come, Englishmen, Take off thy coats!
The time is hot, the heat at its top
Find your own little frolic.
It doesn't rain, it isn't springIt isn't autumn, summer's here
Englishmen, take off thy coats! Hark! Hail!

CID-124792841

मेरे घर का मौसम

प्यारी डायरी, मैं दस साल की हूँ

पहाड़ो के गोद में जन्मी, जहाँ हैं हरी, मुलायम घास की गद्दी

यहाँ रात की थाली में हज़ारो तारे परोसे जाते हैं

हर रोज़ नूतन आकाशगंगा के लरी लग जाते हैं

बारिश के मौसम में मेरी घाटी परियो की दुनिया बन जाती हैं

छनछन करती बारिश की पायल हर घर में खनक -खनक कर बजती है

बूंदो के जादु से मेरी घाटी दुल्हन- सी सजती है

बसंत आते ही , नगारे बजने लगते हैं

ठंडी से डरकर रजाई में सहजे पाँव, अब नहाने के लिए झरनो की तरफ़ बढ़ते हैं

अकल्पनीय रंगो का विस्फ़ोट हो जाता है, हवा का हर झोंका मुझे चित्रकार ही नज़र आता है

प्यारी डायरी, मैं बीस साल की हूँ

पहाड़ो के गोद में जन्मी थी , जहाँ हरी, मुलायम घास की गद्दी थी

अब मैं ऐसे जगह पर रहती हूँ जहाँ ठंडी गर्मी समय से नहीं आती है

ठंडी में इक ओर कूप अँधेरा छा जाता है

तो गर्मी में गर्म हवा का झोंका थप्पड़ सा पर जाता हैं

बारिश की बूँदो से अब सब इमारत बूढ़े हो जाते हैं

' बसंत कब आया- गया ' ये हम पता नहीं कर पाते हैं

अब मेरी साँसे एक बंद गिलास में मिलती हैं

मैं हर रात डरती हूँ

' कहीं कल हवा खत्म नहीं हो जाए ' यही सोच कर मरती हूँ

CID-124815171

मौसम और जलवायु

मौसम और जलवायु अच्छी रहेगी तब ही
इंसान रहेगा स्वस्थ और पायेगा लम्बी उम्र
मौसम और जलवायु का हम पर और
हमारी प्रकृति पर पड़ता है गहरा असर

मौसम का पूर्वनुमान लगाकर भारतीय मौसम
विभाग दे देते है हमें मौसम की पहले से खबर
मौसम और जलवायु का हम पर और
हमारी प्रकृति पर पड़ता है गहरा असर

मौसम और जलवायु पर ही अधिकतर किसान
अच्छी फसल पाने के लिये रहते है निर्भर
मौसम और जलवायु का हम पर और
हमारी प्रकृति पर पड़ता है गहरा असर

आज इंसान अपने लाभ के अनुसार कार्य करता है
उसे नही है मौसम और जलवायु की कोई फिकर
मौसम और जलवायु का हम पर और
हमारी प्रकृति पर पड़ता है गहरा असर

भूमण्डलीय उष्मीकरण के कारण पृथ्वी के
तापमान का होता है अधिकतम और न्यूनतम स्तर
मौसम और जलवायु का हम पर और
हमारी प्रकृति पर पड़ता है गहरा असर

CID-124811551

Dim and dumb future

What is the use of study,

If we can't save our country

Posterity would create hue and cry,

There is no water even to die

This is the situation going to happen,

After a short time duration

Carbon would cover the worldwide,

No peeple tree would be found alive

Giving oxygen twenty four hours,

They were cut to built bars

You did all your best ,

To spoil the earth and the rest

See now how environment takes revenge ,

You would not even be able to regret

Wait doomsday is near,

or open your eyes with vision clear you'll get to know why

people create awareness,

to protect trees from rapid carelessness

CID-124813111

DON'T LET IT BE WORST....

Green grass and tall tree
Fresh air and animals living free
Birds chirping at the dawn
Sounded soothing and gave the feeling of Shawn
At night the sky full of stars
Now looks like just a dream of ours

Our morning starts with honking of horn
Polluted air seems to warn
The pain in animals' eyes
When are we going to realise
The past generation has spoiled our lives
And gave diseases like two sided knives

Now is the time for us to combine
And in the green cover let mother earth shine
Let's plant the seed of gaiety
Let all animals live with felicity
Let's atone before it's too late
Let's atone before it's too late

~ Drishti Mohnani

CID-124829781

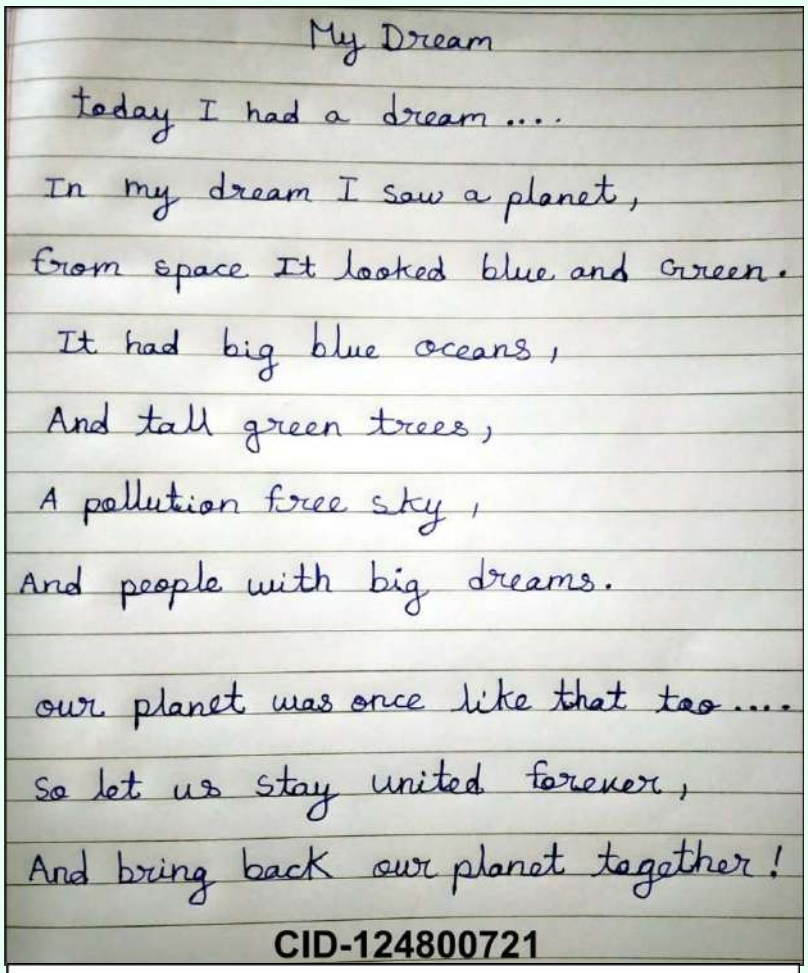

My Dream

today I had a dream ....

In my dream I saw a planet,

From space It looked blue and Green.

It had big blue oceans,

And tall green trees,

A pollution free sky,

And people with big dreams.

our planet was once like that too ....

So let us stay united forever,

And bring back our planet together!

CID-124800721

Season of mists and mellow fruitfulness,

Close bosom-friend of the maturing sun;

Conspiring with him how to load and bless

With fruit the vines that round the thatch-eves run;

To bend with apples the moss'd cottage-trees,

And fill all fruit with ripeness to the core;

To swell the gourd, and plump the hazel shells

With a sweet kernel; to set budding more,

And still more, later flowers for the bees,

Until they think warm days will never cease,

For summer has o'er-brimm'd their clammy cells.

CID-124800821

You don't always need a plan. Sometimes you just need to breathe, trust, let go, and see what happens.
MANDY HALE
CID-124802121

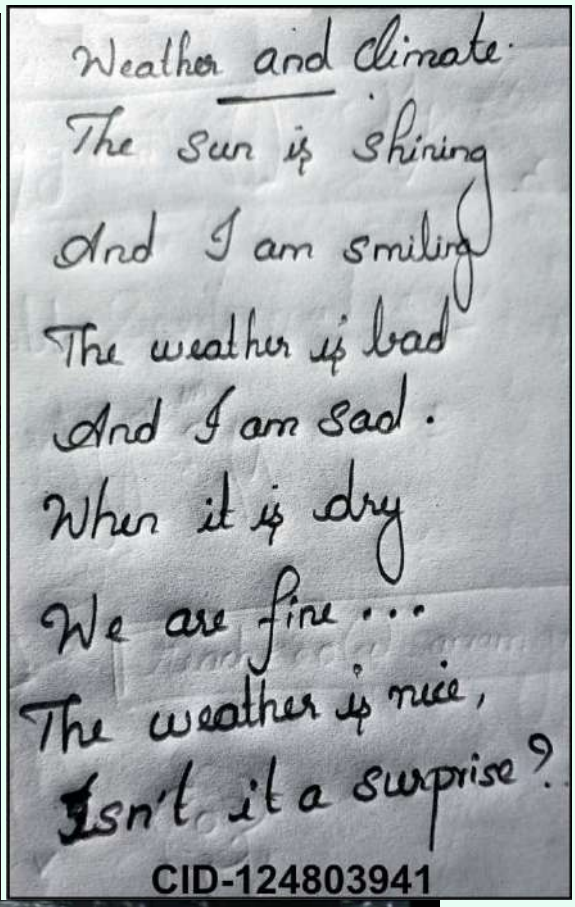
Weather and climate
The sun is shining
And I am smiling
The weather is bad
And I am sad.
When it is dry
We are fine...
The weather is nice,
Isn't it a surprise?
CID-124803941

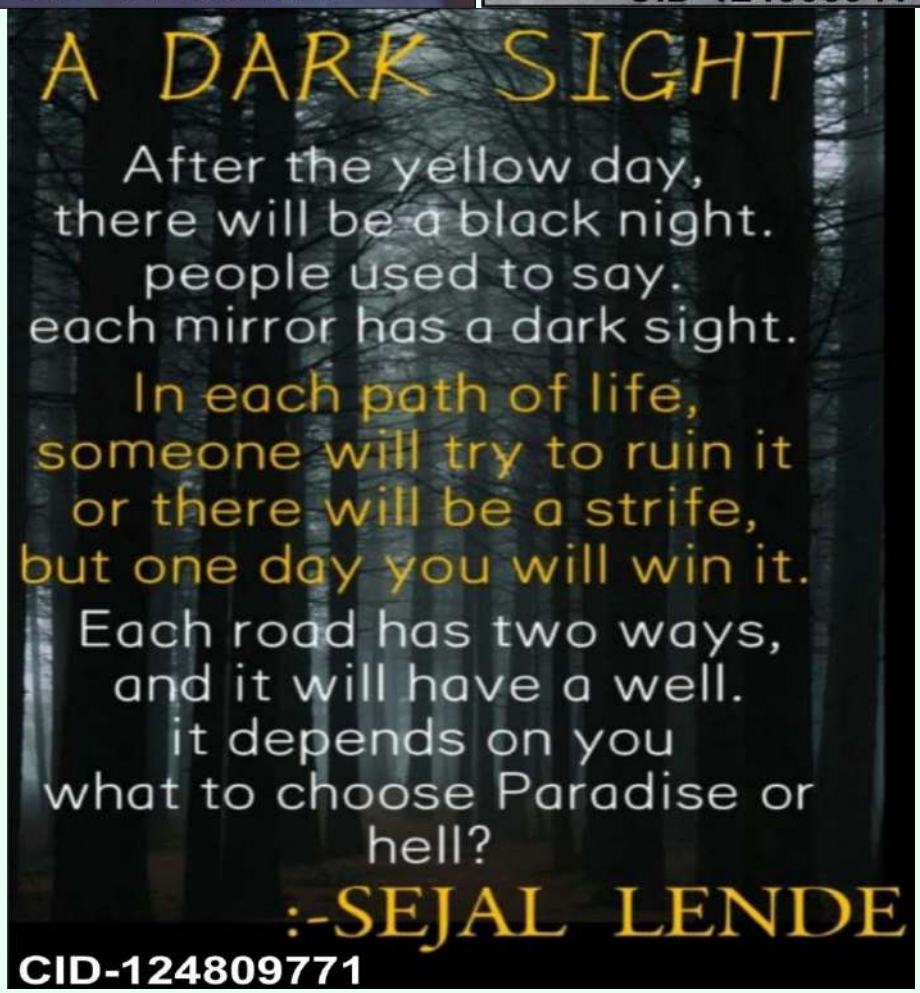
A DARK SIGHT
After the yellow day,
there will be a black night.
people used to say.
each mirror has a dark sight.
In each path of life,
someone will try to ruin it
or there will be a strife,
but one day you will win it.
Each road has two ways,
and it will have a well.
it depends on you
what to choose Paradise or hell?
:-SEJAL LENDE
CID-124809771

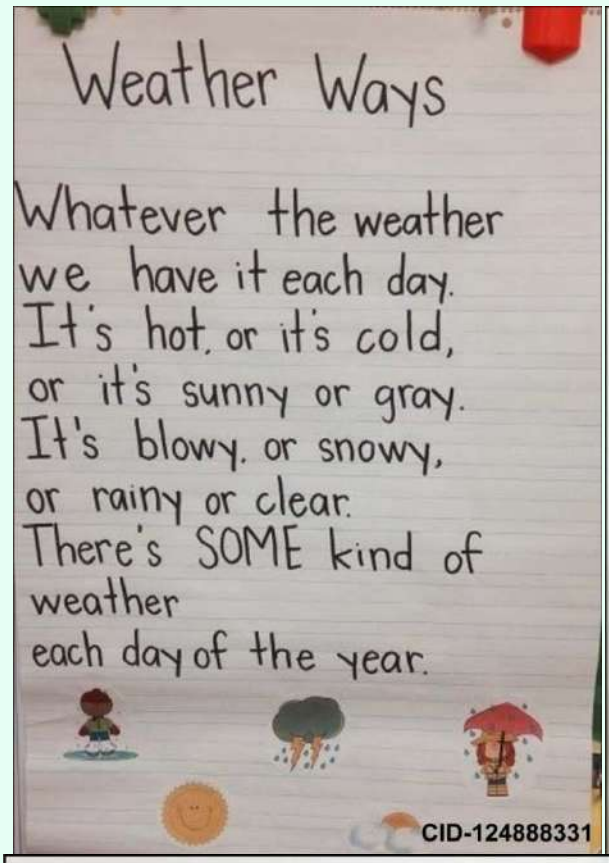

Weather Ways

Whatever the weather
we have it each day.
It's hot, or it's cold,
or it's sunny or gray.
It's blowy, or snowy,
or rainy or clear.
There's SOME kind of
weather
each day of the year.

CID-124888331

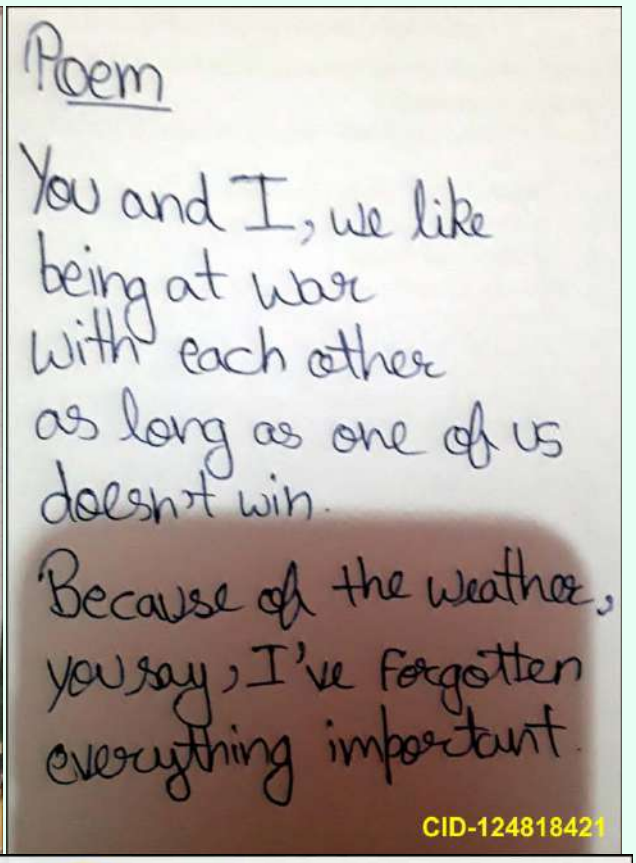

Poem

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
Because of the weather,
you say, I've forgotten
everything important.

CID-124818421

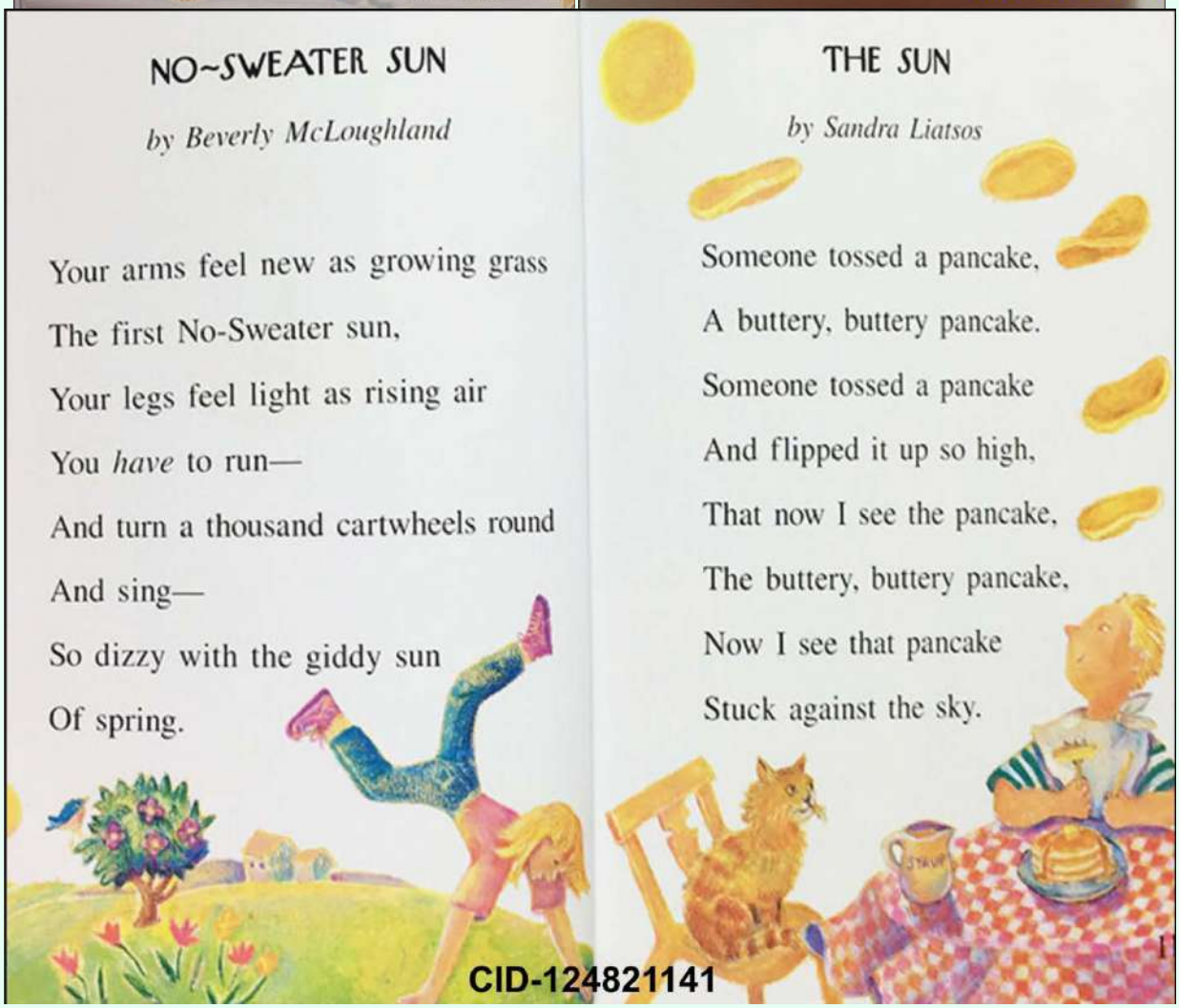

NO-SWEATER SUN

by Beverly McLoughland

Your arms feel new as growing grass
The first No-Sweater sun,
Your legs feel light as rising air
You *have* to run—
And turn a thousand cartwheels round
And sing—
So dizzy with the giddy sun
Of spring.

THE SUN

by Sandra Liatsos

Someone tossed a pancake,
A buttery, buttery pancake.
Someone tossed a pancake
And flipped it up so high,
That now I see the pancake,
The buttery, buttery pancake,
Now I see that pancake
Stuck against the sky.

CID-124821141

वातावरण की कहानी

आओ सुनाऊँ आप सभी को वातावरण की कहानी
चार हैं ऋतु जिनकी अपनी अलग - अलग है वाणी
सर्दी, गर्मी, वसंत, पतझड़ इनका रूप निराला
इन चारों में कौन ताकतवर कोई समझ ना पाया

फाल्गुन माह से हो जाती है गर्मी की शुरूआत
एसी, कूलर, पंखे सिर्फ इनकी ही होती है बात
बैसाख, ज्येष्ठ में गर्मी का आता है भयंकर रूप
प्रतिवर्ष कुछ डिग्री बढ़कर लाती है अपना नवरूप

गर्मी के मौसम में ~~सबका~~ सबको ठंडी चीजें भाएँ
आषाढ़ के अंत में बरसात दस्तक दे जाए।
सावन में कोयल खुश होकर मिठी वाणी गाए।
किसानों के चेहरे पर यही बरसात खुशियाँ लाए

बरसात के बाद आती है वसंत ऋतु की बौछार
यहाँ से शुरु होता पेड़ों का नवजीवन पुनः एकबार
नई पत्तियाँ आने लगती वसंत ऋतु आने के बाद
मिठी ठंड शुरु हो जाती तुरंत इसके जाने के बाद

कंबल, रजाई बाहर आ जाते, एसी कूलर को बाय-बाय
साल के प्रारंभ से ही सबके हाथ पाँव ठिठुराए
चार माह का ठंड का मौसम सबको नानी याद दिलाए
फाल्गुन के आते - आते पेड़ों के पत्ते झड़ जाए

यही है वातावरण की कहानी
कभी सर्दी, कभी गर्मी
तो कभी पतझड़ और वसंत रानी।

CID-124838461

- कोमल

I too have Something to Say - SHE

Who is SHE? Beautiful beyond Words;
Climate being her Personality And
Weather being her Mood.
Sometimes out of her Emotions
You could hear severe thunderstorms
And could see some huge Cumulonimbus
Clouds wandering throughout her mind,
Which would cause a sudden splash of Rainfall....

Who changed her? It's You;
You exploited her, killed her children
Temperature raised, ice sheets melted
Several abnormal events are occuring
It's the time to Rethink;
STOP EXPLOITING, START PROTECTING
It's the time to break the silence,
Lets hold our hands together

Remember her Last Words, I would be a
'Lover' for my Lovers And 'Nightmare' for my Exploiters.

CID-124841641

Poem on Weather and Climate

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
If that's impossible,
we can only talk
about the windy profiles
of clothes
on the clothesline
and how lightning strikes
would never dare
desert their distance
from us. Rain might
come soon. Heat
sucks. Because of the
weather, you say,
I've forgotten
everything important.

— By Naman Gupta

CID-124844951

As the beautiful earth heals,
Evil man exploits the earth ...

Forgive me, son of the earth, to man .....
Again, the man behaved without a story,
Earth warns of minor floods .....

If you have not done anything yet
Flood is certain ...

Love the earth
A good nature for the next generation
.....

CID-124849741

The Greens lost the ground
Leaving that melting glaze
In the gloom,
As the blue planet
Choking to demise.
As the lone nature
Fighting for us.
Yet, we drive
Not to rewrite the future.
But to drive the darkness
Into reality.

#ClimateChangeIsReal.
#ClimateJustice.
#ClimateWarrior.

— Bharathh Kuumar Pothuraju

CID-124843431

TIM SEIBLES

First Verse

I admit the world remains almost beautiful.
The dung beetles snap on their iridescent jackets
despite the canine holiness of the Vatican
and, despite the great predatory surge of industry,
two human hands still mate like butterflies
when buttoning a shirt.
Some mornings
I take myself away from the television
and go outside where the only news comes
as fresh air folding over the houses.
And I feel glad for an hour in which race
and power and all the momentum of history
add up to nothing.

As if from all the mad grinding
in my brain, a single blue lily had grown –
my skull open like a lake. I can hear
an insect sawing itself into what must be
a kind of speech.
I know there is little
mercy to be found among us, that we have
already agreed to go down fighting, but
I should be more amazed: look
at the blood and guess who's holding
the knives. Shouldn't we be *more*
amazed? Doesn't the view
just blister your eyes?

To have come this long way, to stand
on two legs, to be not tarantulas
or chimpanzees but soldiers of our own
dim-witted enslavement. To utterly miss the door
to the enchanted palace. To see *myself*
coined into a stutter. To allow the money
to brand us and the believers
to blindfold our lives.
In the name
of what? If that old book was true
the first verse would say *Embrace*

the world. Be friendly. The forests
are glad you breathe.

I see now
the Earth itself *does* have a face.
If it could say *I* it would
plead with the universe, the way
dinosaurs once growled
at the stars.
It's like
the road behind us is stolen
completely so the future can
never arrive. So, look at this: look
what we've *done*. With all
we knew.
With all we knew
that we knew.

CID-124853631

Call of the Planet!

The sun is brighter by the day,
the moon seems anchored far away.

Humanity has become an ocean reviled,
Mother Earth is being incessantly defiled.

Animals and birds sing in one voice –
"Humans, you no longer have a choice!"

Reticent about the tasks, but resilient to the cause,
Let's for our planet's sake, take a momentary pause.

The cornucopia of earthly delights seems dwindling away,
Consecrated steps are the only way.

Enabling electric vehicles and lab-grown meat to gain market headway,
And saying 'No' to plastic bags will go a long way.

Businesses going green or by us consuming greens,
High time to delay climate change by all means.

Still, there is time to make amends and turn back,
Before it's too late and we find ourselves heading towards a Cul de Sac!

CID-124855561

मैं पृथ्वी, सुनाती हूं अपनी जुबानी,यह कहानी,
कैसे प्रारंभ हुई,
मेरे जन्म दिवस मनाने की रीत रूहानी,
साफ जल, थल, वायु से,
साफ था मेरा जीवमंडल।
मानव ने किया तिरस्कार,
बर्बरता से तोड़ा मेरा कमंडल।
दूषित किया जल, थल, वायु को
अपनी मनमानी से,
उत्सर्जन ज़हरीली गैसों का, औद्योगिकरण का गंदा
पानी, वन नाशन, अपकर्ष धरा का निरंतर बढ़ाता चला
गया।
जलवायु का स्तर गिराता चला गया।
ऋषियो, मुनियों ने माना था,
मुझे कुदरत का सबसे बड़ा उपहार।
मुझसे ही तो जीवन था सबका साकार,
भूल रहा था मानव जब अपना कर्तव्य व्यवहार।
जागरूक उसे करने के लिए,
तय किया पृथ्वी दिवस इस वार।
किन्तु मानव, करना ना अब मुझे निराश,
आपके सहयोग से ही बंधेगी मेरी आस।
वन रोपण, भूमि संरक्षण,
में सबका योगदान।
संरक्षण ही तो है अंतिम निदान,
आने वाली पीढ़ियों का सच्चा उद्यान।

CID-124877271

I am the Earth

It was a month ago
My thirteen years old skeleton
Had embraced mother Earth.
I had smelt the powerful soil,
Underneath the bed of a grave.
I was wrapped in thin clothes
My mother earth had given breath,
It was a great bliss, with little leaves.

I am a son of mother Earth.
As long it brought me with lifeless soil.
I believe the invincible power it has,
That billions of Earthians had to share among all.
But all that greed rules preach less mind,
Every ear listens but denies the good.

I am lying all day long into the soil,
My son, she says.
Long stayed with rich life
All plants and harmless creatures ruled at that time.
Time has power, changed tremendously.
Exploited me mercilessly.
Turned out to be the end of my life too.

Soft crimping of tender stems out my grave,
I said, my mother, let this globe breathe their life,
Until they know the shortness of life,
Will turn back to you.
This soil is for every being on earth.
My mother said I embrace
Every being is like my sons and daughters.
You cared for me for a long time.
I will take care of you like my mother.

A little plant has planted a change,
It says *I am the Earth.*
If you care about me, I will care for you.
My bones and soil had made the plant's life rich.
My mother has taught me
Do good but expect nothing in return.
My Earthians keep my mother well.

~ Prem Kumar.

CID-124894181

ENVIRONMENT VS ECONOMY

Honestly,
Modern technology
owes ecology an apology.

When will we realize
Animals are declining
Because of coal mining.

Isn't it ironic that we think
Stabbing a man is a crime
But stabbing a tree is fine.

If politics, people, and power
Continue this attitude
One day, our Earth might conclude.

So, stop and listen to me,
I need your helping hand,
To save water, trees, and land.

If they say,
The environment is inferior to economy
Ask them to hold their breath while counting money!

CID-124894431

मौसम और जलवायु

हाहाकार- हाहाकार क्यों मचा आज है,
मौसम तो बदलता है, पर क्यों हो रहा जलवायु परिवर्तन आज है।
क्यों आज वातावरण में तापमान बढ़ रहा है,
इसका साथ देने हिमनद भी पिघल रहा है।

वर्षा भी अपना स्वभाव बदल रही है,
कभी ज्यादा तो कभी कम बरस रही है।
वन की सनसनाहट मानो कुछ कह रही है,
बचाओं- बचाओं करके मनुष्य को ही बचा रही है।

भूमंडलीय ऊष्मीकरण पृथ्वी पें अपना घर बढ़ाता जा रहा है,
बंगाल की खाड़ी से तेज तापमान अरब सागर तक पहुँच रहा है।
मौसम विभाग जलवायु को जान रहे है,
हमें चेतावनी देकर इसे बचाने का प्रयास कर रहे है।

जीवन को बचाना है तो,
जलवायु को सुरक्षित करना होगा।
आओं मिल कर प्रण ले,
पेड़ लगाए, प्रदूषण कम करें।

जलवायु को हमें बचाना है,
मूल स्वरूप में उसको लाना है।
नवयुवक को इसका महत्व समझाना है,
दुनिया को जलवायु परिवर्तन से बचाना है।

CID-124895821

Worldly Silent Winter

All are together; the world is worldly silent.

Glimmers gaze in zeal,

folks eye sun to heal.

Fog has its pride,

it'll hardly let you ride.

Mornin' hosts some blazes,

with the tea comes noises.

Cap of cheeps cloaks corner,

here, tweeter gets warmer.

Trees howl in pleasure

browny bees go shower.

All are together; the world is worldly silent.

The scene embraces its soft sky

as the fog fades with the fly.

With high light comes noon

and the feeling of chill darkens as we know the warmth is to end soon.

We dive deeper and deeper as the sun gets higher and higher.

There comes evening,

and the fog gets its shining.

All are together; the world is worldly silent.

Time to wrap in quilt again,

some are on the street in pain.

The silver disc gets his nerve ready,

as he knows he's there for everybody.

The night grows in its attitude,

being ignorant of the disc glaring all above the altitude.

Cold and night have got in pair,

but the Earth is still rotating there.

With every rotation comes morning,

lest we forget, the Earth is silently working.

All are together; the world is worldly silent.

CID-124896591

कविता

" मौसम और जलवायु "

मौसम - जलवायु के है, रूप निराले ।

कितने सुन्दर कितने प्यारें ।।

मौसम से ही शुद्ध, हवा और पानी ।

जिनसे चले , हम सब की जिंदगानी ।।

जलवायु से ही, होती वर्षा ।

मौसम ही लाते , रानी बरखा ।।

वर्षा सबकी प्यास बुझाती ।

सब ओर हरियाली है छाती ।।

इनसे ही फसल निहाल ।

इनके बिना सब बेहाल ।।

मौसम जलवायु से है ,शुद्ध पवन ।

ये है जीवन के अनमोल रतन (रत्न) ।।

मौसम - जलवायु के है, रूप निराले ।

कितने सुन्दर कितने प्यारें ।।

लेखक

CID-124897081 तरुण कुमार

In spring it's rainy
In winter it's snowing
In autumn it's windy
With sighs blowing

CID-124897451

The Triumph Over Fails

Our Attempts Are Failing, Our Mother Is Ailing,

The Time Has Come To Make It Now, To Cure It Now, Oh..Oh..

Do It Now..

Oh..Oh..Oh..

Our Attempts Are Failing, The Earth Is Ailing,

The Change Will Come Up, The World Will Wake Up , But We Must Start It Now...

Some Day, We All Will Wake Up... We All Will Wise Up And Make The Change .
Wow! Wow!Wow!

We Need To Build A Better Future And Start From Now...

Then That's The Time Our Attempts Would Not Fail....

And The Earth Would Be Greener, Safer And Much Cleaner.

The Change Will Come Up, The World Will Wake Up, We Must It Right Now!

CID-124877911

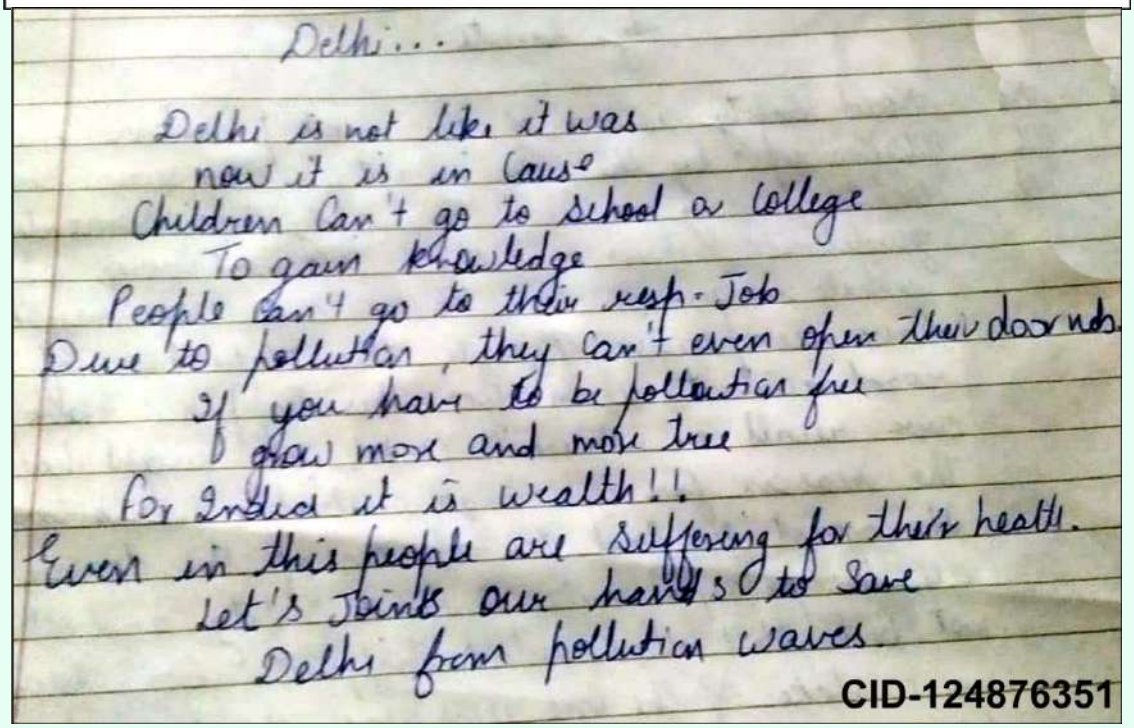

Delhi...

Delhi is not like it was
now it is in Cause
Children Can't go to School or College
To gain knowledge
People can't go to their resp. Job
Due to pollution, they can't even open their doors.
If you have to be pollution free
grow more and more tree
For India it is wealth!!
Even in this people are suffering for their health.
Let's Joins our hands to Save
Delhi from pollution waves.

CID-124876351

Poem for Weather & Climate Competition

(In Hindi)

उठो हिन्द के अमर सपूतों
ऐसा कुछ तुम काम करो
प्रदुषण ना रहे देश में
ऐसा कोई काम करो।

पर्यावरण है हमें बचाना
इसकी रक्षा करना है
हर बालक को सुन्दर बनना है
हर बालिका को तुलसी बनना है।

न सिर्फ हमें हैं पेड़ लगाने
जन-जन को जागरूक करना है
हर सरिता हो निर्मल देश की
उसकी गंदगी को हरना है।

दुष्ट प्रदुषण सीना ताने
खड़ा हमारी चौखट पर
पेड़ लगाकर अखिल हिन्द में
उसके प्राणों को हरना है।

जड़ी-बूटी के पौधे रोपो
सबको इसकी शिक्षा दो
स्वास्थ्य और खुशहाली बांटो
बीमारी और गरीबी हरना है।

उठो हिन्द के अमर सपूतों ....

तात्पर्य:-

सुन्दर : सुन्दर लाल बहुगुणा, तुलसी: तुलसी गौड़ा

CID-124901421

Poem
MOTHER EARTH
धरती माँ

जन्म लिया है तेरी कोख में उस माँ ने भी जिस माँ ने मुझे जन्म दिया
लाखों पत्थर इस संसार में पर तुमने ही मां कहलाने का हक पाया।

खुद जलकर आग में तूने शीतल यह संसार किया
अपनी छाती चीरकर तूने भुखमरी को दूर किया
प्रेम रस है तेरा अमृत जल, प्राणवायु है तेरा आँचल
जीवन को तुमने साकार किया ।

तेरी गोद में सिमटे है जगत के सभी जीव और जंतु
बराबर सबको हक दिया ना किसी में भेद किया ।

अर्थव्यवस्था और विकास के चक्रव्यूह में
मानव जाति ने तुझ से अपना नाता तोड़ा
माया जाल में यह मनुष्य दिशाहीन हो गया
लालच रूपी राक्षस ने इनका मन मोह लिया।

तेरे टुकड़े टुकड़े कर दिए अब शोषण तेरा होता है,
एक मां का दिल ही है जो इतना सब कुछ सहता है ।

पहले भी तूने इस जाति को चेताया है
जूं न रेंगी फिर भी इनके दोहन इनका जारी है
मैं जानता हूं कि तू खफा है हमसे, लगता है जैसे क़यामत का निमंत्रण आया है,
पर एक नई शुरुआत जरूरी है
एक नई शुरुआत जरूरी है
एक नई शुरुआत जरूरी है...

CID-124898481

WEATHER & CLIMATE

Written BY
KIRTI BHARDWAJ

The Earth is rotating or say revolving,
The clouds are warming, The sun is
sending us, its rays,
Be optimistic as life do pays.

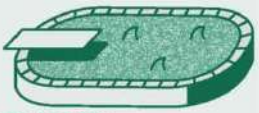

2020s
WARMEST DECADE

Earth is heating,
Why deforestation is continuing.
Our planet is hurting every single day,
We must take a step any way,
Or either choose to pay.

From the minute you wake from your nightly nap,
Make changes like turning of the tap.
The sun is getting hotter the rain won't fall,
I am afraid that we won't survive at all.
Recycle the plastic, please It's free,
We don't want to end up in hot sea.
Countries boiling, Animals ending,
Trees crying, Forests finishing,
Earth's sad bubbles pleasing.

IT'S TIME TO TAKE ACTION

KIRTI BHARDWAJ

7TH CLASS

GURUGRAM, HARAYANA

BLUE BELLS MODEL SCHOOL

CID-124909791

The Dux of Downpours

Drip, drip, drip the water leisurely trickled

Petrichor exuded, as the drops stealthily prickled

Down the bract, on the damp grass

And it commenced again, alas

After yesteryears, mizzles fought their way in my grassy balcony

I couldn't express my ineffable content, when the drop themselves were flooding with glee

I gazed from my window as the tiny marvels splattered against

With a flagon of steaming coffee and a novel, I rested, as it relentlessly rained

I sighed; my silvery eyes searched for the slightest sign of life

But all I detected was how, like me, the Calathea was barely alive

Pondering open my aloof of a fate, the rain now slowly decelerated

As if grieving and pitying with me, as my own story I narrated

Succinct it was, just like the rain

Temporary it was with zilch to feign

And my mind gingerly dripped with nonchalance and I tranquilly slumbered

To wake up to a clouded and serene, little of a world

CID-124916271

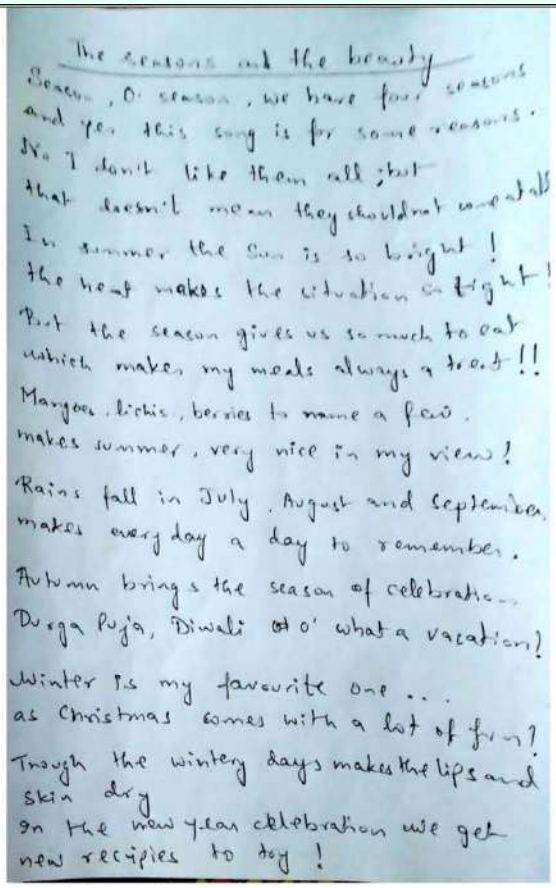

The seasons and the beauty

Season, O' season, we have four seasons
and yes this song is for some reasons.
No I don't like them all ; but
that doesn't mean they shouldn't come at all
In summer the Sun is so bright!
the heat makes the situation so tight!
But the season gives us so much to eat
which makes my meals always a treat!!
Mangoes, lichis, berries to name a few.
makes summer, very nice in my view!
Rains fall in July, August and September,
makes every day a day to remember.
Autumn brings the season of celebration
Durga Puja, Diwali ~~oh~~ O' what a vacation!
Winter is my favourite one...
as Christmas comes with a lot of fun!
Trough the wintery days makes the lips and skin dry
In the new year celebration we get new recipies to try!

(i)

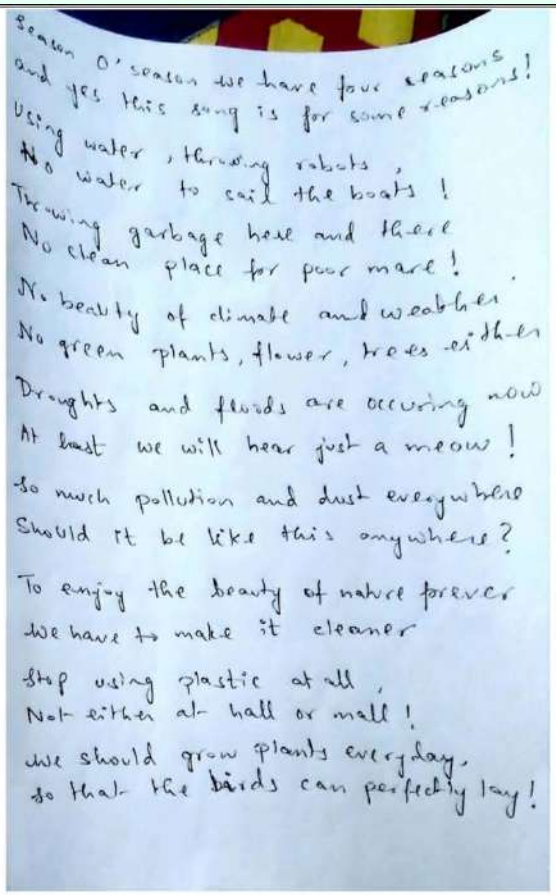

Season O' season we have four seasons!
and yes this song is for some reasons!
Using water, throwing robots,
No water to sail the boats!
Throwing garbage here and there
No clean place for poor mare!
No beauty of climate and weather
No green plants, flower, trees either
Droughts and floods are occuring now
At last we will hear just a meow!
So much pollution and dust everywhere
Should it be like this anywhere?
To enjoy the beauty of nature forever
we have to make it cleaner
Stop using plastic at all,
Not either at hall or mall!
we should grow plants everyday,
so that the birds can perfectly lay!

(ii)

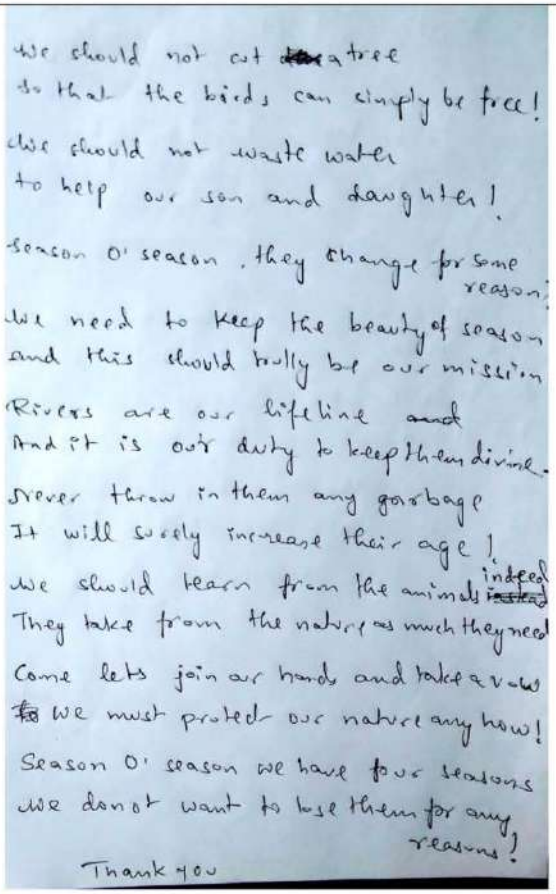

We should not cut ~~the~~ a tree
so that the birds can simply be free!
We should not waste water
to help our son and daughter!
Season O' season, they change for some reason;
We need to keep the beauty of season
and this should truly be our mission
Rivers are our lifeline ~~and~~
And it is our duty to keep them divine.
Never throw in them any garbage
It will surely increase their age!
We should learn from the animals indeed ~~instead~~
They take from the nature as much they need
Come lets join our hands and take a vow
~~to~~ We must protect our nature anyhow!
Season O' season we have four seasons
We donot want to lose them for any reasons!

Thank you

(iii)

Name- Vaanya Birendra Singh
Class- III Section- D
Roll- 37
School Shri Shikshayatan School

CID-124927431

(iv)

I Plead, Psyche

In the great civilizations of antiquity
I was set in the greatest sojourn
All of my forms were venerated
And I was the centre of allure.

Once I came as winsome whispering drops falling from heaven
quenching the thirst of everyone and drenching pathways alone
elating everything on the way, curing and enticing the souls.

Then I transpired the Earth in a new avatar.
Just like, the first bloom made your heart chant.

But It was never enough for you and to mesmerize thee
I forged myself and the grassy hillside was seen as powdered gold
Fruits and blossoms were abound.
But change is need of the hour and it was time for
a new showdown.

With every falling flake, your doorways greed increase
The peaceful descent is enthralling your psyche.

I gave you much and you seemed to enjoy and love
But, Now it all seems like a vexasious hoax.
The betrayal you did lead to the death of trust
Faith in mankind all vanquished and now I plead you to stop.

The misery you put my Earth in, is compelling me to burn with fury
One day, my rage consumes you all over.
I plead you to stop and Ponder the actions
whose fruits and reactions you can't stand.

CID-124956591

WEATHER AND CLIMATE

Weather reflects short-term conditions of the atmosphere while climate is the average daily weather for an extended period of time at a certain location

1. Use less energy. Most greenhouse gases are emitted by power plants, industry and traffic.
2. Produce clean energy.
3. Support good ideas.
4. Pull your money out of climate-damaging businesses.

- Save earth, it's worth more alive.
- Our planet, our home.
- We all need to live here. Save earth.
- Our planet is precious and only we can save it.

CID-124944251

Time to change yourself!

Every time I look through the window,
Cotton balls will appear like pillow.
I never observed sky without them;
They have the role of helm.

Nature give us great concern,
Love and mercy are all we can return.
She has a rhythm in every activity,
That's beyond our creativity.

Rain was pouring that day,
Sky was glistening the other day,
Trees became naked once,
They comeback within months.

Next, there will be ice everywhere.
Living beings are all aware,
The links which nature connect;
Life to herself which won't be wrecked.

Seasons will come and go,
Will appear pretentious though.
It's Earth's proper plan,
Which cannot be changed by man.

When nature believed in man,
He started interfering in her plan.
Human started exerting,
Nature's plan just started inverting.

Plants searched for interstice,
Hills were begging for justice.
Rivers started drying,
Global temperature began rising.

Nobody cared about the complain,
Human beings showed big disdain.
Nature showed her frame of mind,
No one had a little bit of kind.

Today things went out of our hands,

It went beyond human demands.
Now, rivers plays flood and drought
Ice plates started to melt.

We are now choking,
She is just joking.
We don't know were to start,
She know how to play her part.

She is planning tight,
We are out of sight.
We made her hostage,
Now, we need some bandage.

We earn nothing if we repent,
Should do something that content.
We have reasons for lamenting,
It's time to save her from smothering..

CID-124945371

A Gloomy World

Summer was hot with bright sunshine,
Daisies all around and butterflies flying by.
Drip-drop! drip-drop! rain fell on green grass,
Making muddy puddles, where kids loved to splash.

Spring was pleasant with blooming flowers,
Buzzing of bees and singing birds.
The sky was dark and ground was white,
Winter brought a coldest night.

There was a morning, when sunshine bright
Now days look, smoggy to my sight.

I was happy, I was proud,
Where man could live, on a peaceful ground.
I looked blue, and green from the moon,
Mother Earth, sobbed! in her saddest tone.

Ages gone by, as I grew old,
Change in climate and so much more,

Sultry, scorching summer, with massive thunder-storm,
Flooded lands and filthy rivers- ponds.
Ice is melting, sea rising high,
Shrinking forest, causing land to dry.

Shivering-chilling winter, along faded spring,
My heart can never keep on thriving.
I nourished and cherished all mankind,
Look! what they gave me, despair and fright.

I was happy, I was proud,
Where man could live on a peaceful ground.
I looked blue and green from the moon,
Mother Earth, sobbed! in her saddest tone.

CID-124934941

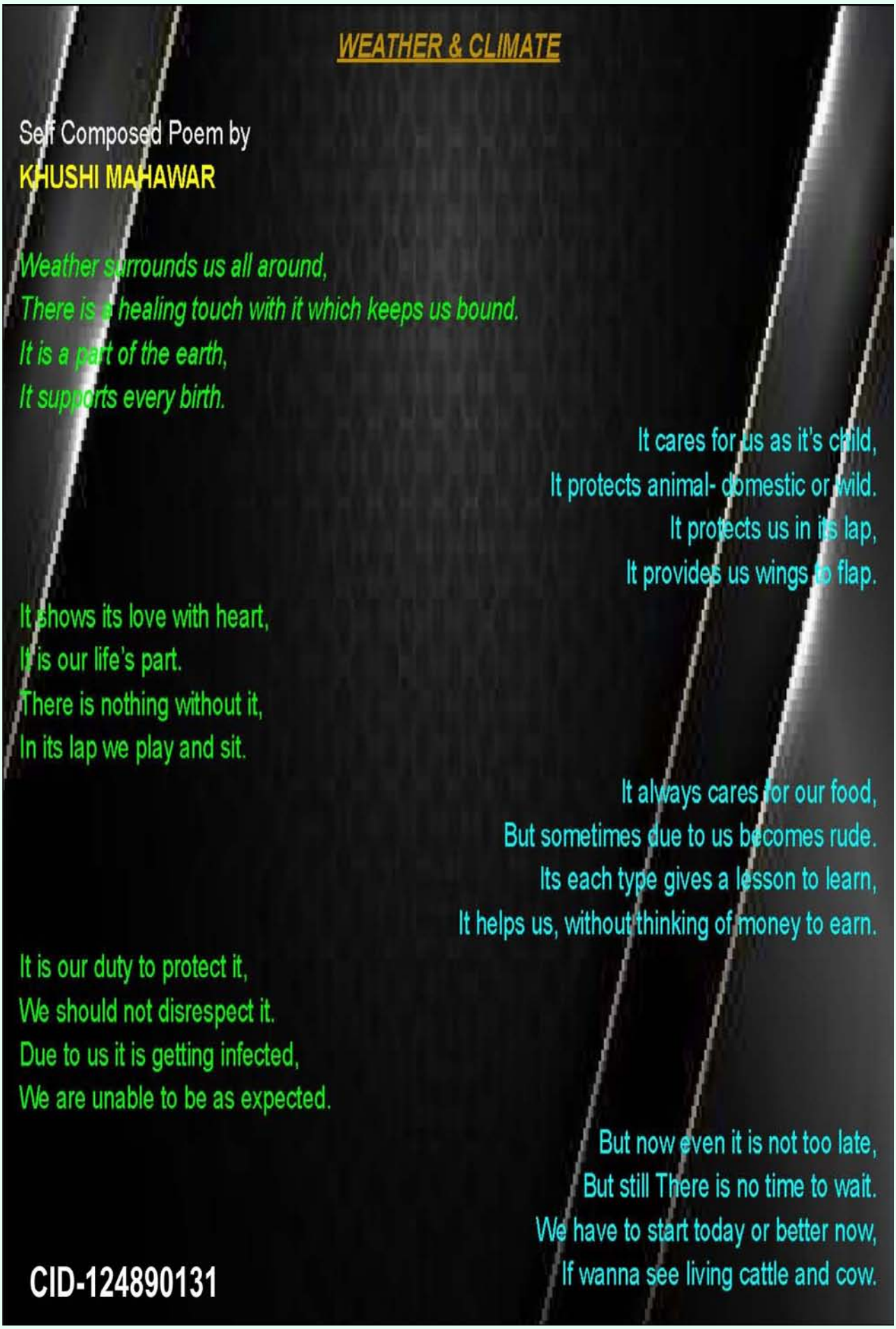
WEATHER & CLIMATE
Self Composed Poem by
KHUSHI MAHAWAR
Weather surrounds us all around,
There is a healing touch with it which keeps us bound.
It is a part of the earth,
It supports every birth.
It cares for us as it's child,
It protects animal- domestic or wild.
It protects us in its lap,
It provides us wings to flap.
It shows its love with heart,
It is our life's part.
There is nothing without it,
In its lap we play and sit.
It always cares for our food,
But sometimes due to us becomes rude.
Its each type gives a lesson to learn,
It helps us, without thinking of money to earn.
It is our duty to protect it,
We should not disrespect it.
Due to us it is getting infected,
We are unable to be as expected.
But now even it is not too late,
But still There is no time to wait.
We have to start today or better now,
If wanna see living cattle and cow.
CID-124890131

Once I dipt into the future far as human eye could see,
And I saw the Chief Forecaster, dead as any one can be--
Dead and damned and shut in Hades as a liar from his birth,
With a record of unreason seldome paralleled on earth.
While I looked he reared him solemnly, that incandescent youth,
From the coals that he'd preferred to the advantages of truth.
He cast his eyes about him and above him; then he wrote
On a slab of thin asbestos what I venture here to quote--
For I read it in the rose-light of the everlasting glow:
'Cloudy; variable winds, with local showers; cooler; snow.'

CID-124912261

Poem of climate and wheather
When weather and climate
change we all change
it is difficult to arrange
changes in our clothes
changes in our surrounding
Global warming is the reason
we are founding.
Do reduce reuse recycle and
avoid to drive motorcycle.

CID-124861571

In the era of syncing.
We couldn't see our harbour sinking!
The sky has a dark hue,
It has a blacker version of blue.
My window sill has shreds of glass,
With such intensity the wind blew.
Ofcourse, this is a land of barons.
But this too can't be denied;
The greens are turning barren.
Amity with exhalation happens without ado.
But what was to be inhaled,
Is slowly biding us adieu.
It's nature's rage,
We are about to pique.
To obviate or mitigate,
Make the choice, before it reaches its peak!

CID-124899541

जिंदगी का मौसम

ज़िन्दगी का देखो कैसा है सिलसिला।
कभी कुछ न मिला, और गिला ही गिला।।

संघर्ष की इस गर्मी को झेलना ही पड़ेगा।
जीवन की लू में भी हंसकर खेलना ही पड़ेगा।।

एक दिन तो बारिश को आना ही होगा।
गमो के मंजर को जाना ही होगा।।

जीवन की पतझड़ ऐसे ही झड़ जाती है।
कुछ पल तो इंतजार ऐसे ही कराती है।।

फिर एक दिन होगा जिंदगी में अँधेरा।
सर्दी में दिन होगा छोटा, और रात गहरा।।

बस अपनी मेहनत पर डटे रहना।
कोई कुछ भी कहे लगे रहना।।

जिंदगी का अँधेरा एक दिन छंट जाएगा।
वसंत ऋतु में वक्त ख़ुशी से कट जाएगा।।

कल तक थे जो पेड़ सर्दी से बेहाल ।
आज वसंत आने पर सब है खुशहाल ।।

कल तक थे जो पौधे, एक पत्ती को तरसते।
आज वो फूलो की बारिश से है बरसते।।

आज नहीं है जीवन से कोई गिला।
आसमान भी देखो कैसे खिला।।

इन खुशिओ में कहीं खो ना जाना।
संघर्ष और गर्मी को एक दिन वापस है आना।।

ज़िन्दगी का देखो कैसा है सिलसिला।
कभी कुछ न मिला, और गिला ही गिला।।

-अंकुर गर्ग

CID-124923311

Weather & Climate Poem Competition

मौसम और जलवायु परिवर्तन(कविता)

आया कोरोना,लाया बदलाव,

मौसम बदला,जलवायु बदली|

बदलते दौर में,बहुत कुछ बदला,

कोरोना ऐसी बीमारी,पड़ गई सब पर भारी|

मुँह पर पट्टी,

दे दी दो-दो गज की दूरी|

आफत ऐसी आ गई थी,

गई सबकी नौकरी थी|

नीति बदली,व्यवस्था बदली|

स्कूलों की पढाई,मोबाइलों पर चलती,

हुए परेशान बच्चें,इस तरह की आफत सें|

रहते घर-घर बच्चें,माता-पिता,

पड गई आफत सब पर भारी|

स्कूल बंद,दफ्तर बंद,

रेल बंद,बसें बंद|

घर पर रहकर होतें सब काम थे,

चलता मुश्किल से सबका काम था|

जब आया कोरोना था,काढा-भाप सब अजमाया था,

गई जान कईयों की थी|

फिर मिलकर सब डाक्टरों ने,

कोरोना वैक्सीन बनाई थी|

मिली थोड़ी-थोड़ी राहत थी,

कोरोना ऐसी बीमारी,भयंकर सब पर भारी थी|

Applicant Details:-*Name:-Rakhi.

poet name:-rakhi

*Gender:-Female

*Father name:-Subhash chand .

*Mother name :-Rajni

*Place:-vpo kurali,Teh. Naraingarh,Distt.Ambala,state Haryana,country India,pin code 134203,Nationality:-Indian

*Email:- angrishrakhi@gmail.com.

*Contact number:-9729837211

CID-124947011

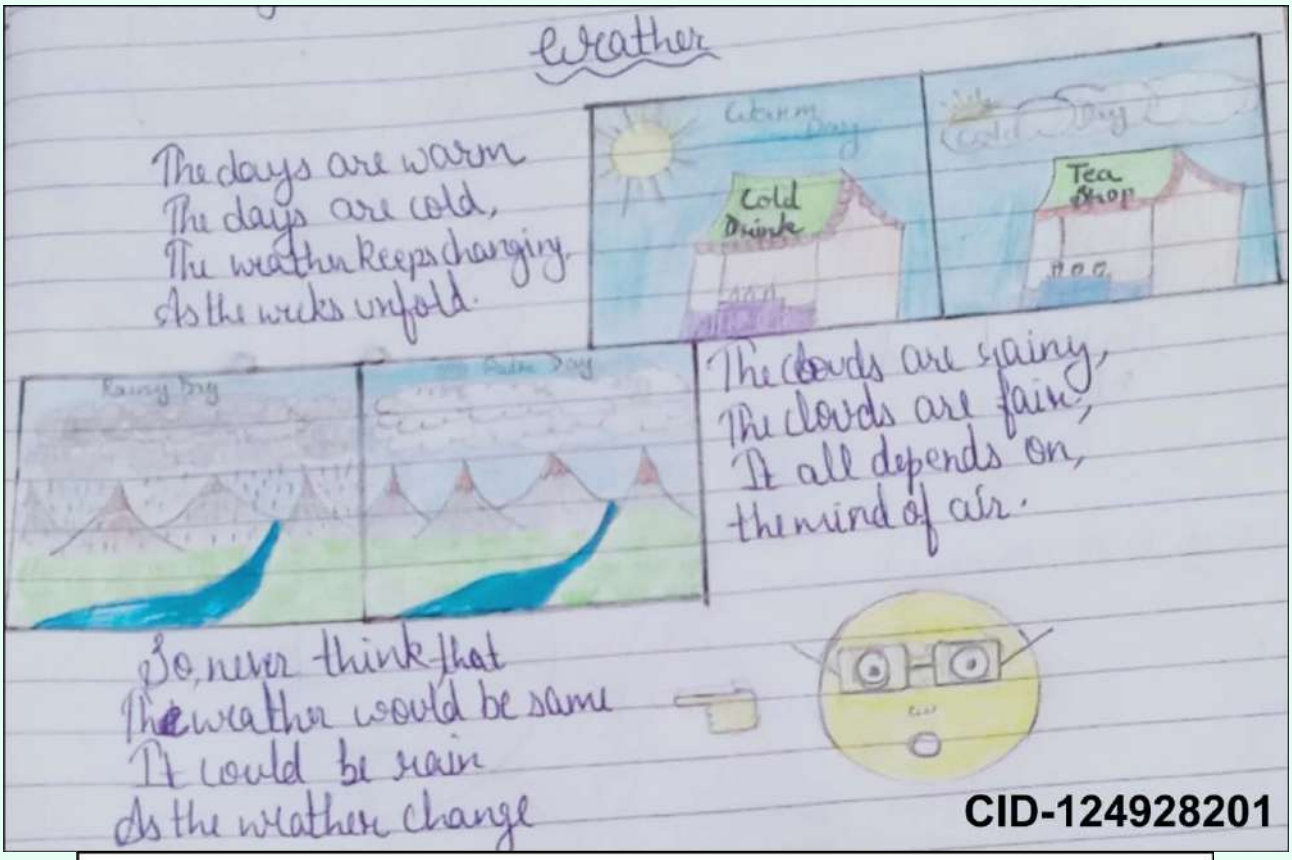

'Weather and Climate Sciences'

Weather is changing and climate is changing,
Reason is global warming which is warning.
For which humans are fully responsible and liable.
He had cut trees, reduced forest, made pollution,
diseases out breaking due to climate change needs action.

We must now stop grabbing nature,
before being too late and left to die.
If Earth is saved, life will be saved.
Making nature, weather, climate good,
is only in the hands of human hood.

India Meteorological Department is building a
weather-ready nation, monitoring, forecasting,
warning and rendering services to the nation.
We are proud as it will help in overall development
making India best and getting successful achievement.

CID-124929401

We live within the periphery of beautiful nature,

But we forget that it should be preserved for future.

What's protected stays longer as we say,

We need to learn to treat our surrounding with a friendly hey.

A perfect balance in and around life is a must and required forever,

Once disturbed , that can be repaired never.

At some place it's pouring oh so heavy , while others cry over aridity day and night,

Warnings issued by nature , are often forgotten as soon as everything turns alright.

The disbalance has begun,

Destruction has been given a free run.

Even a little step can initiate big change,

As angry nature has started to take its revenge.

Now it's us and only us who can mend things ever,

It's better to be late than standing up never.

Let's build a healthy relationship of love and care,

Be a friendly partner and let's stop acting like a player.

Think, decide , pledge and hold hands together,

Because either difference commences from now or will not at all , as tomorrow has no place in here.

CID-124954561

SUDDEN CHANGES

The warmth of the sunshine
Fall on my eyes;
I woke up and saw the blazing sun,
Happily spreading its sunlight,
Giving us energy and blooming new plants.

Few moments later , the dark clouds covered the sky;
The sound and flash of lightening
Made me almost deaf and blind.
The sun hid behind the clouds and it was dark thereafter
And heavy rain started falling soon after.

The evening was cool and fine
The wind blow with its whooshing sound by my window side.
In the night ,the sky got clear;
There was twinkling of stars
And warm moonlight spread everywhere.

The nature itself is a big magic theatre
And sun, wind and rain are its characters.
They cause these sudden changes in weather;
And they affect our lives everywhere,
But we have no control over them anywhere.

CID-124962551

कविता

प्रकृति और मनुष्य

प्रकृति ने दिया जब साथ मनुष्य का तब मनुष्य विकासशील कहलाया।

इस प्रकृति ने हमें मां की तरह पाला जल वायु, भोजन को हमारे जीने के अनुकूल बनाया।

पर आवश्यकता से अधिक की लालसा ने मनुष्य को लालची बनाया।

उसने काटे पेड़, रोकी जलधारा, जंगल उजाड़ कर कांक्रीट, सीमेंट का शहर बसाया।

और धरती से आकाश तक प्रदूषण ही प्रदूषण फैलाया।

प्रकृति से अत्यधिक छेड़छाड़ से –

बढ़ता तापमान, गिरता भूजल, हिमस्खलन का भी होना, तो कहीं बाढ़, कहीं सूखा, तो कहीं हैं भूकंप का कहर बरपाना।

तेज गति से चलने वाले हे, मानव

तू ने वाहनों के धुएं से अब तो "स्मोग" जहर भी फैलाया जिससे घुट रही है दुनिया सारी।

बस करो! बस करो!

प्रकृति कर रही है चीत्कार!

धरती माता की हे, प्यारी संतान

अब तो संभलो, अब तो जागो अपने बेहतर "पर्यावरण और स्वास्थ्य" के लिए जीवन में बचत का प्रण अपनालो।

कि, सहजेंगे हम सभी प्रकृति को, न मिटने देंगे इसकी अंनगिनत उपहारों को,

"बचत" को हम जीवन का सिद्धांत बनाएंगे।

हम अपने पर्यावरण को बचाएंगे, हम अपने पर्यावरण को बचाएंगे।

और आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ खुशहाल भविष्य दे जाएंगे।

रचना श्रीवास्तव

भोपाल

CID-124962191

दि.23/11/2021

Name: Pranav Alok Garg

Mob: 8108220073

Email: pranavalokgarg@gmail.com

Seasons of Sadness

Temperatures are rising, dread is growing
It's too hot outside, I am not going.
Clothes thin and light, showers now cold
And a refreshing ice cream never gets old.
Lakes no more and wells are drying,
We relish our water over animals' crying.

Heat dissolves as downs the rain,
But worrying with a brolly is such a pain!
By windows sit the makeshift lovers
Thinking of their unmet others.
Crisis spreads this season again,
Some are flooded while others see no rain.

Chilly winds set the mood around
Everywhere runs the shivering sound.
Time for woolens to take control
With hot broth to shrink in cosy hole.
Far away from the layered towns
With decreasing snow cover, the polars frown.

Climate is in chaos, wake up your soul
Live not for yourself, but for the world as a whole.

CID-124799241

The Vile Whirlwind

From far ashore, I heard a sound
loud and louder it grew.
As though it wasn't far,
from visiting us close.

The rolling mountains made a mound.
But, that wasn't enough,
to stop the gale...
The incoming winds
become gritty and fierce.

Over the ocean it seemed imminent.
But time was scarce!
Waters were heard growing prominent
like a battle fought furiously.

Misery appeared to be at the door step.
Through the window, I pondered,
will we win or lose?
The terrifying winds soon made a landfall.

The radio issued unending warnings.
I was home, were all too?
The window panes quivered
as if resisting the gusty mighty winds!

The clouds turned hostile too,
and in the blink of an eye,
water was all we could see!

Struggling men and suffocated cattle,
martyred trees and invisible crops,
missing roads and drowned vehicles,
reptiles in the rooms and men on top floors-
crying kids and mothers in distress,
perplexed fathers and diseases at door!

Some lost dear ones and some- homes,
a havoc wreaked by the gutsy whirlwind,
that swallowed all!

Rain was never this mean!
Numbed and woeful, I brooded for long,
what was our fault?

CID-124925371

The rain is here early.
Gusty South-West winds carry
Soft hints of the Arabian
But none of its salt.
It is hardly July yet
Summer's outstretched hand
Is now slowly soaking wet.

Man and time have moved fast
Predicting every cloud's path
Yet to the Indian shores,
Rain is bliss sought and prayed for,
Rain is the mercy of Higher Power
For 'tis not only green
That seeks the sating showers.

Monsoon might be a foreign word
But it feels so close to home
And the earth, at last, breathes again,
Gulping ambrosia down its throat.
Small fields, vast orchards
Sigh as water falls
And thunder claps.

CID-124959211

A process in the weather of the heart

A process in the weather of the heart
Turns damp to dry; the golden shot
Storms in the freezing tomb.
A weather in the quarter of the veins
Turns night to day; blood in their suns
Lights up the living worm.

A process in the eye forwarns
The bones of blindness; and the womb
Drives in a death as life leaks out.

A darkness in the weather of the eye
Is half its light; the fathomed sea
Breaks on unangled land.
The seed that makes a forest of the loin
Forks half its fruit; and half drops down,
Slow in a sleeping wind.

A weather in the flesh and bone
Is damp and dry; the quick and dead

Move like two ghosts before the eye.

A process in the weather of the world
Turns ghost to ghost; each mothered child
Sits in their double shade.
A process blows the moon into the sun,
Pulls down the shabby curtains of the skin;
And the heart gives up its dead.

CID-124783191

लाज शरम सब छोड़ के आई गौरैया,

अपना साथी साथ में लाई गौरैया।

रूठ गई थी शायद हमसे ऐ लोगों, खुशी मनाओ
लौट के आई गौरैया।

किसकी छत पे खाना तूने खाया है, और कहां पे
प्यास बुझाई गौरैया।

CID-124813491

aroma
I waited....
but no use
remember what goes
up , comes down with
double speed..
you tried to harm
me but remember
your planning to
harm yourself
my only dream was to save you !
but your deeds are so good that
proved me wrong..
and now I am like, what you do
, will get the same in return
CID-124962911

A planet left to save

Weather and climate are important for all
But nobody's really caring at all
They all burn crackers and throw trash out
"Why is our country so dirty?",they shout
But what we should focus on is our environment
Instead of asking others to care for them
When the motherland grieves over garbage filled rivers
We should be ready with our bags and shovels
To pick up the trash is our responsibility
And not something to be done fleetingly
When the air is thick with smoke from chimneys
What we need is to use our car a little less
All in all I urge you all to focus on the climate
Or there will not be an earth left to save.

CID-124955491

ABOUT THE WEATHER

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
If that's impossible,
we can only talk
about the windy profiles
of clothes
on the clothesline
and how lightning strikes
would never dare
desert their distance
from us. Rain might
come soon. Heat
sucks. Because of the
weather, you say,
I've forgotten
everything important.

CID-124958541

हर दिन सूरज से हि शुरू होता है
हर दिन अलग मौसम होता है|
कभी कभी हवा बहती है
तो कभी बारिश अपनी रंग फैलाती है
तो कभी सूरज अपनी किरणों से रौशनी फैलता है |
हवा के झोंके, बारिश कि बुँदे,
सुरज् कि रौशनी
धरती को स्वर्ग बनाती है|

CID-124962881

प्रकृति से ही हो तुम

चहकती चिड़ियाँ है मौन,
उच्चे कैलाश भी हताश खड़े हैं।
मनुष्य-प्रकृति के बिगड़ते संतुलन मे,
कई निर्दोष बलिदान हुए है।

धरती तप रही,
प्रदूषित इस वातावरण मे।
अमूक जानवर भी,
अब बेघर हो चले है।

जरा देखो आसपास,
कब से मुरझाए हुए है फूल।
नदी भी काया पलट रही,
वृक्ष कैसे शांत पड़े है।

भविष्य की भी सोचो,
स्वार्थ अपना करो कम।
जागो! इस जगत को बचाओ,
क्यूँकि प्रकृति से ही हो तुम।

CID-124944001

एक ओजोन ढ़ाल

बारिश की बूँदें तब खेतों पे, ओले बनकर बरसेगा।
जलमग्न द्वीप का हर इंसान, भूमि-भूमि को तरसेगा।
तपता गोला धीरे-धीरे ज्वालामुखी बन जाएगा।
यह धरती होगी पर यहाँ, जीवन मुश्किल हो जाएगा।

मौसम में परिवर्तन हम पर, काल बना फिर बरपेगा।
मानसून का बादल, जब शीतकाल में बरसेगा।
बर्बाद फसल होंगे खेतों में, अनाज नहीं भरपाएगा।
दाने-दाने को इंसान एक-दूसरे से लड़ जाएगा।

आपदा स्वरूप बदलकर, अपना अंजाम दिखाएगी।
कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं भूख तड़पाएगी।
प्रकृति का विध्वंश रूप, फिर मालूम नहीं सरल होगा।
आपदा की लहरों में फिर, जीवन नहीं मरण होगा।

हैं घड़ी अभी सम्भल जाओ, संरक्षण में जुट जाओ।
प्रकृति की सेवा को, एक ओजोन ढ़ाल तुम बन जाओ।

CID-124961241

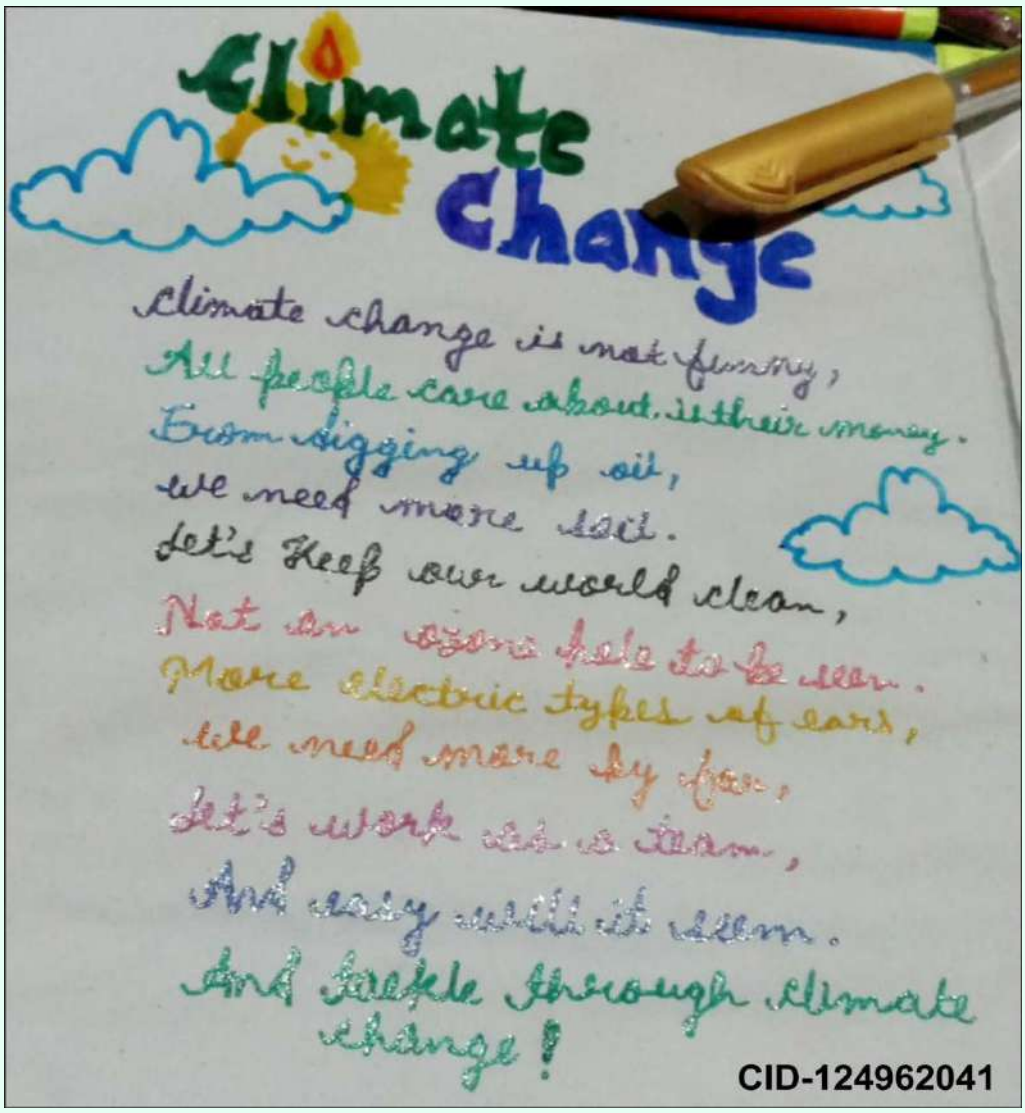

CID-124962041

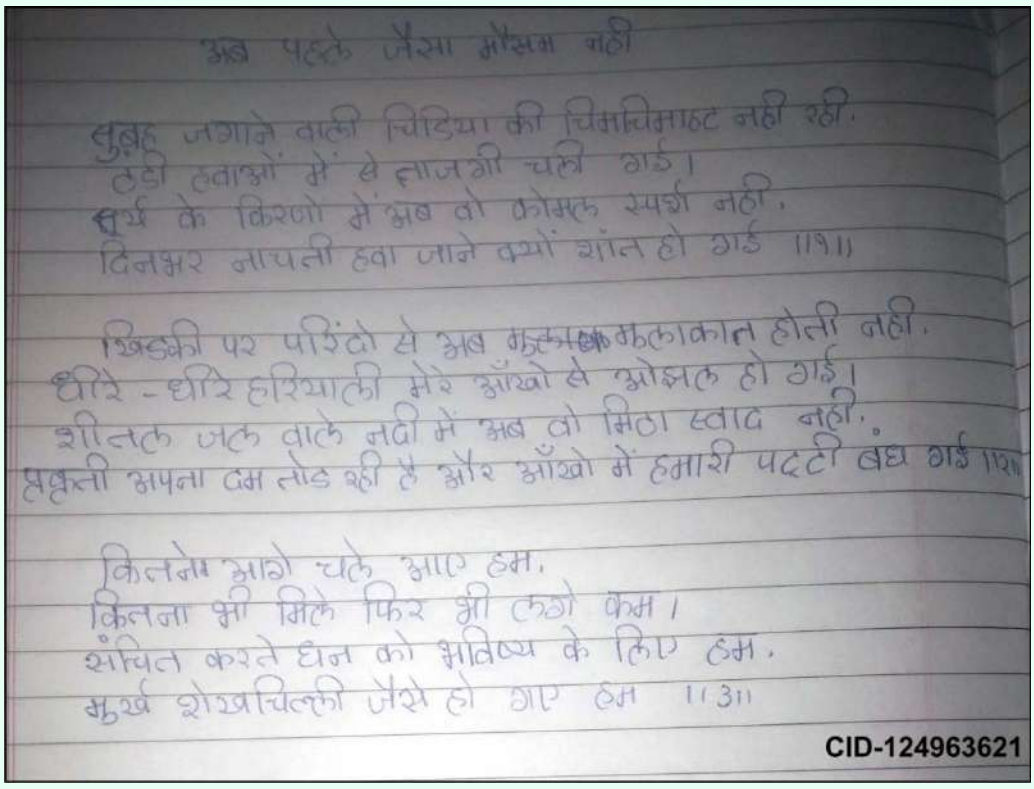

CID-124963621

Weather and climate change took over,
The world started getting warmer.
Global warming started happening,
And soon the ice caps started melting.

Increase in temperature,
With rise in sea leaves and more rain water,
Chances of floods increased along with land becoming miniature.

Awareness was to be spread around,
Warm weather was all that we found.
People started doing various different things,
Renewable energy was to be used, such as solar or wind.

More trees to be planted,
To help keep our earth green gardened.
Weather and climate was usually warm,
Global warming, as we called.

To save our earth,
We are trying
To reduce the world from drying.
Save our earth, from dying.

CID-124962211

SAMRITA BASAK
Class-1

Save Earth Save Life

I am the third planet of the solar system
I am the Earth the only planet where lives are found.
I am so proud, I am so happy.
But now a days I feel too hot, all ice are melting on me.
My air is polluted, my water becomes dirty.
I am feeling sick.
People on me polute my air, my water, my soil
I am your sweet home, not your dustbin,
I give you everything please take care of me

SAMRITA BASAK
CLASS – 1
SHRI SHIKSHAYATAN SCHOOL

CID-124912081

Summer

Summer is the time to play, and to visit places far away.

In my house my friends reach, and together we spend time on the beach

I eat an ice-cream to keep me cool, and I also have fun in the pool.

The boys play cricket with a bat & ball, as summer is a season loved by all

Monsoon

Heavy rains Day and Night

Morning and Evening

All the time.

Snails wonder about

Frogs croak aloud

They don't bother

About the water

The children wait for monsoon to come

To float paper boats

And to call their friends

To play and dance

Peacocks and Peahens Love rains

They dance On the lanes.

CID-124963071

Oh! Climate, you are not the same anymore!

Dear climate, you are not at all dear anymore!
The way you have changed in these past years,
It's quite surprising in our heart's core,
That you have reached the authority's ears.

Oh! Pity on us and your weather-selves,
For tolerating each other's spears,
Only if you would have been a bit better on your-selves,
Today it would have been a glory to our tears.

Smokes & dust is fuming everywhere,
Masks are covering the people in fears,
Bringing the age of diseases here and there,
Oh! Weather, you are rusting the immunity gears.

Rains in November & Heat-waves in October,
That's a scene one cannot think that appears,
Have you changed so much in the disorder,
That Oh, Climate! We cannot live for years.

Putting my pens down the last time,
I plead you with my humid tears,
Oh, Climate! Please don't let me sublime,
Become good to save me and my earthly peers.

CID-124871041

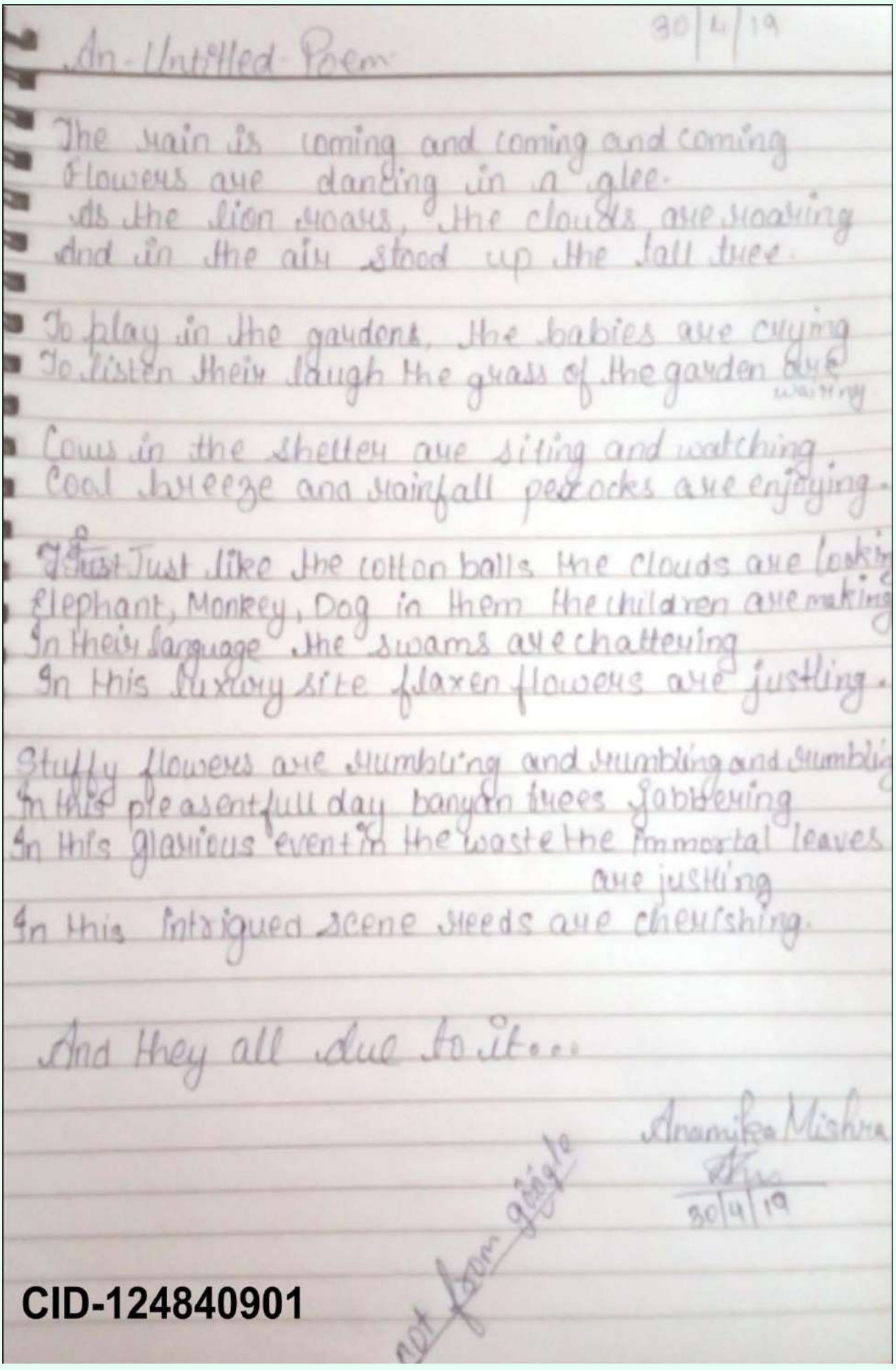

An Untitled Poem 30/4/19

The rain is coming and coming and coming
Flowers are dancing in a glee.
As the lion roars, the clouds are roaring
And in the air stood up the tall tree.

To play in the gardens, the babies are crying
To listen their laugh the grass of the garden dye

Cows in the shelter are siting and watching
Cool breeze and rainfall peacocks are enjoying.

Just Just like the cotton balls the clouds are looking
Elephant, Monkey, Dog in them the children are making
In their language the swams are chattering
In this luxury site flaxen flowers are justling.

Stuffy flowers are mumbling and mumbling and mumbling
In this pleasent full day banyan trees gabbering
In this glorious event in the waste the immortal leaves are justling
In this intrigued scene seeds are cherishing.

And they all due to it...

Anamika Mishra
30/4/19

not from google

CID-124840901

ABOUT THE WEATHER

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
If that's impossible,
we can only talk
about the windy profiles
of clothes
on the clothesline
and how lightning strikes
would never dare
desert their distance
from us. Rain might
come soon. Heat
sucks. Because of the
weather, you say,
I've forgotten
everything important.

CID-124800751

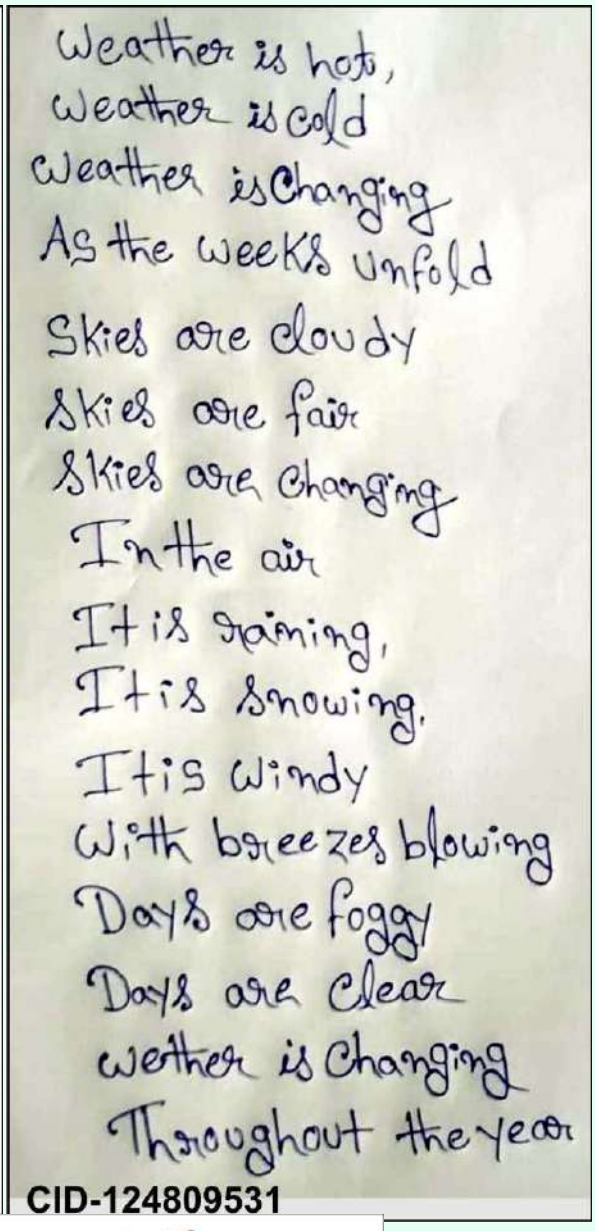

CID-124809531

Weather changes every time.
Climate changes anytime.
We feel cold and hot sometimes.
Stay at home every time if the weather is bad.
Wear a jacket every time if the climate is cold.
Weather and Climate change anytime!

CID-124840131

Let's save us ...

Nature created mankind and man created Nature.
Lets join hands together to save precious Nature.

Climate changes involve decrease in Sea Ice.
It causes increase in Permafrost thawing rises.
Heat Waves and heavy precipitation arises.
Water resources in Semi-arid regions face crises.
Let's join hands together to save precious Nature.

Climate changes bring natural disasters.
It increases global surface temperatures.
More droughts and intense storms occurs.
We put our coming generations into dangers.
Lets join hands together to save precious Nature.

More heat in atmosphere increases wind speed.
It is due to ocean surface temperature indeed.
Natural and anthropogenic factors got speed.
Magnitude of climate changes is a threat ahead

Lets help India through our deeds to save Nature.

Weather and climate are main wheels of the nature
Let's stick to the plocies on environment conservation.
Let's help India Metlogical Deptt to serve nation.
Let's be one to save future, to save mother nature.

CID-124963281

इतनी सुन्दर धरा हमारी मौसम इसमें चार,
बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद, हर मौसम एक बहार।
शीतल जल,निर्मल वायु और सूरज की किरणें हजार ।
हर मौसम के रंग अनोखे, मानो धरती का प्यार, मानो धरती का प्यार ।।

इस सुन्दर धरा में सेंध लगी जब मानव था ललचाया,
काट दिया उसने वृक्षों को,जल में कचरा फैलाया।
जलवायु का संतुलन बिगड़ा जब हद कर दी उसने पार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।।

कृत्रिम वर्षा , कृत्रिम सूरज से ना जीवन चल पाएगा,
नभ में ना कोई रंग दिखेंगे,हर मौसम सूना हो जाएगा।
ना बारिश की बूंदे ही होंगी,ना बसंत ऋतु का प्यार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।।

ऐ मानव अब होश में आओ, प्रकृति पर कुछ तरस तो खाओ,
सागर में ना फैंको कचरा, ना अम्बर में आग लगाओ।
मत काटो इन वृक्षों को अब, बंद करो यह अत्याचार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।
बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद हर मौसम एक बहार ।।

CID-124963601

इतनी सुन्दर धरा हमारी मौसम इसमें चार,
बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद, हर मौसम एक बहार।
शीतल जल,निर्मल वायु और सूरज की किरणें हजार ।
हर मौसम के रंग अनोखे, मानो धरती का प्यार, मानो धरती का प्यार ।।

इस सुन्दर धरा में सेंध लगी जब मानव था ललचाया,
काट दिया उसने वृक्षों को,जल में कचरा फैलाया।
जलवायु का संतुलन बिगड़ा जब हद कर दी उसने पार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।।

कृत्रिम वर्षा , कृत्रिम सूरज से ना जीवन चल पाएगा,
नभ में ना कोई रंग दिखेंगे,हर मौसम सूना हो जाएगा।
ना बारिश की बूंदे ही होंगी,ना बसंत ऋतु का प्यार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।।

ऐ मानव अब होश में आओ, प्रकृति पर कुछ तरस तो खाओ,
सागर में ना फैंको कचरा, ना अम्बर में आग लगाओ।
मत काटो इन वृक्षों को अब, बंद करो यह अत्याचार।
इतनी सुन्दर धरा हमारी, मौसम इसमें चार ।
बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद हर मौसम एक बहार ।।

CID-124964161

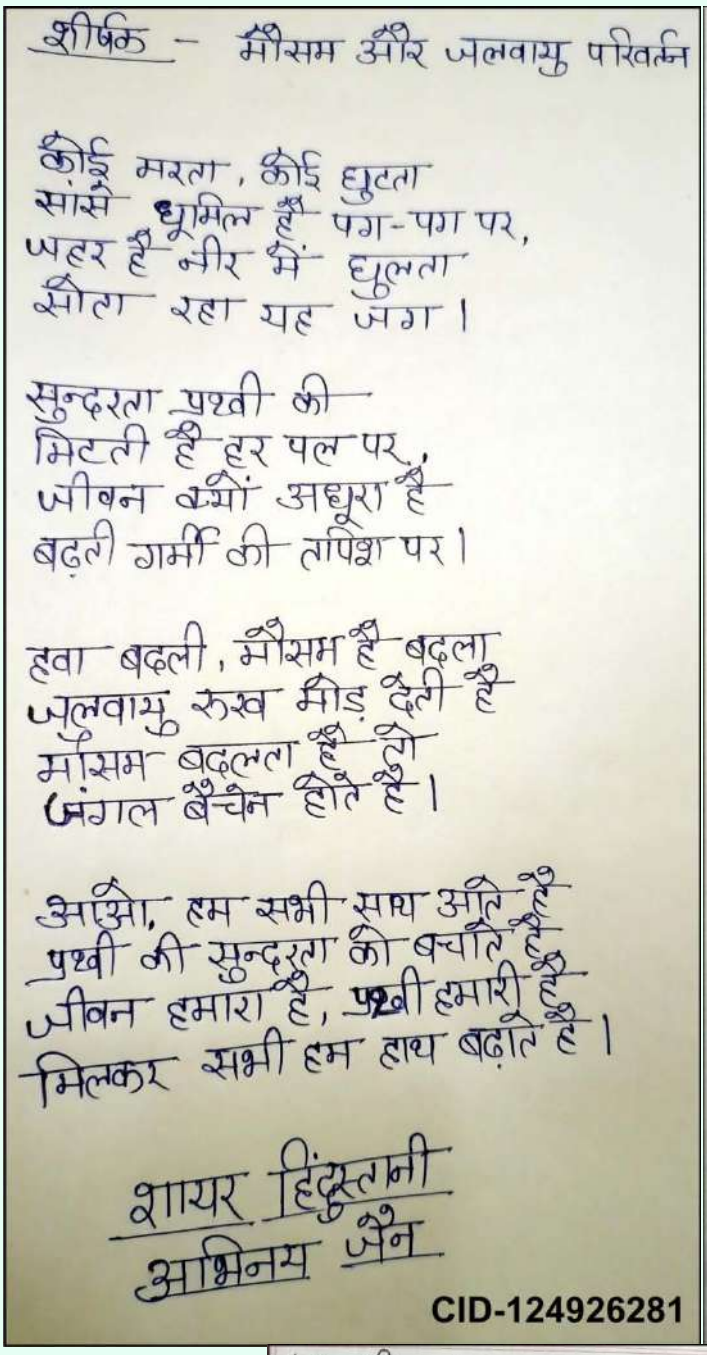

शीर्षक - मौसम और जलवायु परिवर्तन

कोई मरता, कोई घुटता
सांसे धूमिल है पग-पग पर,
जहर है नीर में घुलता
सोता रहा यह जग।

सुन्दरता पृथ्वी की
मिटती है हर पल पर,
जीवन क्यों अधूरा है
बढ़ती गर्मी की तपिश पर।

हवा बदली, मौसम है बदला
जलवायु रुख मोड़ देती है
मौसम बदलता है तो
जंगल बैचेन होते है।

आओ, हम सभी साथ आते है
पृथ्वी की सुन्दरता को बचाते है
जीवन हमारा है, पृथ्वी हमारी है
मिलकर सभी हम हाथ बढ़ाते है।

शायर हिंदुस्तानी
अभिनय जैन

CID-124926281

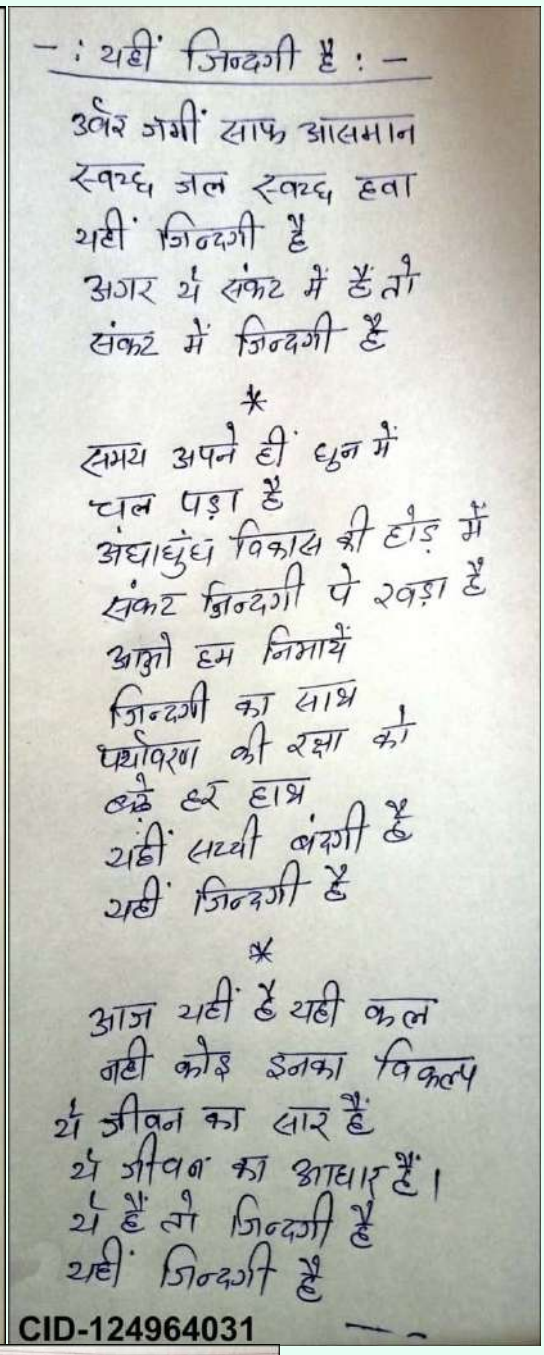

-: यही जिन्दगी है :-

उर्वर जमीं साफ आसमान
स्वच्छ जल स्वच्छ हवा
यही जिन्दगी है
अगर ये संकट में हैं तो
संकट में जिन्दगी है

*

समय अपने ही धुन में
चल पड़ा है
अंधाधुंध विकास की होड़ में
संकट जिन्दगी पे खड़ा है
आओ हम निभायें
जिन्दगी का साथ
पर्यावरण की रक्षा को
बढ़े हर हाथ
यही सच्ची बंदगी है
यही जिन्दगी है

*

आज यही है यही कल
नही कोई इनका विकल्प
ये जीवन का सार हैं
ये जीवन का आधार हैं।
ये हैं तो जिन्दगी है
यही जिन्दगी है

CID-124964031

Weather Ways

Whatever the weather
we have it each day.
It's hot or it's cold,
or rainy or clear.

There's some kind of
weather
each day of the year.

— Aarti Mastakar
7980177016

CID-124857491

The Climate will be Normal

Roaming in the street under the moonlight,

neither I'm shivering nor I'm feeling cold

strong scent of Night Jasmine everywhere,

in the past years' October used to be cold!

When it was July here,

paddy fields are striving for a drop of water

my father is working there, working harder,

is it the sign of summer?

Last year witnessed the flood,

swept away everything, nothing left for us;

left only disappointment and mud,

then life became bogus for us.

There's everything to be happy, nothing to be sad,

Everything will be good, and nothing remain bad,

Hope the day will come soon,

when the climate will be normal, as the nature planned.

CID-124859051

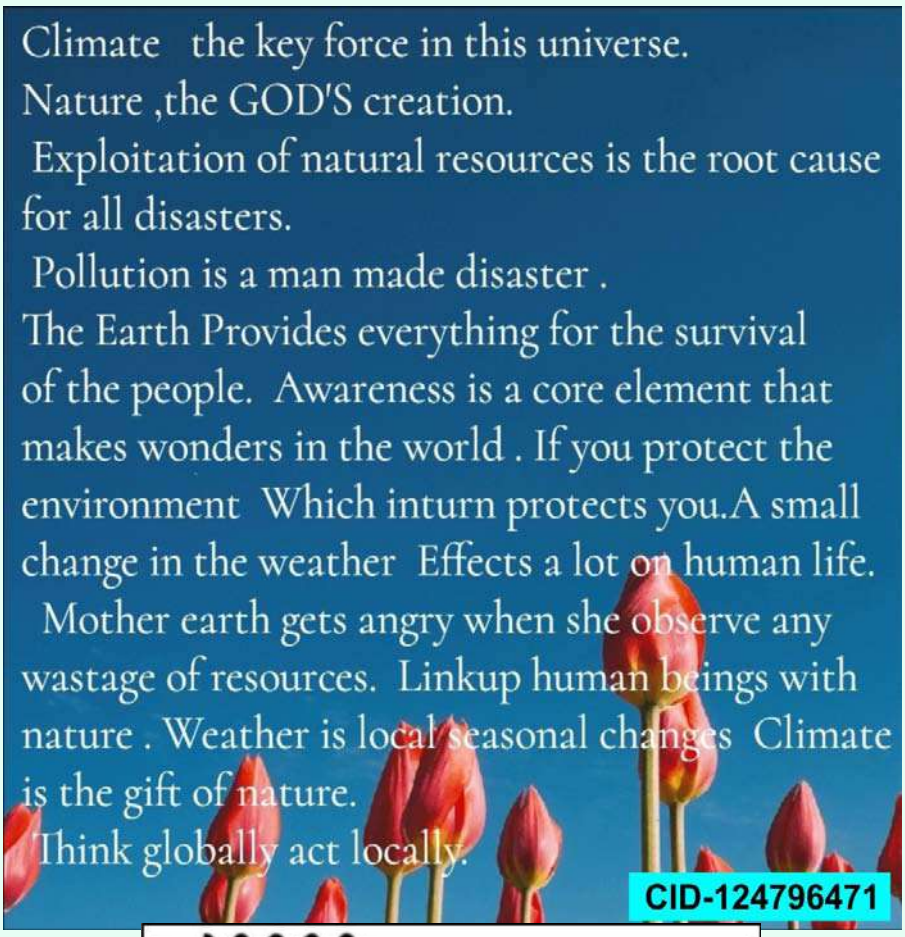
Climate the key force in this universe.
Nature ,the GOD'S creation.
Exploitation of natural resources is the root cause for all disasters.
Pollution is a man made disaster .
The Earth Provides everything for the survival of the people. Awareness is a core element that makes wonders in the world . If you protect the environment Which inturn protects you.A small change in the weather Effects a lot on human life.
Mother earth gets angry when she observe any wastage of resources. Linkup human beings with nature . Weather is local seasonal changes Climate is the gift of nature.
Think globally act locally.
CID-124796471

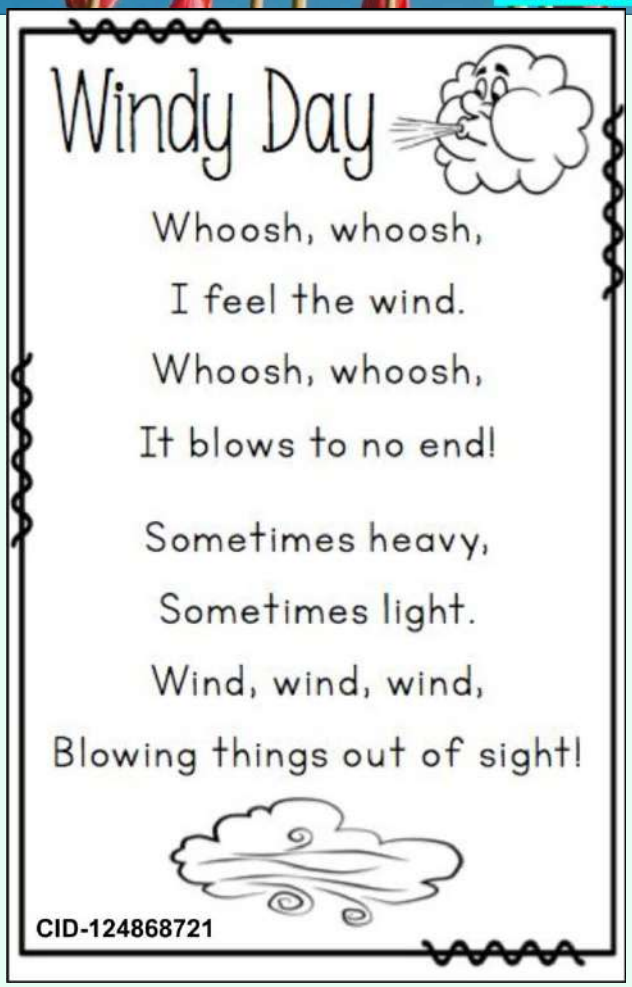
Windy Day
Whoosh, whoosh,
I feel the wind.
Whoosh, whoosh,
It blows to no end!
Sometimes heavy,
Sometimes light.
Wind, wind, wind,
Blowing things out of sight!
CID-124868721

पत्ते

प्रथम में हल्का हरे रंग का लाल लाल ,
जैसे हरियाली में ढल गया हो गुलाल ।
अति लघु लिए हैं शिशु का रूप,
निखरता है रंग जब इसमें पड़ती है धूप ।
धीरे-धीरे गहरे हरे रंग में बदलाव ,
धूप में भी पहुंचाता है यह छांव ।
सिकुड़ने लगता है वृद्धावस्था में ,
रंग में परिवर्तन होता है फिर से ।
अब कनक समान पीले रंग का हो जाता है ,
जैसे टहनी से बस यह छूटना ही चाहता है ।
भूरे रंग में बदलकर अब छूट पड़ता है ,
हवा के सहारे इधर-उधर भटकता रहता है ।

--उत्तीर्णा धर

CID-124911881

बहुत लुभाता है गर्मी में

बहुत लुभाता है गर्मी में,
अगर कहीं हो बड़ का पेड़।
निकट बुलाता पास बिठाता
ठंडी छाया वाला पेड़।

तापमान धरती का बढ़ता
ऊंचा-ऊंचा, दिन-दिन ऊंचा
झुलस रहा गर्मी से आंगन
गांव-मोहल्ला कूंचा-कूंचा।

CID-124809551

CID-124914021

धुंधले जज़्बात

Capturing Climate in Thoughts

O wind, I admire how you flow;
Guiding seeds to their terminus,
Helping plants grow.

O sky, I admire your everlasting might;
I admire how you bestow upon all
Billions of pearls of life.

O sun, I admire your unmatched munificence;
How you serve fauna and flora
All the same, with no hesitance.

O sea, I admire your grandiosity;
I admire your accommodative nature
For creatures big and small, as you have demonstrability.

O great four, I admire your power;
How you influence the climate
At your will, hour by hour.

I am but insignificant, in the grand scheme of yours;
But we seek to know you
And capture you in our thoughts.

CID-124904091

বিদ্যালয় শিক্ষা দপ্তর

* WONDERFUL WINTER *

Snow or cold weather,
yes, winter is near!
keep warm by the fire,
you should have no fear!

Ice skating, snowballs,
Hot cocoa and sleds,
Winter is wonderful.

CID-124810221

यूं ही नही कहते हमको दीवाने
देश के लिए मर मिटेंगे,
खुद को भुलादेंगे,
अपनी भारत माँ के लिए ।

कहते हैं हमको वीर जवान
देश के रखवाले,
खुद को मिटादेंगे
अपनी भारत माता के लिए ।

सब सोते हैं चैन से
हम जगते हैं प्यार से
अपनी भारत माँ के लिए ।

सब बोलते हैं हमे जवान
हम है यहाँ के रखवाले,
अपनी भारत माँ के लिए ।

Scanned with CamScanner

CID-124923741

मौसम बदला सर्दी आयी
ठंडी हवा साथ लायी...
सूर्य देर से अपना मुख दिखाए
हम सब धूप को तरसे जाए...
चाय पकोड़े मन को भाए
हम सब साथ में खूब खाए...
बच्चे हो या बड़े सब सर्दी से डरते
धूप सेंकते आग तापते फिर भी शेज ठिठुरते
कान में मफलर ऊपर कम्बल
रहना इससे खूब सम्भलकर...
काँपे तन काँपे मन
आया सर्दी का मौसम...

CID-1124932571

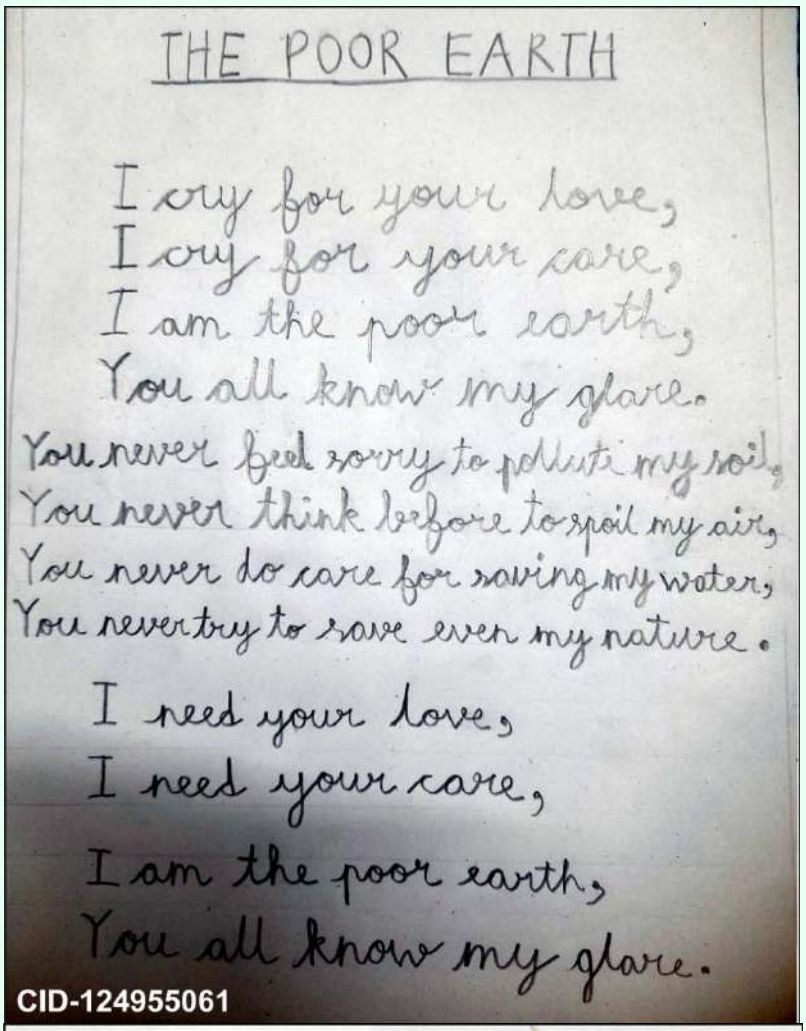

THE POOR EARTH

I cry for your love,
I cry for your care,
I am the poor earth,
You all know my glare.
You never feel sorry to pollute my soil,
You never think before to spoil my air,
You never do care for saving my water,
You never try to save even my nature.

I need your love,
I need your care,
I am the poor earth,
You all know my glare.

CID-124955061

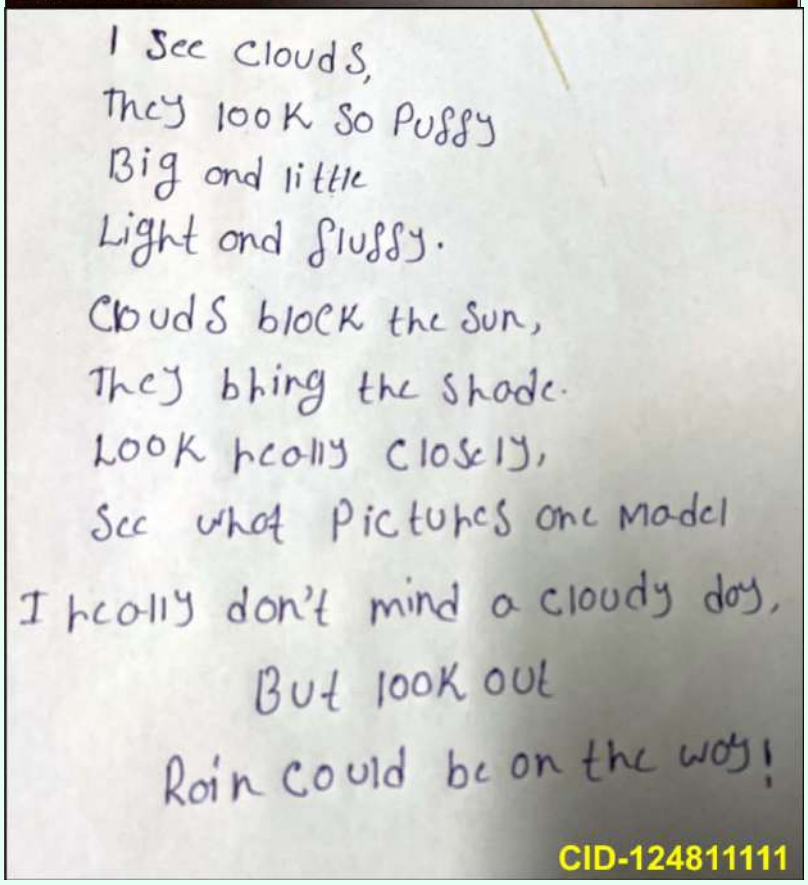

I See clouds,
They look so Puffy
Big and little
Light and fluffy.
Clouds block the sun,
They bring the shade.
Look really closely,
See what Pictures one Made!
I really don't mind a cloudy day,
But look out
Rain could be on the way!

CID-124811111

Maa

"Nature" is the cause of creation,

To me,to you, to all "She" gave full existence,

"She" has nurtured.

But, What am I looking at ?

"Mother-Nature" in our oppression today-

as if exploited ,suffering everyday!

Stop! Stop! Now you stop this exploitation,

"Mother" cries!

Let's become novices in the service of "Mother".

We become the heroic children of "Mother-Nature",

We become water,air,sun.

Let's plant trees, fill them with green life.

Let the exploitation stop

Come on everyone,take the new breathe.

By Kiran Banerjee

(Adress-Lohabazar, Md. Bazar, Birbhum,WB, 731127.

Mob:9382935013)

CID-124963461

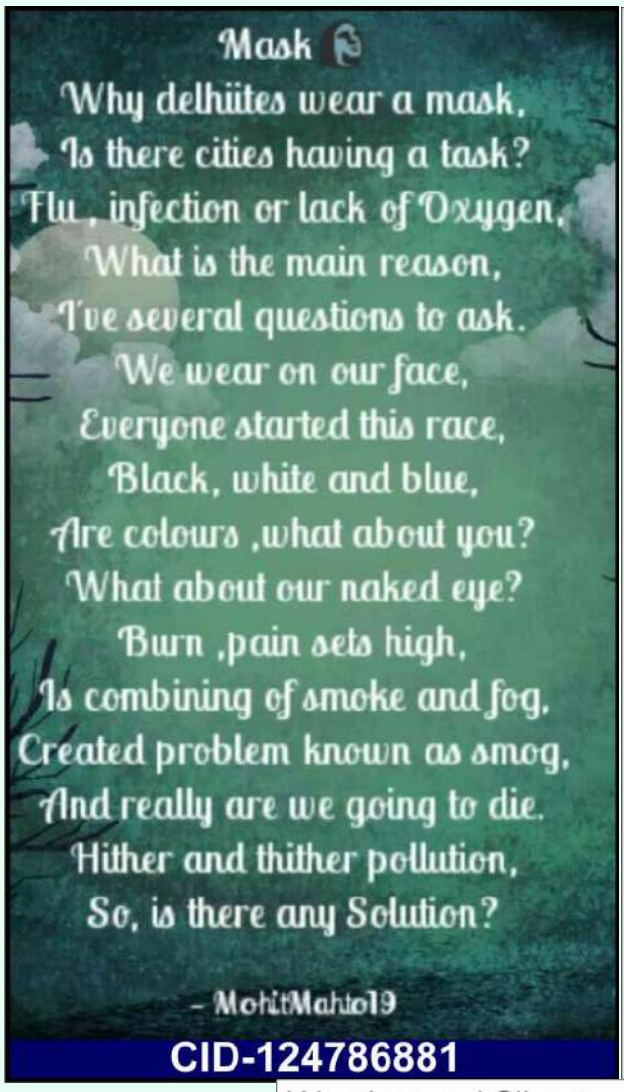

CID-124786881

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
If that's impossible,
we can only talk
about the windy profiles
of clothes
on the clothesline
and how lightning strikes
would never dare
desert their distance
from us. Rain might
come soon. Heat
sucks. Because of the
weather, you say,
I've forgotten
everything important.

CID-124816371

Weather and Climate
Weather is something so fun
It quickly changes everyday
Like a player in a speed run
It maybe adverse and sometimes bad
But whatever it maybe i always feel glad
Cause there is no weather which cannot be enjoyed.
A sunny day makes be bright
Cause such a day calls for a cold creamy delight
A rainy day is not gloomy
Cause its the best time to get cozy
Whether be cold or super hot
I enjoy any weather without a doubt.

CID-124963481

Changing Nymph

Wrapping around the dupatta

She is confused which to choose

Is it elegant to shower out drops?

The pearls to please out violets.

But it seem to be bigger and leading to pools of blues.

Let me pour out over weights from me

Hey its easy , zany had made the ground easier to stir !

Or let the rays brighten the path.

O no , the mob weep of tan!

Let me dance out in sparks.

Angel in the silky red threads

Rigs madden me , fleshes quavers !

I should swap my array

You the mob are scorn to face!

CID-124793231

मौसम और जलवायु

भाई यह मौसम है या गिरगिट है , जो नित प्रति रंग बदलता है ।
कभी सुबह धूप , तो कभी दोपहर बदरी , शाम होते बरसता है ।।
बेमौसम बरसात की मार ने , इस धरती का नूर छीन लिया है ।
कई बीमारी , नई बीमारी लाकर , इंसा का सुख छीन लिया है ।।
कभी भूकंप ,कभी ज्वालामुखी ,कभी दावानल ,कभी सुनामी में ।
लगता है इस धरा से कहीं , प्राणी मात्र खो ना जाए गुमनामी में ।।
पायी जाती इसकी एक बड़ी बहन , जो कहलाती जलवायु है ।
उसने भी थलचर , जलचर , नभचर की कर दी अल्पायु है ।।
क्योंकि इस धरती का तापमान , दिन पर दिन बढ़ता जाता है ।
कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि कहीं शीत कोप बढ़ता जाता है।।
अब प्राणी इससे उबरे कैसे , जो प्रकृति से होड़ लगाता है ।
जंगल काटे , नदियाँ बाटे , धरती को उजाड़ बनाता है ।।
यह प्रकृति कब तक जुल्म सहे, जो इंसान उस पर ढाता है ।
ऊपर वाला भी तरह-तरह से , प्रकृति का संतुलन बनाता है ।।
अरे इंसान तू अब सुधर भी जा , और इस धरती का मान बढ़ा ।
तू ही सब प्राणियों में विवेकवान, "ओम" श्रेष्ठता से शान बढ़ा ।।

CID-124798521

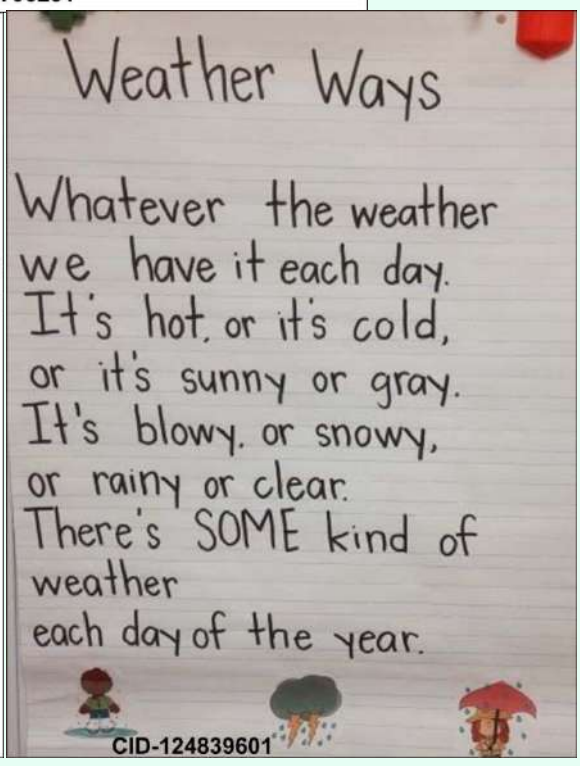

CID-124839601

Weather & Climate

It is the ~~weather~~ climate that attracts the people
It is the weather, which force them to leave
India has various weather as well as climate.
Moonsoon is jaywearing
that mades someone smile.
Here, we experience all weather and climate.
If one side there is rain while
Other side there is drought
If one side we have sweat while
Other side we have dryness
If one side there is a cyclone while
other side we ~~have do't~~ do't find the God of wind.
That's all about our unique weather and climate.
We are very lucky, to have a place in this country.

jai hind! jai Bharat!

- Piyush Singhal

CID-124876071

Conserve!

Earth is not a ball
but it is a place of all
Time is running
Climate is changing

Season's are differing
& our planet is suffering
from the only pollution
To this we must find solution

And it is to raise trees
which frees
us from harmful effects
and accept our mistake.

CID-124818621

आसमान है साफ सुथरा
नीचे दिखता धुंधला धुंधला
पल में ठंडी,पल में गर्मी
तो कभी पल में बरसात

आसमान से तारे गायब
वातावरण में बढ़ता प्रदूषण
फिर क्यों सब जन है अंजान
खतरे में डालते अपनी जान

ग्लोबल वार्मिंग से घटता ग्लेशियर
जो मीठे पानी का है भंडार
जलवायु को रखो साफ
रहे सुरक्षित हर इंसान

CID-124843671

Rain and Earth

The best romantic couples I have ever seen,
Every drop of rain falls, there is a hope.
He will embrace the soil that awaits his arrival.
To take a look at his dear friend,
The one who crosses distances and descends.
Flowers and plants witness them,
When they come together, the clouds clear,
This is love, true love.

Today it is a lost love.
When man climbed the forest, river and mountain,
When man built a wall on the way to the rain and soil,
The ways for them to unite were closed.
The rain and the soil roared and wept,
The pain of the rain turned into a torrent,
The pain of the soil split the earth.

Man, you correct your mistake,
Break down the wall you built across nature.
The rain and the soil have the realization of love again,
The fragrant love of the soil is the basis of life.

CID-124828351

ABOUT THE WEATHER

You and I, we like
being at war
with each other
as long as one of us
doesn't win.
If that's impossible,
we can only talk
about the windy profiles
of clothes
on the clothesline
and how lightning strikes
would never dare
desert their distance
from us. Rain might
come soon. Heat
sucks. Because of the
weather, you say,
I've forgotten
everything important.

CID-124839961

वसंत का मौसम

है आ गया वसंत देखो,
कैसी बहार छायी है,
कैसे घूम रहे हैं भवरे,
फूलों पे खुशबू आयी है ।

कैसे प्रकृति में रंग भरा है,
कैसे पेड़ों पर हरियाली है,
कैसे बिखरा है चमक यहां पर,
कितनी सुंदर सूरज की लाली है ।

कैसे बच्चे खेल कूद में,
कैसे तितलियाँ मंडराती हैं,
कैसे सभी खुश दिख रहे,
कैसे हवा ये आती है।

सच है वसंत की अनुपम छटा,
एक जादू सी बिखेरे है,
मैं भी हिस्सा इस आनंद का,
ये सारे अनुभव मेरे हैं ।

CID-124858411

Weather And Climate

Weather is like saviour
When you die of thurst
It fetches you.

When your feet get blisters,
Lay out carpet for you.
Climate is the figure head
Crosspaths when weather stumbles,
Aid when it tumbles.

When winter make you dry,
Asks daylight for a glance,
For you to get warmth.
When your tummy burns of hunger,
It talks to rain,
Asks some attention for cultivation,
So that children gets supper.

CID-124945761

भारत मौसम विज्ञान विभाग

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Earth Sciences, Govt. of India

https://mausam.imd.gov.in/